मेरे मुर्शिद की कलम से...

भाग–1

प्रमिला भगवान

" सतगुरू मेरे कलम हत्थ तेरे "

सतगुरू मेरे कलम हत्थ तेरे
के सोहणे-सोहणे लेख लिखदे

पैरां ते लिखदे सत्संग आवां
सत्संग आंऊदी कदे ना थकां
कदे ना अकां, के सोहणे-सोहणे लेख लिखदे ।

हत्थां ते लिख दे सेवा गुरां दी
सेवा करदी कदे ना थकां
कदे ना अकां, के सोहणे-सोहणे लेख लिखदे ।।

कन्नां ते लिख दे सुनां तेरी वाणी
वाणी सुणदी कदे ना थकां
कदे ना अकां, के सोहणे-सोहणे लेख लिखदे ।

जिव्हा ते लिख दे महिमा तेरी गावां
महिमा गऊंदी कदे ना थकां
कदे ना अकां, के सोहणे-सोहणे लेख लिखदे ।।

ह्रदय ते लिख दे नाम ध्यावां
नाम ध्याऊंदी कदे ना थकां
कदे ना अकां, के सोहणे-सोहणे लेख लिखदे ।

मत्थे ते लिख दे ब्रह्मज्ञान
अपने आप दा अनुभव करदी
कदे ना थकां कदे ना अकां
के सोहणे-सोहणे लेख लिखदे ।।

विषय-सूची

01)	सत्य की राह पर लगन	1
02)	यहाँ पर आप सभी	2
03)	बस ऐसा ही सर्व से	3
04)	अलग अलग सभी को	4
05)	ज्ञान का मनन निध्यासन	5
06)	हकीकत में गुरू की गुलामी	6
07)	इसी ज्ञान यज्ञ में	7
08)	सचमुच आप सभी का	8
09)	पत्र आज ही तुम्हारा	9
10)	है धन्य जगत में	10
11)	आपने पूरी तरह से	11
12)	आपके लगन व उत्साह	12
13)	आप सभी की मीठी	13
14)	सभी इसी आत्म आनन्द	14
15)	शल यह नाम खुमारी	15
16)	इस प्रशाद का तो	16
17)	यह जीवन मिला ही	17
18)	तुम्हारे द्वारा भेजी हुई	18
19)	दो अक्षर देखकर आप	19
20)	अब ना तो क्रोई	20
21)	सभी प्रेमी जो नहीं	21
22)	सदैव अपने सच्चे स्वरूप	22
23)	सदैव अपने सत स्वरूप	23
24)	जिसने अपनी हस्ती गुरू	24
25)	सारी दुनिया नींद में	25
26)	हरेक अपनी अमानत अपना	26

27)	शान्त स्वरूप में हर	27
28)	तुम्हारे ह्रदय का प्रेम	28-29
29)	यह सच का संदेश	30
30)	जीवन का ताज़ा फूल	31
31)	You laugh and the	32
32)	पत्र तुम्हारा कई दिनों	33
33)	तुम सभी ने प्रयास	34
34)	यह जीवन प्रभु के	35
35)	खुशी होती है कि	36
36)	आप सभी का प्रेम	37
37)	बस गुरू ने ऐसा	38
38)	इतनी छोटी age में	39
39)	हरेक अपने को लायक	40-42
40)	Christ ने कहा forgive	43-46
41)	Love is not an	47-48
42)	जो बाहर से सुख	49-50
43)	तुम अपना शरीर भुलाओ	51-55
44)	सत का कभी अभाव	56-60
45)	मैं हूँ यह बड़े	51-66
46)	जिस सुख के साथ	67
47)	कमजोरी मौत है	68-75
48)	दुनिया का आदमी अज्ञान	76-79
49)	हर समय मुस्कराते रहना	80-81
50)	मेरे संकल्प से ही	82-85

पत्र नम्बर - 01

सत्य की राह पर लगन उत्साह से बढ़ते चलो continuous । कभी भी रूकें नहीं परीक्षायें तो आयेंगी ही परन्तु हमें उनका सामना करना है। हमारा जीवन तो है ही सच के लिए। एक पल भी माया में ना जाये। हद से निकल कर बेहद में आ जायें। कोल्हू का बैल एक ही धेरे में धूमता रहता है परन्तु आँखों पर पटटी बंधी हुई होने के कारण वह समझता है मैं कई मील चला हूँ। ऐसे ही हरेक की आँख पर मोह की पटटी बंधी हुई है और सोचता है मैंने कितनी progress की है जबकि वहीं पर खड़ा है। गुरू ने कहा बोलने का अधिकार केवल मनुष्य को ही है परन्तु फिर भी सोचना है किससे व क्यों बोलते हैं। 32 दाँत के अन्दर प्रभु ने ज़बान दी है कि 32 बार सोचकर ही बोलो। मन्दिर की मूर्तियाँ मौन में हैं उन्हें सब प्राप्त होता है। तुम भी ऐसे ही निरिच्छा हो जायेंगे तो सब कुछ आपे ही मिलेगा।

यहाँ पर आप सभी अपने प्रेम की अमिट छाप छोड़कर गए हैं। यह प्रेम ही अनोखा है जो सागर में कोई भी दूसरा नहीं लगता। जित वल देखां उत वल प्यारो। आज सत्संग में point चली कि हर रूप में भगवान सामने आता है। क्या तुम उसमें भगवान देखते हो या जीव और जगत करके देखते हो। गुरू तो हरेक में यही ब्रह्म दिखाने का प्रयत्न करता है। कोई बुरा नहीं है भले मन के वास्ते। हर समय देखो कि ये जगत कैसे मिथ्या है। इसको कभी भी सत करके नहीं देखो। नहीं तो एक-एक चीज में फंसोगे। गुरू हर वक्त यही practice कराता है कि मैं मेरा से अलग हो जाओ। अपने से पूछो कि क्या कभी कोई ऐसी news सुनकर तुम्हारा दिल तो नहीं धड़कता है चाहे किसी की मृत्यु या बीमारी या अन्य किसी दुख की बात सुनकर अन्दर तुम्हारे खलबली तो नहीं होती है या हर बात के लिए तुम पहले से ही तैयार हो। ऐसा भी होता है। Nothing new under the sun. प्रेम लूटने व लूटाने में ही मजा है। हरेक व्यक्ति केवल अपने लिए ही जीता है परन्तु जब सर्व के लिए जीना सीखता है तो उसके अपने दुख दर्द सभी भूल जाते हैं।

बस ऐसा ही सर्व से प्यार व एकत्व भाव रहेगा तो जीवन में कभी भी अकेलापन खालीपन नहीं लगेगा। इस ज्ञान में अथक होकर बढ़ना है। दुख आयेंगे लाखों पर तू न धबराना। परीक्षायें भी आयेंगी पर पास होकर दिखाना है। कहीं भी रास्ते में थककर बैठ न जायें। गुरू को सदैव तेरी जीत पसन्द है। नैपोलियन के दरवाजे के बाहर बड़े अक्षरों में V लिखा था जिसका अर्थ है victory. वह जीत को पसन्द करता था और जीतने का राज़ था कि उसकी सेना जिस मार्ग से आगे बढ़ती थी वो पीछे के पुल काट देता था। हवाई जहाज में चढ़ने के पश्चात भी सीढ़ी हटा दी जाती है इसी तरह गुरू के प्रेम में जिसका जगत जल गया उसे कभी भी फिर लौटकर माया में जाने की इच्छा न होगी वरना तो कई इस राह पर थक कर लौटने लगते हैं। गुरू कहता है आगे बढ़ा कदम, रूकना तेरा काम नहीं चलना तेरी शान, चल चल रे नौजवान। तुम भी उन्नति करो दूसरों को भी इस राह में आगे बढ़ाओ। मैत्री, करूणा, मुदिता का भाव बन जाये। सभी की उन्नति देखकर भी खुशी हो। सभी को गुरू तक पहुँचाना ही हमारा काम है। सत्संग के किले में ही बंधे रहें। गुरू के प्रेम का बन्धन ही ममता रहे।

पत्र नम्बर - 04

अलग अलग सभी को पत्र लिखना सम्भव नहीं हो पाता है इसलिए एक-एक area में पत्र लिख देते हैं जो पूरा ही सभी के लिए होता है। आज भी सत्संग में 5 वचन माला दृष्टान्त चला कि गुरू के वचन कितने ना कीमती हैं। यदि हम उन्हें अपने जीवन में लगायें तो लाखों करोड़ों से बढ़कर उनकी कीमत है। एक ही वचन ने उसे मौत के मुँह में जाने से बचा लिया। ऐसे ही गुरू भी हमें हर मुश्किल से बचाकर अपनी शरण में ही रखता है। कील संग जो लग गया उसे काल भी ना खायेगा। काल भी उसके नज़दीक नहीं आ सकता तो फिर बाकी वो दुनिया से क्यों भयभीत हो। What the people say let them say. ज्ञानी spiritual man है। वो कोई normal man नहीं कि दुनिया को खुश करने में अपना लक्ष्य ही भूल जाये। Morality is hipocracy. ज्ञानी दिखावा नहीं करता इसलिए दुनिया के लोग उन्हें नास्तिक भी समझते हैं। सच्चा गुरू तो तत्वज्ञानी है और तत्व के निश्चय से ही मुक्त भी है। बाकी शरीर का तो प्रारब्ध पर ही निर्वाह है और प्रारब्ध जो भी कर्म कराये। नौकरी तो सारी दुनिया ही कर रही है परन्तु ये परमात्मा का कार्य तो किसी विरले के ही हिस्से में ही आता है। कोई एक विवेकानन्द निकलता है जिसे ऐसी लगन है कि सारी दुनिया को ही यह सुना कर मुक्ति की राह दिखा दे बाकी तो सन्त साधु भी सभी को गुमराह करने वाले हैं।

पत्र नम्बर - 05

ज्ञान का मनन निध्यासन जिसका चलता है उसी के अन्दर से प्रश्न भी उत्पन्न होते हैं। फिर दिनों दिन उन्नति भी होती है। मर्यादा का सही अर्थ है मर के चलना सोई ज्ञानी जीते जी मर के रहता है ना मैं किसी का ना कोई मेरा। इसलिए सांसारिक मर्यादायें उससे हो नहीं पाती। बाकी ज्ञान की मर्यादा से भी वो बाहर नहीं है। भय विच अग्नि भय विच पवन। सारी प्रकृति ही उस निराकार के भय में है। स्वयं सागर भी मर्यादा के अन्दर है। अगर वो मर्यादा छोड़े तो सारे शहर को डूबो दे। ऐसे ही ज्ञानी भी भीतर बाहर आत्मा जानकर कभी उभ्रंखल नहीं है कोई चंचलता नहीं हंसी मजाक नहीं अपने आत्म बल में ही रहता है। बाकी सांसारिक बन्धनों से वो आजाद है। सब हालतों में सम रहता है।

पत्र नम्बर - 06

हकीकत में गुरू की गुलामी में कौन रह सकता है। सेवक का धर्म बहुत कठिन है। पूरा-पूरा अपने मन को मोड़ना पड़ता है। गुरू के घर जो शेवक रहे, गुरू की आज्ञा में मन सहे, उसते चौगुन करे निहाल नानक साहब सदा दयाल। गुरू नानक की वाणी में है कि पखा फेरां पाणी ढोवां जो देवे सो खाई हौं तिसपे आप बेचाई। कोई आण मिलावे मेरा प्रीतम प्यारा। सचमुच कितनी कुर्बानी शिष्य पहले करते थे गुरू के पास रहकर। तभी ego समाप्त होता है। जब पहले गुरू माया से छुड़ाने के लिए खींचता है, प्यार करता है तब तक तो बहुत मन को अच्छा लगता है परन्तु फिर जब मन को बनाने के लिए थोड़ी बहुत ठोकाई करता है तो मन सहन नहीं कर पाता है। जबकि उसकी भलाई उसी में है। तीन मूर्तियों की बात बताते हैं कि जब कारीगर पत्थर के टुकड़े को तराश कर मूर्ति बना रहा था तो एक पत्थर तो चोट न सहन कर सका और छिटक गया। दूसरा आधा बना। तीसरा पूरी तरह से छैनी हथौड़ा खाता रहा और मूर्ति बन गया। तब स्वयं पुजारी ने भी उसको माथा टेका और सारी दुनिया उसके आगे जाकर झुकी। बस जो अपने को गुरू के पास गंवाता है वही अमर पद पा लेता है। यही गुरू की प्रीति है। तुम्हारा सुर भी गुरू के सुर से पूरा मिलना चाहिए। सेठ कहे सागर का पाणी मीठा तो भी कहिये हाँ जी हाँ। अपना मन बुद्धि गुरू को अर्पण करके गुरू वाक्य सत्यम करके चलो।

पत्र नम्बर - 07

इसी ज्ञान यज्ञ में आप सभी अपने जीवन को अर्पित किये हुए हैं यही बड़ी खुशी की बात है। सभी को ये आत्म जागृति देते जा रहे हैं। बस जागना ही ज्ञान है, भागना नहीं है। आज बात चली कि किसी ने क्राईस्ट से पूछा पैगम्बर या अवतार कौन है। उन्होंने उत्तर तो कुछ नहीं दिया परन्तु आगे चलते गए और सब lights जलाते गए। जिसका अर्थ है सभी के अन्धेरे जीवन में जो प्रकाश लाये वही सच्चा अवतार है। दूसरी बात चली कि एक सन्त को किसी ने एक सोने की कैंची present की। उसने उसे अस्वीकार करते हुए कहा कि मुझे यदि एक लोहे की सुई भी दोगे तो वो इस कैंची से बढ़कर है। इसका सिद्धान्त है कि तुम सभी के ह्रदय को प्रेम से जोड़ने वाले बनो। बाकी तो तुम कितने भी महान हुए और जीवन तुम्हारा ना बना तो क्या लाभ है। अपने जीवन के आदर्शों को यथार्थ में उतारो। तभी जीवन सफल है। सारी दुनिया मूल कारण परमात्मा को ही भूल कर बैठी है। जैसे बाहर से पूरी building तो दिखाई दे रही है परन्तु उसकी नींव को सभी भूल जाते हैं। सुबह उठकर पहले प्रकाश देखा। जिसके आधार से हर चीज देखी परन्तु तो भी प्रकाश भूला हुआ है। बस अब उसी निराकार मूल कारण को न भूलें तो ही हमारा लक्ष्य पूरा हुआ। सभी में उसी परमात्मा को जानो तो सभी विकारों से छूट जाओगे।

पत्र नम्बर - 08

सचमुच आप सभी का प्रेम सराहनीय है। हम सब धन्य हो गए हैं आपका प्यार पाकर। जीवन ही सार्थ हो गया। माता से किसी ने पूछा आपने अड़सठ तीर्थ किये हैं तो बोले आधे तीर्थ तो गुरू मिलने पर हो गए बाकी आधे तीर्थ तुम सबके प्यार में हो गए हैं। सचमुच यह निष्काम प्रेम ही जीवन को मधुमय बनाने वाला है। ज्ञान व प्रेम दोनों की ही जीवन में महानता है परन्तु प्रेम की महानता तो ज्ञान से भी अधिक है क्योंकि केवल साबुन (ज्ञान रूपी) बिना प्रेम रूपी पानी के कुछ भी नहीं कर सकता है। केवल पानी कम से कम कपड़े को थोड़ा बहुत साफ तो कर ही सकता है। पर दोनों ही अगर मिल जायें तो और भी अच्छा हो जाता है। सच्चे गुरू के चरणों में बैठकर दोनों की ही प्राप्ति हो जाती है।सचमुच जो गोपी कृष्ण के पास नहीं पहुँच पाई वो पहले ही वहाँ विराजमान थी। जेहड़ा हरि नूं ध्याये हरि रूप बन जाये। सभी प्रेम रंग में रंगे हुए हैं। आत्म स्वरूप तो तुम पहले ही है बाकी मायारहित होने का पुरूषार्थ करना है। गुरू कृपा से ही ये सम्भव है। इसलिए कबीर ने कहा गुरू के चरण से लिपट रहना।

पत्र नम्बर - 09

पत्र आज ही तुम्हारा मिला जिससे मन: स्थिति का पता चला। तुम भाग्यशाली हो जो ऐसा वैराग्य तुम्हें लगा है। जब रामचन्द्र भगवान की ऐसी अवस्था हुई तो वशिष्ठ ने दशरथ को बधाई दी कि ऐसा कोई भाग्यशाली पुरूष ही है जिसे सच के लिए जिज्ञासा होती है। नहीं तो सारी दुनिया माया के पदार्थों पर ही खुश होती है पर सच के जिज्ञासु को तो केवल सच से ही प्रीत है। ऐसे सच्चे जिज्ञासु को तो कोई माया में फंसा नहीं सकता। आज तीन प्रकार के जिज्ञासुओं की बात चली। एक तो वे जिन्हें रोज जा कर घर से निकालना पड़ता है। जैसे पुरानी गाड़ी को ढेल कर, धक्के दे दे कर चलाना पड़ता है। वो पेट्रोल भी ज्यादा खाती है और servicing के खर्च भी अधिक होते हैं। ऐसे भक्तों के साथ गुरू को बहुत मेहनत करनी पड़ती है। टाईम भी लेते हैं। फिर भी उन्नति कम दिखाते हैं। दूसरे तो सत्संग रोज आयेंगे। प्रश्न भी करेंगे पर आधे माया के आधे भगवान के चलेंगे, पूरा नहीं। तीसरे तो 1% गुरू की मेहनत लेते हैं और 99% अपना पुरूषार्थ यानि गुरू के इशारे पर चलते हैं। वे उत्तम जिज्ञासु हैं। ऐसे भक्तों पर तो गुरू को भी नाज़ होता है कि ये हमारा कार्य कर पायेंगे। विवेकानन्द ने गुरू का पैगाम हर जगह पहुँचाया। अपने जीवन की पूर्ण आहूति दे कर सभी को सत्य मार्ग पर चलना सिखाया। बस यही उद्देश्य बना लो। कार्य में लगे रहने पर आलस्य नहीं आयेगा। नींद नहीं आयेगी। दूसरे का आंसू पोंछने पर अपने आंसू बन्द हो जाते हैं। तुम जागे हो फिर किसको जगाया है। सोचने से अधिक कार्य में लग जाओ। सर्व से प्यार, सत्संग का नियम, घर जा कर भी मनन निध्यासन करो। किसी बात में भी उलझो नहीं। मूर्ख हर काम में उलझता है। सियाणा चलता रहता है। आगे बढ़ा कदम। जो पेड़ बढ़ता नहीं उसे हटा दिया जाता है। उन्नति करते चलो।

पत्र नम्बर - 10

है धन्य जगत में वो प्रेमी जिसने प्यार प्रभु का पाया है, प्रीतम की प्रीति के पीछे जग सारे को ठुकराया है। ये प्रेम ही तुम्हें मन्जिल तक पहुँचायेगा। कदम जब आगे बढ़ जायें तो वो लौटाये नहीं जाते ये दीपक प्रेम के ऐसे बुझाये ही नहीं जाते। बस यह प्रीत मेरी सत्गुरू से लगी रहेगी सदा, मेरी नज़रें सत्गुरू से मिलती रहेंगी सदा तभी तो इन आँखों में फिर कोई माया का स्वप्न नहीं दिखता। माया उसे अपने चंगुल में नहीं फंसा सकती। मन पंछी तब लग उड़े, विषय वासना मांहि, प्रेम बाज़ की झपट में, जब लग आयो नांहि। आज गुरू ने ही हम सबकी कीमत बढ़ा दी है। लोहे की तलवार को सोने का बना दिया है। हर रोज गुरू के शुकराने याद करो और जानो गुरू ने तुम्हें क्या बनाया है। know thyself and you know God. अपनी जीवन प्रभु के हवाले कर दो। वो ही पग-पग पर सम्भाल कर रहा है और करेगा। तुम केवल अपने को गुम कर दो। दस्तूरे मोहब्बत बस है यही हस्ती को मिटाना पड़ता है। जरा गफलत हुई या नज़रें झकीं, चहुं ओर सभी ने धेर लिया। गुरू ज्ञान का दीपक मन मन्दिर में हर वक्त जलाना पड़ता है। हर समय सावधानी रहे कि कोई मेरा यह धन लूट तो नहीं रहा है। प्रेम प्याला गुरू दिया जा सिहुं मस्त मगन हम थीया। बस यह प्रेम का अखुट खजाना सभी में बाँटते चलो। बांटन वाले को लगे ज्यों मेहंदी का रंग। प्रेम देने से ही प्रेम बढ़ता है। नित्य नये प्रेमी बनाओ। सभी को इसी मस्ती में डुबो दो। सदा है होश कुछ बाकी उसे भी अब भुलाता जा। यही प्रेम की पराकाष्ठा है कि प्रेम व प्रियतम सदैव के लिए एक हो जायें। अपना मैं पना भूल जाये।

पत्र नम्बर - 11

आपने पूरी तरह से अपने को शरणगत किया है तभी अपनी हर बात सच्चाई से सामने रखी है। सच बात है जिसने अपनी डोरी परमात्मा के हाथों में सौंप दी है उसको कभी भी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। मेरी चिन्ता हरि करे मुझे ना चिन्ता कोय। अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में। आपका भविष्य परमात्मा ने सुनहरे हाथों से लिखा है। फिर हार जीत, पास फेल, दुख सुख तो प्रारब्ध अनुसार भी है। मनुष्य का कर्म में अधिकार है फल में कभी भी नहीं। आपका सब हमारा है आप भी हमारे हैं फिर चिन्ता किस बात की है। अपने अन्दर का मोह परेशान करता है। आया है जग में तू ही इक अकेला। ना मैं किसी का ना कोई मेरा। बस अपनी बची हुई आयु भी इसी कार्य में लगा दीजिये। जीना उसका जीना है जो औरों को जीवन देता है। मनुष्य मजूरी देत है तो क्या राखे भगवान। परमात्मा अपने भक्त को हाथों हाथ उठा लेता है। हर बात में भलाई देखते चलें। सब अपने समय पर ठीक हो जायेगा। तुम करो भला हम भलो ना जानो। चिन्ता मनुष्य को जीते जी जलाती है इसलिए उसे चिता समान कहा है। हर हालत परमात्मा की तरफ से आती है इसलिए सुखदायी लगनी चाहिए। ईश्वर इच्छा पर चलना सीखें। जो तेरी इच्छा सो मेरे लिए अच्छा। निराकार का ड्रामा तो पहले से ही fix है। हम सबको केवल दृष्टा होकर देखना है। शायद परमात्मा उसको कुछ और महान बनाकर महान कार्य करवाना चाहता हो। इसलिए कभी भी उसके इन्साफ से निराश नहीं हों। ये इन्साफ का मन्दिर है। wait & see. पिक्चर की end बहुत ही अच्छी है। आप सदा ही अपनी ब्रह्माकार वृति में रहें। ना मालूम जीवन की कौन सी धड़ी अन्तिम हो जाये तो जीवन मुक्ति तो हासिल कर ही लें। जीवन मुक्त ही विदेह मुक्त है। आप सभी योगी हैं। बस अब अन्दर बाहर से शान्त हो जाइये।

पत्र नम्बर - 12

आपके लगन व उत्साह से सत्संग में सभी का प्रेम बढ़ता ही जा रहा है। प्रेमियों के संग से प्रेम बढ़ता है। एकता व प्रेम में बहुत शक्ति है। उसी से ही बड़े से बड़े कार्य हो सकते हैं। आपने सत्संग इकटठा किया ये भी बहुत अच्छा हुआ। एक दूसरे के नये-नये अनुभव भी सुनने को मिलते हैं और प्रेम भी बढ़ता है। गुरू ने सभी को एक परिवार की तरह जोड़ दिया है जिससे अलग कभी नहीं हो सकते। ऐसा लगता है सदियों पहले की पहचान हो। अभी से ही जो इस कार्य में लग गया उसका तो जीवन का एक-एक क्षण सफल हो गया। गुरू का आदर्श आगे रखकर बढ़ते जायें। हिम्मतें मर्दां मददे खुदा। खुदा की मदद उसी को ही मिलती है जो अपनी मदद खुद करता है। नसीब उसका गहरा दोस्त है जो उससे मुँह मोड़ता है अर्थात पुरूषार्थ करता है। केवल प्रारब्ध के भरोसे पर नहीं रहता। पुरूषार्थ तेरा दैव है। Thinking is not your real nature. आत्मा का धर्म सोचना नहीं है। वही thoughtless है। बाकी ख्याल आते हैं मन में। सोई तू तो मन भी नहीं है। मन से अलग शक्ति है। उसी शक्ति में रहकर तू मन बुद्धि व इन्द्रियों से परे है अपने साक्षी भाव में रहो। और ख्याल का अर्थ है जो तुम्हें तंग करे। जो अन्दर टिक जाये। लहरों का आनन्द लेने वाला तू अलग है। लहरों में डूबो नहीं। यही thoughless होना है।

पत्र नम्बर - 13

आप सभी की मीठी याद सदैव आती रहती है। सभी आत्मिक उन्नति में लगे हुए हैं। ज्ञान हरेक के लिए बेहद जरूरी है। कल एक प्रश्न चला कि मीरा को जब प्रेम हुआ तो वो नाचने लगी और बुद्ध भगवान को जब बोध हुआ तो वे मौन हो गए। ऐसा क्यों ? आप सभी भी इस प्रश्न का उत्तर लिखना। सभी ने आग्रह किया है वहाँ आने का सोई सब हुकुम व अन जल तथा आपका प्रेम है। जैसे भी बनेगा वैसे ही चलना पड़ेगा। एक point आज चली जैसे गीले कपड़े को आग जल्दी नहीं पकड़ती ऐसे ही ज्ञानी जो प्रेम रस में भीगा है उसे भी दुख असर नहीं करते। प्रभु के सिमरण दुख ना संतापे।

सभी इसी आत्म आनन्द में मस्त हैं। सत्संग की सभा में ही सब रहते हैं। आप संपि औरां नाम झपावै, सुनत कहत रहत गत पावे। बाँटने में ही खुशी है। स्तुति से ही स्थिति बनती है। सदैव मछयारिन वाली Dress याद रहे। आज गुरू ने अपनाया है इसलिए इस जीवन की भी कीमत हो गयी है। सौ का नोट भी है पर कागज़ पर सरकारी मुहर लगने से उसकी value सौ रूपये हो गयी है। ऐसे ही गुरू का ठपा हम सबके जीवन पर है तभी इस जीवन की value है। अब केवल सभी को अपना यह निष्काम प्रेम देते चलें। बाँटने से ही धन बढ़ता है। मीरा कहती है पायो जी मैनें राम रत्न धन पायो। भक्त कहता है भगवान तुमने मुझे धन दौलत ऐश्वर्य सभी कुछ बहुत दिया है। अब केवल थोड़ा सा धीरज और दे दो। जीवन में हर मुसीबत के पहाड़ को केवल धीरज से ही सहन किया जा सकता है। जब धीरज साथ है तो ह्दय की धड़कन क्यों होती है। धीरज के जहाज़ पर चढ़कर ही हर मुसीबत से पार हो सकते हैं। यह जीवन प्रभु के हवाले हो जाये। डोर मेरी सत्गुरू से बंधी रहेगी सदा। पतंग डोर से जुड़ी है तो पूरे आकाश की सैर कर आती है पर यदि किसी से उसका पेचा लड़ गया तो कट जाती है और बच्चों के हाथ लग कर तहस नहस हो जाती है। पतंग उड़ाने वाला चाहे उसे अपने हाथों में रखे या उड़ाये दोनों में उसका फायदा है। चाहे गुरू के चरणों में रहें या निष्काम के आकाश की सैर करें दोनों अवस्थाओं में ध्यान गुरू में है। चकोर की आँखें मरने के बाद भी चाँद की ओर ही होती हैं। पपीहे की प्यास अन्त तक स्वाति बूँद के लिए ही होती है। शरीर का मिलन भी हुक्म अनुसार बना पड़ा है।

शाल यह नाम खुमारी सदैव चढ़ी रहे। यह प्रेम दिनों दिन बढ़ता रहे क्योंकि प्रेम ही है परमात्मा। प्रेम बिना थोथे सभी ज्ञान, ध्यान, व्रत, नेम। यह जीवन ही यज्ञ हो जाये। What the people say let them say. आँख कान मुख मूंद कर नाम निरंजन ले। देहवासना, लोकवासना और शास्त्रवासना तीन रूकावटें हैं इस राह पर। देहवासना है कि मैं तन्दुरूस्त रहूँ, सुन्दर लगूं, मेरा नाम हो, मुझे सब right समझें, किसी ने मुझे समझा नहीं। यही देह अभिमान दिन भर दुखी करता है। फिर लोकवासना, लोगों को खुश करने की इच्छा सोई लोग तो कभी खुश होगें नहीं तो क्यों ना अपने को प्रसन्न किया जाये। बिन्दी अपने को लगाने से आईने में खुद ही परछाई को लग जाती है। बस हर समय अपने को ही change करना है। दोष भी अपने में देखें। दुख का कारण तो अपना ख्याल ही है। अपना ख्याल हमें दुखी ना करे तो भगवान भी नहीं कर सकता है। शास्त्र वासना है हर तरह के शास्त्र पढ़कर विद्वान बनूं, होशियार हो जाऊँ। पर ब्रह्मविद्या ही सब विद्याओं का राजा है। बाकी तो सब अविद्या है। गुरू मुख नादन गुरू मुख वेदन......। गुरू के मुख में ही वेद, ग्रन्थ, पुराण, कुरान हैं। एक ही शास्त्र पढ़ना है। जिसने गुरू को पढ़ लिया उसने समझो सब शास्त्र पढ़ लिये। गुरू ब्रह्मा, गुरू विष्णु........। सब ग्रन्थों ने, शास्त्रों ने इसलिए सत्गुरू की महिमा गयी है। फिर तो सारी सृष्टि ही शास्त्र बन जाती है। दत्तात्रेय ने 24 गुरू किये। प्रकृति की हर चीज से उसने गुण उठाया। गुण ग्राहक दृष्टि रखें तो जीवन ही स्वर्ग बन जाता है। गुरू ने हर तरह की कंजूसी से छुड़ाया है। प्रशंसा करने के भी कंजूस नहीं बनना है। सारी दुनिया को एक प्रेम सूत्र में बांधते चलो। फिर देखो भगवान का हुक्म कब सभी को मिलाता है।

इस प्रशाद का तो सभी को सदैव लालच रहना चाहिए। गुरू मुख नाम झपै। रोज कैच करते रहें। यही बांटने में लग जायें। आज एक point चली कि बांटने से रोज बढ़ता ही रहता है चाहे ज्ञान चाहे प्रेम चाहे धन। जैसे तराजू में एक बाट रखते हैं तो दूसरे पलड़े में उतने ही वजन की वस्तु रख दी जाती है अब हम ये देखें कि कितना बड़ा बाट रखते हैं। 1 kg या 100 kg. जितना बांटते हैं उतना ही ये प्रेम व ज्ञान मुस्कान बढ़ती ही रहती है। देने वाला भी आनन्दित होता है और लेने वाला अपने को भाग्यशाली समझता है। गुरू ने वो अनमोल खज़ाना दिया है जो दिन दिन बढ़त सवायो। पायो जी मैनें राम रत्न धन पायो। ये दात केवल दातार ही दे सकता है। ईश्वर की तरफ से ये अनमोल खज़ाने free मिले हुए हैं। केवल हम अपनी कंजूसी छोड़ दें। कल यहाँ लखनऊ में सहारा शहर वालों के बेटे की शादी थी और उसने अपनी हैसियत के हिसाब से 400 करोड़ रूपये लगाये। देश विदेश के Actor नेता वगैरह को बुलाया। हर जगह उसका गुणगान यानि चर्चा फैली हुई थी। जब वो धन बांटने वाले खुले हाथों से बिखेरते हैं तो लोग चारों ओर से वाह-वाह करते हैं तो यदि आज ये असली धन भी मुक्त हाथों से बाँटेंगे तो क्यों नहीं हर जगह खुशहाली छा जायेगी। बस तत्परता से ये मुक्त हाथ व दिल से बांटते रहो सच्चाई से तो जीवन में प्रेम बरसेगा।

यह जीवन मिला ही है देने के लिए देते चलो सारी सृष्टि को। Love is like a one way traffic. प्रेम एक बेशर्त दान है, माँग नहीं। ज्ञानी जब मैदान में है तो संसार के लोग उसे पहचानते नहीं हैं, छींटाकशी करते रहते हैं परन्तु इनसे भय कैसा ?वो तो शब्द और दृश्य से परे हो जाता है। अपनी शुद्ध आत्मा में अपने ही विकास में लगा रहता है। बाकी दुनिया भला कहे या बुरा उसका ख्याल वो नहीं करता। मैं हूँ नहीं Be nothing & Do nothing. गुरू ही पक्का कराता है। ये शरीर तो धर्मशाला है जिसमें सब राहगीर विश्रांति पाते है। जो लक्ष्य हमारा है उसी पर हमारी दृष्टि रहे। हरेक अपना ही उद्धार अन्त तक करता है। दूसरा है नहीं तो किसको सिखायें, किसको सुधारें। अपना ही निश्चय पक्का हो इसलिए सत्संग में अपनी रियाज़त होती है। पानी में उतर कर ही तैरना सीखते भी हैं और सीख जायें तो भी पानी में ही तैरना है। ऐसा नहीं है कि जब सीख जायेंगे तभी सागर में उतरेंगे। विशाल परिवार गुरू ने दिया है। हजार हाथों से प्रभु का कार्य हो रहा है।

पत्र नम्बर - 18

तुम्हारे द्वारा भेजी हुई C.D. और कैसेट मिले। अभी देखे नहीं हैं। फिर देख लेगें। वैसे तो अंर्तदृष्टि से देखी हुई है कि कितनी अच्छी होंगी। तुम पर हमारा विश्वास है कि तुम्हारा हर काम सुव्यवस्थित होता है। हर बच्चा जो इस राह पर अपना तन मन धन जीवन कुर्बान करके बैठा है उसका कार्य कैसे अच्छा हो नहीं सकता ?सभी का जीवन फले फूले, सभी प्रसन्न रहें तो उसे देखकर ही गुरू को खुशी होती है। अपने जीवन को ही बनाना है। जो गुरू स्मर्थ है वह सभी को सब कुछ दे सकता है। जो खुद पूर्णता को प्राप्त कर चुका है वही हमें पूर्ण बना सकता है। अब बाकी मुझे क्या चाहिए ये जानें। ये सब सच्ची जिज्ञासा से ही मिलता है। सीखने की खिड़की हमेशा खुली रहे। मन नींवा मत ऊँची। हम सब भाग्यशाली हैं जो ऐसा सत्गुरू मिला है जो हमें पूर्ण बनाने के सिवाए नहीं छोड़ता। मुझको उठाने के लिए तुझे झुकना ही पड़ेगा। मैं नीवीं मेरा सतुगुरू ऊँचा उचियां नाल मैं लाई, सदके जावां उनां सतुरां तां जिन नीवियां नाल निभाई। यह गुरू की गरिमा है जो हमें अपना सब कुछ दे देता है। प्रेममय आनन्दमय बनाता है। सत्य स्वरूप में टिकाता है। मानसिक तौर से कमजोर नहीं होना चाहिए। सन्त ने किसी का नुकसान नहीं किया है। सन्त तो सभी को ऊँचा उठाने में लगे रहते हैं। उन्हें तो हर एक पर तरस ही आता है। धर्म का बूटा बढ़ता है। सभी की मदद करता है। परन्तु धर्म क्रोध कर विभंगा। एक वृक्ष 15 साल से लगा है। फल फूल लग गए हैं। उसे यदि तोड़ना हो तो एक क्षण में काट सकते हैं। प्राकृतिक मैल को बढ़ाने वाले मनुष्य ही हैं। मन की मैल को बढ़ाता भी मनुष्य ही है। सारा संसार मैला है। एक सन्त ही निर्मल है। प्रेम का बूटा बढ़ने में समय लेता है पर तोड़ने में तो क्षण भी नहीं लगता। जोड़ने में समय लगता है, तोड़ने में समय नहीं लगता है। एक बच्चे को बढ़ने में 15-20 वर्ष लगे पर मारने में तो एक जहर की पुड़िया ही काफी होती है। जीवन में धर्म की स्थापना में, अन्दर जीवन शुद्ध बनाने में कितना समय लगता है परन्तु एक विकार के अधीन होने पर भी जीवन बर्बाद हो जाता है। बस अपने इस ज्ञान के बूटे को और बढ़ायें। सुन्दर बनायें और विकारों से बचायें और सभी को इस जीवन से लाभ पहुंचायें। अपने भक्त का योग क्षेम का भार तो परमात्मा उठाकर ही बैठा है। हमें क्या सोचना है। सोचियां सोच त होवईं जे सोचीं लख वार। प्रभु की कृपा सभी पर समान रूप से है।

पत्र नम्बर - 19

जो अक्षर देखकर आप सभी को इतनी खुशी होती है तो ये जीवन तो पूरी की पूरी तुम सब के लिए ही है। अपने लिए जीना तो कोई जीवन का मकसद है ही नहीं और अब तो तुम भी अपने जीवन की आहुति इस ज्ञान यज्ञ को अर्पण कर ही चुके हो तो इसके result को भी अनुभव किया होगा कि हर चीज़ बांटने से सौ गुनी हजार गुनी होकर अपने को ही मिलती है। हर समय ज्ञानी को अपना उद्धार ही ध्यान में है। दूसरा तो उसकी निगाह में है ही नहीं। इसलिए परापेकार भी नहीं करता वरन अपना ही उपकार है। हर क्षण सु-मरन का ही अभ्यास चलता है कि मिटने ही ते पाइये पूरन परम आनन्द। प्रकृति हर सुख ऐश्वर्य दिखाकर ज्ञानी को वैराग्य दिला देती है कि इसमें भी क्या? ?कामनी कंचन कीर्ति सभी कुछ मृगतृष्णा की नदी है। जहाँ सुख है नहीं तो मिलेगा क्या ? बाहर जिसने सुख ढूंढा उसके अन्दर के सुख की बत्ती कभी नहीं जलेगी। इसलिए अन्त तक ज्ञानी को भी परहेज़ में रहना पड़ता है क्योंकि उसके आदर्शों की सारी दुनिया नकल करती है। आज महापुरूषों के उच्च्य आदर्श ही हम सभी के प्रेरणा स्त्रोत हैं कि कैसी भी माया में वो विचलित नहीं हुए। उनके इरादे हमेशा बुलंदियों को छूते रहे। विवेकानन्द ने कहा अपने सुख स्वार्थों के लिए मेरा जीवन नहीं है। जब तक किसी विधवा के आंसु ना सुखाये कोई धर्म तो मैं उस धर्म को नहीं मानता। बीज अपनी कुर्बानी देकर सभी को छाया फल लकड़ी वगैरह देकर तृप्त करता है। औरों की तृप्ति में मेरी तृप्ति है। अपनी आवश्यकताएं न्यूनतम करता जाता है। Last में दादा ने अपने लिए एक कमरा भी नहीं रखा। बालकनी में सोता था। तो सारा विश्व उसका अपना घर बन गया। सभी ने प्यार से अपने दिल में स्थान दिया तो आज अमर पद पाया। तपस्या से ही हरेक इस राह पर आगे बढ़ा है। तपरहित व्यक्ति को मैं नहीं मिलता और सबसे बड़ा तप है मैं को विलीन करना। यह हर समय हर जगह सभी से जुड़कर काम खराब कर देती है। बस इसी से हर पल सावधान रहें। निष्कामी केवल ब्रह्मज्ञानी है जिसने मैं को विसर्जित कर दिया है।

पत्र नम्बर - 20

अब ना तो कोई दूरी है ना देरी लखनऊ दिल्ली हर जगह का आकाश एक ही है। इसलिए तुम वहाँ नहीं यहीं पर हो। जब विचारों की एकता हो गई तो तुम कहीं भी हो हमारे पास हो और हम कहीं भी हैं तुम्हारे पास हैं। प्रभु की सृष्टि में जो कुछ होता है अच्छे के लिए होता है। हर बात में क्या राज़ छिपा है यह पता तो नहीं चलंता पर है सब रहस्य की बातें। हर हालत हमें ऊँचा उठाने के लिए ही आती है। धधक रहा संसार हमारा डूबा भाग्य सितारा, किसको पता है इसके भीतर क्या है प्रभु का इशारा। ये सब जीवन के पल जायेंगे इक दिन बदल। बदला मौसम बदला जीवन बदला ये जग सारा। अपने बदलते ही बदल गई दुनिया। दोष दृष्टि चली गई तो द्वेष भी चला गया। जित वल देखूं उत वल प्यारा। जहाँ तहाँ प्रभु का ही नजारा है। आत्मदृष्टि से ही पूरी सृष्टि को देखना है। तो मैं मेरे की दुनिया खत्म हो जायेगी। न मैं किसी का न कोई मेरा पर सर्वत्र मैं ही तो हूँ। अद्वेत में द्वेत और द्वेत में अद्वेत। अपना जीवन आनन्दमय प्रेम मय बन जाये। निष्कामी का हर पल आनन्द में व्यतीत होता है। न कोई चिन्ता न कोई उलाहना है। सरल आनन्दमय जीवन मिला है। गुरू ने भूल भुलैया के खेल से निकाल लिया। हर रंग में तू हर वेष में तू। केवल तू ही तू है तो मैं कहाँ रहा। अजब तसव्वुर हुआ ये कैसा कि राम मुझमें मैं राम में हूँ। है ही परमात्मा। अब शेष जगत तो रहा नहीं। गुरू ने बंध मोक्ष की कल्पना से भी ऊँचा उठा लिया। जब देह हैं तो बंधन की बात सोचें बाकी आत्मा तो सदा से मुक्त है। पक्षी स्वाभाविक उड़ता है मछली स्वाभाविक तैरती है और तू पहले से ही मुक्त स्वरूप है। गुरू का काम है जाग्रत करना। जागो पर भागो नहीं। अधीरज नहीं हो जाओ। धीरज धर वो रहमत की वर्षा बरसा ही देगा। जिस प्रभु ने दर्द दिया है वही दवा भी देगा। न past है ना future केवल आज का दिन मैं हूँ तो क्या सोचें। सोचने वाले ने सोच दिया है, लिखने वाले ने लिख ही दिया है। अपना योगक्षेम का भार उतार दो और अन्दर से योगक्षेम को भी न चाहने वाला बन। पहले बनी प्रारब्ध पीछे बना शरीर। मकान का map पहले से बन गया। मकान तो बाद में बना है।

पत्र नम्बर - 21

सभी प्रेमी जो नहीं आये हैं उनका भी इंतजार है। अब जल्दी ही मुलाकात करना। यहाँ पर सभी प्रेमी खूब आनन्द का अनुभव करके आ रहे हैं। सत्संग रूपी तीर्थ में इश्नान किया है उसी का प्रशाद आप सभी को भी बांटेंगे। सबसे बड़ा है ये ज्ञान दान। तीर्थ व्रत आदि से कोई उन्नति नहीं होगी। ये केवल मृगतृष्णा ही है। सारा संसार तीर्थ व्रत में फंसा हैं। ठण्डे पानी से नहाने से कोई प्रगति नहीं होगी। केवल बाहर के अनुष्ठान से ईश्वर प्राप्ति नहीं होगी। सत्य को जानना होगा। परिस्थिति को नहीं बदलना है। स्वयं को बदलना है। संतों के अंदर करूणा होती है। तुम अपने को जानो। अपना उद्धार करना है। लोग पत्थरों को पूजते हैं तो पूजने दो। तुम्हें भीतर को देखना है। उस सौन्दर्य को देखो जिसके कुछ छीटों से संसार सुंदर दिखता है। कोई बादल नहीं कोई बारिश नहीं फिर भी मेरी चुनरी भीग रही है उस अमृत वर्षा से जो भीतर हो रही है। वहाँ सूर्य नहीं है परन्तु एक आलौकिक प्रकाश है। बिन सूरज उजियारा। वहाँ कोई आशा कोई उपेक्षा ना रखो। उस निराकार के साथ तादात्मय संबंध बनाना है। जहाँ तक समय है तुम अपना काम उतारो। अपनी आशायें छोड़ दो। भीतर इतनी सम्पदा है तुम क्यों उदास घूम रहे हो। तुम्हें उदास होने की आवश्यकता नहीं है। कोई विरला ही इस तत्व को जानता है। जिसे ऐसा सच्चा सत्गुरू मिल जाता है वो हरिदास हो जाता है। भीतर गोविन्द को जान लो। सारे भ्रम मिट जाते हैं। तुम भी ऐसे सत्गुरू की ओट ले लो और अपने जीवन को सफल बनाओ। यही लक्ष्य है जीवन का। मैं को गुम करो तो मेरा भी हट जाता है। कैसे जगत की प्रलय हो जाती है। आप मुए जग प्रलय। दुनिया के लोग तो भ्रमित होते रहते हैं कि काहे को दुनिया बनाई। पर ज्ञानी इस दुनिया की सैर करके अपनी ही मौज और आनन्द को स्वयं में पा लेता है। सब खेल है। खेल था खेल डाला इसी चाल से।

पत्र नम्बर - 22

सदैव अपने सच्चे स्वरूप में स्थित रह कर ईश्वर के विराट रूप के दर्शन करो कि सब मैं ही तो हूँ। न मैं है न मेरा इसी में पूरी दुनिया है। न मैं ना मेरा तो जगत का नाश हो जाता है। ज्ञानी के पास दया नहीं पर करूणा है कि तुम आज ही जीवन मुक्त होकर इसका आनन्द लो। बाद में कहाँ जाना है। आना जाना ही खत्म हो जाता है। न स्वर्ग न नर्क। सब अपने ही ख्यालों में है। दादा ने ख्यालों से खाली किया है। ख्यालों का ही सब खेल है। ख्याल क्यों आया इसका ख्याल भी गुम कर दो। जो हो रहा है होने दो। तुम अपने साक्षी भाव में रहो कि Whole world is filled with God. Everywhere is God & everything is God. हर समय सावधान होकर रहो। बीमारी दुख गरीबी मुझमें नहीं है। यह शरीर दुखों का घर है सुख है तेरी गली में। शरीर तुम तीनों काल में नहीं है। पीड़ा शरीर को है पर तुम इसको भी जानने वाला है। ये भी गुजर जायेगा वो भी गुजर जायेगा। गुरू ने ही ये दिव्य दृष्टि दी है कि अब विण आखें वेखणा। सुख के दिन भी बहुत देखे हैं अब ये भी नहीं रहेंगे। सब एक ड्रामा है। ज्ञानी उस ड्रामे में भूलता नहीं है। केवल अभिनय कर रहा है। तुम दृष्टा होकर देखो। कोई भी शुभ अशुभ इच्छा नहीं बचे। शुभ अशुभ इच्छा का त्यागी ही मेरे को प्यारा है। खेल को खेल देखो। गुरू ने सब मन के झगड़ों को खत्म कर दिया है। निर्वासनिक कर दिया। शान्त अकर्त्ता भाव में रहना है। थकान भी शरीर को है मुझमें नहीं है। I want nothing. I possess nothing. मेरा नहीं है पर मैं ही तो हूँ। मजेदार मैं खुद हूँ। स्वयं का रस पीता हूँ।

पत्र नम्बर - 23

सदैव अपने सत स्वरूप को जानकर पायो परम विश्राम। राम से जुड़ गए तो विष भी राम बन जाता है। कुछ भी करना शेष नहीं रहा। सब काम पूरे हो गए। आनन्द आनन्द भयो मेरी माईं सत्गुरू मैं पायो। सत्गुरू पायो सहज से ही मन में शहनाइयां बजने लगीं। पृथ्वी शेषनाग पर खड़ी है लोग कहते हैं। जैसे शेषनाग चलता है ऐसे पृथ्वी गोल-गोल घूमती है। स्थिरता के ऊपर खड़ी है। हर व्यक्ति में दया पूर्णता सभी कुछ है। अपने जीवन का विकास करो। गुरू तुम्हारे अन्दर हृदय को छू लेता है। तुम्हारी शक्ति तुम्हारे अन्दर है वहीं से पनपेगी। ज्ञान को जीवन में लगाओ। प्रश्न:-ज्ञान लगने में देरी नहीं लगती फूल तोड़ने में देरी है। जब चीज़ पसन्द आती है तो पसन्द करने में देरी है क्या ? हमारे अन्दर चेतन शक्ति है उसे प्राप्त करने में कितनी देर लगती है। खुद की निन्दा मत करो। समर्पण करो खाली हो जाओ। गलतियाँ करो पर नई-नई गलतियाँ करो मतलब दुबारा गलती नहीं करो। उपवास से शरीर को Rest मिलती है। केवल यही फायदा है। वस्तु से हट कर चेतना की बात करो। केवल पत्थरों के महत्त्व की बात मत करो। जो है सो वर्तमान है। भूत व भविष्य के विषय में सोचना तुम्हारा धर्म नहीं है। कोटि ब्रह्माण्ड हैं। अनन्त ब्रह्माण्ड में पृथ्वी तो एक छोटा ब्रह्माण्ड है।

पत्र नम्बर - 24

जिसने अपनी हस्ती गुरू प्रेम में खत्म कर दी वही सारी माया से ऊँचा उठ जाता है। बीज फलता है सदा मिट्टी में मिल जाने के बाद। ये जन्म तुम्हारे लेखे। देने में ही लेना समाया पड़ा है। सभी कुछ देते चलो। गुरू वचनों पर ही मर मिटना है। गुरू को Yes और मन को No करते चलो। सेठ कहे सागर दा पानी मीठा तो भी कहिये हाँ जी हाँ। तुम जहाँ भी हो मेरे पास हो। मैं जहाँ भी हूँ तेरे पास हूँ। सदा बसत हम साथ।

पत्र नम्बर - 25

सारी दुनिया नींद में है उसे जगाना तुम्हारा काम है। दुनिया के दुख दूर करके सर्व को इस सच की पहचान देते चलो। अवर कारज तेरे किते ना काम, मिल साध संगत भज केवल नाम। मुसीबत में मुस्कुराना और तकलीफ में तरावट समझकर आगे बढ़ते चलो। अपना लक्ष्य हमेशा याद रहे। सत्गुरू से लगन और ब्रह्माकार वृत्ति सदैव बनी रहे। माछाणी वाली ड्रेस हमेशा याद रहे। निभ जाये मेरी तोड़ सत्गुरू प्यारिया। कामिनी कंचन कीर्ति से हमेशा सावधान हो के रहो। सतोगुणी माया, तमोगुणी माया को पहचानो। सारी दुनिया छूटे पर गुरू का प्रेम नहीं छूटे। मैं तेरा तू मेरा। मेरा सो तेरा, तेरा सो मेरा। ये सौदा पूरा हो जाये। हमेशा जाग्रत और सावधान होकर रहो।

पत्र नम्बर - 26

हरेक अपनी अमानत अपना प्यार ले लेता है। अच्छे प्रश्न करके अपना हल ले लेता है। बस आप अकेला सब करे धट में लहर उपाय। ये शरीर तुम्हें प्रशाद रूप में मिला है। पैसे से चश्मा मिलेगा नज़र नहीं मिलेगी। ऐ खुदा तुमने जो ये जिन्दगी दी है तो सार्थक करो। तेरे एक पल की रहमत 100 साल के गुनाहों से बड़ी है क्योंकि हर समय बख्शीश करता है। यदि किसी को रोशनी नहीं दिखती है तो उसने अपनी आँखें बन्द कर रखी हैं। तुद चित आवे महा आनन्दा जिस विसरे सो मर जाये। उसे भूलना ही दुख है। प्रभु ते भूलियां व्यापन सभेई रोग। प्रभु की स्मृति चलती रहे तो दुख जम नसै। जिसके पास जो होगा वो ही तो देगा। अवर कारज तेरे किते न काम मिल साध संगत भज केवल नाम। और कुछ करना ही नहीं है। ध्यान में भीतर डुबकी लगाओ। सब कुछ करते हुए भी अन्दर अकर्त्ता रहना है। निकलो नदी से ऐसे जो भीगो बिल्कुल नहीं। कोई ऐसी चीज नहीं जिस पर सवारी करके जा सके। सभी गए परन्तु भीगते गए। किसी ने सोचा Long jump करने से भी भीगे। सभी को उत्सुकता हुई कि ये कैसे निकलेगा। संत भी निकला तो वो भी भीगा हुआ ही निकला तो शिष्यों ने प्रश्न किया कि महाराज आप भी तो भीग गए। गुरू ने कहा नहीं मैं कहाँ भीगा। मैं तो सूखा ही रह गया अर्थात अन्तकरण नहीं भीगा। ज्ञानी अन्दर से नहीं फंसता। इस माया को उसके इशारे को समझो। तुमसे अलग होकर भी जो सब कुछ करता है। जो हमारे ह्रदय को धड़कन देने वाला, निर्बल को बल देने वाला हर जगह विद्यमान है। अन्तर्मुख हो जाओ। एक धुंध अज्ञानता का छाया है तो वो नजर नहीं आता। थोड़ा सा भी मैल आँख में आ जाये तो दिखाई नहीं पड़ता। मल विक्षेप आवरण का पर्दा आ गया है।

पत्र नम्बर - 27

शान्त स्वरूप में हर समय रहें। मन का निग्रह इन्द्रियों का निग्रह से ही अन्दर की सब शक्तियाँ प्रकट होती हैं। हर पल गुरू को अंग संग जानकर ही अपनी मैं को गुम कर सकते हैं। पानी का स्वरूप ही शान्त है। आग के सम्पर्क में आकर उबल जाता है और जलाने का काम करता है। केवल उसे आग के सम्पर्क से हटा दें तो अपने आप शीतल हो जाता है। असंगता ही सब दोषों से हटाती है। समर्पण- अपनी चलाना छोड़ दो। प्रभु इच्छा से चलो। अपना मन नहीं। इष्ट में मन लग गया। हमारे पास मन नहीं रहा। चित भी उसी में लीन हो गया। सारी भाव धारा उसी में जुड़ गई। चेतना कोई नहीं रही। अपने वर्तमान को बदल सकता है। भविष्य में जो चाहता है उसमें जा सकता है। अपना देहाभिमान नहीं रहे। नाम और अपनी स्मृतियाँ भूल जायें। प्रभु के सिवाय कुछ भी न रहे। अपनी योग्यताओं को भी भूल जाओ। अगर तुम किसी को कोई आर्शीवाद दो तो ह्रदय में अपने इष्ट से जुड़ जाओ और आर्शीवाद दो तो सफलता मिलेगी। अपनी सत्ता परम सत्ता से जोड़ देना। केवल वही अर्थ रहे। योग्यताएं प्रगट हो जायेंगी प्रभु से जुड़ने से। सब सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। बिना प्रक्रिया के जो चलता है वो वहाँ तक पहुँच नहीं सकता। अपने इष्ट से इतना तादात्मय करें कि उसके सिवाय कुछ न रह जाये। अपने आगे अपने सतगुरू को रखो। उसी का स्वरूप तुम्हारे सामने रहे। अज्ञात रूप में तुम्हारे गुण प्रगट होने लगते हैं। केवल मंत्रों का उच्चारण नहीं करना है। वो तो रोम-रोम में रमा है यह जानो। ओउम् में स्थिति रखो। जाग्रत होकर जीओ। कभी ज्ञान कभी अज्ञान जैसे मिट्टी के तेल में पानी mix है तो फड़फड़ करता है। जिसने आत्मा का पता नहीं जाना वो पूछता रहेगा। जब तक पूछता है यानि पूंछ है तो ज्ञानी नहीं जाहर हुआ। जो "घर की माया की बात करता है वो मुमुक्षु भी नहीं है। दूसरों को पार करने में खुद भी बह जायेगा। एक आत्मा को जाना तो कुछ भी जानने की आवश्यकता नहीं है।

पत्र नम्बर - 28

तुम्हारे ह्रदय का प्रेम हमेशा पहुँचता रहता है। अन्दर की तारें मिली हुई हैं तो तुम कहीं भी हो यहीं पर हो। आज गुरू पूर्णिमा का पर्व है। क्यों गुरू की महिमा आज के दिन ह्रदय से निकलती है। आज का दिन समर्पण का दिन है। जिस गुरू ने हमें अंधकार से प्रकाश में लाया। हर व्यक्ति अंधकार में ठोकरें खाता है और प्रकाश में सब सूझता है। गुरू पूर्णता की ओर ले चलता है और उस समय मन गदगद हो उठता है और अन्दर से आनन्द की लहरें प्रकट होती हैं। जीवन धन्य-धन्य हो जाता है। तमसो मां ज्योतिर्गमय। असतो मां सदगमय। मृत्योमा अमृतम गमय। गुरू हमारे ह्रदय में ज्योति रूप होकर प्रगट होता है। असत शरीर से सत्य आत्मा में स्थिति करता है। हमारे सभी भ्रमों का नाश करके आत्म निश्चय में खड़ा करता है। हमारी सारी कामनाओं को जलाकर निष्काम बनाता है। सभी सकामी कर्मों से बचाकर जीवन का हर पल सभी पर लुटाना सिखाता है। मैत्री करूणा मुदिता अपने प्रति करना सिखाया। सच्ची मित्रता है कभी किसी हालत से विक्षेपता में न आना। करूणा अपने पर कि यह जीवन अब व्यर्थ बातों में ना जाये। और अपने आनन्द में अर्थात मुदित में रहें। यही हमारा लक्ष्य सत्गुरू कृपा से पूर्ण हो जाये। यही आर्शीवाद गुरू से लेना है। मेरा जीवन प्रभु तेरे हवाले है। यही गुरू दक्षिणा गुरू को देनी है। और कोई चाह बाकी न रहे। प्रभु न मैं पृथ्वी, न मैं जल, न गगन, न वायु न अग्नि हूँ। मैं कौन हूँ यही जानना है। मेरा स्वरूप न गृहस्थी, न वानप्रस्थी, न त्यागी हूँ। मैं केवल अपनी मैं को मिटाने आपके पास आया हूँ। गुरू हमें अपने स्वरूप में मिला दो। अब मेरी कोई चाह बाकी न रहे। बंध मोक्ष की कल्पना मिट जाये। ये जिज्ञासा जिसके मन में जाग्रत हो गयी उसका कल्याण हो गया। उस माँ की कोख धन्य हो गई जिसने ऐसे पुत्र को जन्म दिया जिसके अन्दर ऐसी जिज्ञासा प्रगट हुई और जिसने इस लक्ष्य की प्राप्ति में अपना तन, मन, धन सर्वस्व स्वाहा कर दिया। न मैं हूँ न मेरा है। यहाँ तो पहले दिन से ही गुरू हमसे ये मेहनत करके हमें आप समान बनाकर ही प्रसन्न होता है। और सभी कितने भाग्यशाली हैं जो आज हमें इस कलयुग में ऐसा सच्चा गुरू मिला है जिसने हमें सच की प्राप्ति कराई। I may die you may live. कैसे निरअंहकारी सत्गुरू से सभी निरअंहकारी हो जाते हैं। गुरू पहले हमें आकर्षित करता है फिर प्रेरित

करता है फिर अपने जैसा बना के पूरी तरह से बदल देता है। सभी को यह बोध कराओ। Make I thy single refuge. सभी के भीतर बैठे सत्गुरू को प्रणाम करते चलें। सभी को वंदन करते चलें। जन्म तुम्हारे लेखे। एक पल भी व्यर्थ न जाये। विदेही होकर जीयें। जीवन मुक्ति का आनन्द लें। गुरू हमें आनन्दित होता देखकर ही आनन्दित होता है। इसलिए दिल हर धड़ी शुकरानों में डूब जाता है। ना मैं तन रहा ना मैं मन ही रहा, सत्गुरू मिलने से झगड़े खत्म हो गए। अब ये एक अवस्था बनी रहे। मन की स्थिरता और तन कार्य में लगा रहे। आलस्य कभी न आये। हर श्वांस में हो सुमिरन तेरा यूं ही बीत जायेगा जीवन मेरा। सभी के मुरझाये उपवन को खिलाकर उन्हें भी अपने पैरों पर खड़ा करना है। एक पल के लिए भी उदास रहते हैं तो ये हिंसा हो जाती है क्योंकि वो सोचेगा यह क्यों उदास है। प्रसन्नचित रहना ही लक्ष्य हो। सभी पर प्रेम अमृत बरसाते चलो।

पत्र नम्बर - 29

यह सच का संदेश सभी में बांटते चलो। विरले ही ऐसे होते हैं जो गुरू के संदेश को हरेक तक पहँचाते हैं। भाग्यशाली हो जो यह जीवन का कीमती समय (पीक टाईम) 20 To 50 Years भगवान के चरणों में ड़ाल दिये हैं। बांटन वाले को भी लगे इस मेहंदी का रंग। रंगवाले को एक रंगवाले ने कहा अपने ही रंग मोहे रंग दे। बस यही रंग लगाते चलो। प्यार ही प्यार।

पत्र नम्बर - 30

जीवन का ताज़ा फूल ईश्वर चरणों में अर्पित हो चुका है। बस अब इस ब्रह्माकार वृत्ति को संभाल के रखना। सर्व में आत्मभाव रखने से सब विकार गुम हो जाते हैं। See God every where. हर चीज भगवान है। गुरू ने विवेक खोल दिया है। अब सत्य असत्य की पहचान तुम्हें मिली है तो असत्य में कभी ना फंसना। दूसरा देखने से ही सब विकार उत्पन्न होते हैं। सारी सृष्टि मेरा अपना आप है। इसलिए Love all alike. प्रेम, नम्रता, सेवा अन्त तक बनी रहे। A best prayer is healing of a broken heart. सबके आंसू पोंछते चलो। ना मैं किसी का ना कोई मेरा पर सब मैं ही तो हूँ। आगे बढ़ा कदम रूकना तेरा काम नहीं चलना तेरा शान चल चल रे नौजवान। हर हालत में अपने को मिटाते चलो। Egoless ही Thoughtless हो सकता है। सहज समाधि में रहना। हमेशा मुस्कुराते रहो। शुकराने गाते चलो।

पत्र नम्बर - 31

You laugh and the world will laugh with you and you weep, you weep alone.

Meaning of Love

L	--	Look
O	--	Observe
V	--	Verify
E	--	Enjoy your life.

Love and be loved that is the goal of your life. Smile miles of miles your smile. This is your morning exercise.

Know thyself and you know God.

Be still होना ही परम व अन्तिम पुरूषार्थ है। Know the truth and truth will make you free. सच्चा योग है परमात्मा से सदैव जुड़े रहना। गुरू से प्रीत अंत तक रहे क्योंकि कभी-कभी stcok checking भी होती रहती है। श्रद्धा विश्वास की भेंट चढ़े सत्गुरू चरणों में रखते हैं वही भव से पार उतरते हैं, सुख शान्ति उनको मिलती है। आगे बढ़ा कदम रूकना तेरा काम नहीं चलना तेरी शान। बीच-बीच में speed breakers भी आते हैं पर तुम सभी से धीरज व प्रेम से आगे बढ़ते चलो। व्यवहार को भी परमार्थ का रंग लगा दो।

पत्र नम्बर - 32

पत्र तुम्हारा कई दिनों से नहीं आया क्या बात है। यहाँ से बराबर सब तरफ पत्र गए हैं। सत्संग तुम्हारा कैसा चल रहा है। लगन में अगन दिनों दिन बढ़नी चाहिए। यह प्रेम दिनों दिन दूज के चन्द्रमा की तरह बढ़ना चाहिए। टहनी पेड़ से जुड़ी है तो हरदम हरी भरी रहती है। तवा गर्म है तो कई रोटियाँ पक जाती हैं। अंगारा अंगीठी में है तो दहकता रहता है। तुम्हारी भी शोभा है विराट से जुड़े रहने में। वैराग्य की नींव पक्की है तो कोई माया में नहीं घसीट सकता है। अपने अन्दर की सच्चाई ही काम करती है। सच के लिए जिसे प्यार है उसे माया की कोई शक्ति अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकती। छोटी-छोटी बातों में विशेषता में न आओ। भागना नहीं है पर जागना है। सीख के जिओ जग में। नम्रता में अमरता है। मनोमय सृष्टि दुखदाई है। ईश्वर सृष्टि में तो कोई भी दुख नहीं है। मुड़ने में ही सच्चा सुख है। प्रेम ही है परमात्मा। परमात्मा से ही प्रीत सच्ची प्रीत है बाकी नाते सब झूठे हैं। सब मतलब के हैं यार, मत करो किसी से प्यार। अपने सुख से सब जग बांधो, क्या दारा क्या मीत।

पत्र नम्बर - 33

तुम सभी ने प्रयास किया है तो सफलता भी अवश्य मिलेगी। आज दादा भगवान की बगिया जो इतनी सुन्दर सभी को लग रही है उसके पीछे भी इसी कुर्बानी का ही बीज है। सारी दुनिया से आला हमारा सत्गुरू है। गीता में निष्काम कर्म की महिमा लिखी है। लेकिन आज दिन तक किसी को भी ऐसा निष्कामी दिखाई नहीं दिया। गीता पर प्रवचन करने वालों ने भी दान पात्र रखे हुए हैं पर आज दादा भगवान ने जो यह ज्ञान दिया है इसमें कभी भी उन्होंने एक पैसे की भी उम्मीद नहीं रखी है। केवल दातार होकर यह ज्ञान यज्ञ किया है। आज सारी दुनिया झण्डे की सलामी करती है परन्तु उसका जो आधार है डण्डा उस पर किसी की दृष्टि नहीं होती है। दादा भगवान ही इस झण्डे का डण्डा हैं। सारा श्रेय आज तक उन्हीं को है। कल 29th April थी दादा भगवान की पुण्य तिथि। जिस दिन वो ज्योति जोत समाये थे। अपना कार्य पूरा करके हम सबके आधार स्तम्भ बने। गांधी भवन में सत्संग हुआ। 6-700 लोग करीब इकटटे थे। सभी ने प्रेमपूर्वक उनकी महिमा का गुणगान किया।

पत्र नम्बर - 34

यह जीवन प्रभु के हवाले कर देने में ही मजा है। सब कुछ प्रभु अर्पण कर दें तो हम हल्के हो जायेंगे। पत्थर भारी है तो डूब जाता है परन्तु तिनका हल्का है तो तैरता है। तुम लोगों का प्यार ही तुम्हें आगे बढ़ायेगा। आज नहीं तो कल ये रूकावटें समाप्त हो जायेंगी और पूरा ही जीवन प्रभुमय हो जायेगा। तुम निष्कामी है इच्छा अंहकार से खाली तो निष्काम कर्म तेरे सामने जरूर आयेगा। यही निष्काम का फल है। सत्संग से ही अन्दर के विकार नष्ट होते हैं। प्रभु का सिमरण साध के संग न कि घर बैठ के। घर में बैठने पर तो वृत्तियाँ बिखरती हैं। एकाग्रता नहीं होती। पर सत्संग में जब अपने ही मुख से वाणी निकलती है तो अपनी ही दृढ़ता होती है।

पत्र नम्बर - 35

खुशी होती है कि तुम लोगों को भी प्रभु ने ये कार्य दिया है। निष्कामी के सामने ही निष्काम कर्म आता है। जहाँ चाह है वहाँ राह भी है। सत्य की आखिर जीत होती है। यह जीवन प्रभु तेरे लेखे। ऐसे संकल्प करने से सचमुच प्रभु ही इस रथ को आ के चलाता है। Ready made house में आ के खुद ही विराजमान होता है। सच्ची लगन वाले के लिए कभी कोई दिक्कत नहीं आती है। विराट से connection जुड़ा ही रहे। तुम सबके अच्छे संकल्प जरूर ही एक दिन मिलवायेंगे भी। आपघात की बात तुम लोगों ने लिखी है सोई हरेक अन्दर आत्मा की हत्या करके बैठा है। यही बड़े से बड़ा पाप कर रहा है। बाकी सभी पाप तो छोटे छोटे हैं। जीवभाव में रहकर मनुष्य मन के अधीन है और अन्दर से अतृप्त वासनायें हैं या सूनापन है जो गुरू के प्रेम के सिवाय नहीं भर सकता है। अब तो उसके बारे में न सोचकर अपने बारे में सोचें कि हम क्या कर रहे हैं। हम तो कहीं वही भूल नहीं कर रहे हैं जो भीतर वाले भगवान की हत्या अन्दर में करके बैठे हो। सच में रहेंगे तो हर दुख से बच सकते हैं बाकी वैसे तो कभी भी नहीं।

पत्र नम्बर - 36

आप सभी का प्रेम भी बढ़ रहा है अब देखो फिर कब निराकार यह मिलन भी करवाता है। सब कुछ fix ही है। आप सभी यह प्रेम बांटने में लगे हुए हैं। सचमुच इस संसार में ऐसे कम ही लोग ही हैं जो निष्काम जीवन जीते हैं। बाकी तो सारी दुनिया मैं मेरे की आग में जल रही है। इच्छा व अंहकार गुरू भीतर से खत्म कर देता है और हर प्रकार की कंजूसी खत्म करा के जीवन मुक्ति का आनन्द दिलाता है। हमेशा ही इस आनन्द को बढ़ाते चलो। सत्य को जानो तो मुक्ति तुम्हारे कदम चूमेगी। हमेशा प्यार में ही जीवन बिताओ। एक से प्यार बन्धन है, सर्व से प्यार मुक्ति है। सत्संग जोर शोर से करते चलो। तुम लोग भी अपने आत्म निश्चय में पक्के रहो।

पत्र नम्बर - 37

बस गुरू ने ऐसा ही जीवन बनाया है जो हर समय खुशी ही खुशी, मेले ही मेले हैं। आप सभी का निश्छल प्यार बार बार याद आ रहा था। सचमुच यह प्रेम ही अनोखा है। कैसे सारी दुनिया अपनी हो जाती है। गुरू मैं मेरे की दुनिया से ऊँचा उठ कर विशालता की सैर करवाता है। मैं नहीं मेरा नहीं तो हृदय बिल्कुल full sponge हो जाता है। सर्व दुखों की निवृत्ति और परम आनन्द की प्राप्ति हो जाती है। बस यह लगन अगन में बदलती जाये। जीवन सर्व के लिए हो जाये। मैं मैं न रहूं तू तू न रहे हम राम में ऐसे रम जायें। गुरू ने अपने अन्दर ही सब शक्तियाँ प्रगट करवा दीं। जिसको यह लगन लग गई उसका बेड़ापार है। बस यह जवानी प्रभु के अर्पण हो जाये तो जीवन सफल हो जाये।

पत्र नम्बर - 38

इतनी छोटी age में यह लगन तुमको लगी है यह बड़ी ही खुशी की बात है। शरीरों का तो कोई ठिकाना नहीं है। जितनी जल्दी हो सके यह आत्मनेष्ठा हासिल कर लें। जितना ज्ञान मिला है उस पर रहणी भी बनायें और बांटते भी चलें। यह अमूल्य धन तुम्हें गुरू ने दिया है। प्रभु का कार्य ही तुमसे होना चाहिए। सत्संग करना शुरू कर दो। सभी से प्रेम करते चलो। राह मिलती जायेगी। तुम राम को, कृष्ण, नानक सभी को याद करते हैं बाकी अपना दादा बाबा सब भूल गए क्योंकि राम, कृष्ण व नानक ने अपने को शरीर नहीं जाना। जो अपने को आत्मा जानता है वही अजम अमर हो जाता है। कृष्ण का ज्ञान सच्चा है जिसमें कोई नाम, जाप नहीं है। इसमें यथार्थ वचन हैं। कई शास्त्रों में भयानक, रोचक वचन हैं। पर गीता में ही यथार्थ वचन हैं। यथार्थ से ही तेरा कल्याण होगा। देहअध्यास में न गिरना। भयानक वचन वाले तुम्हें अनेक भयानक बातें बता कर अपना घर धन से भरते हैं। रोचक का अर्थ है रुचि दिलाने वाले शब्द। जैसे कहते हैं अजामिल ने last में नारायण बोला तो मुक्त हुआ। वेदों में त्रिगुणी माया का विस्तार है। पर ज्ञानी माया से परे है। वेदान्त माना वेदों का अन्त, सार तत्व। असल सार है You are God. मनुष्य खुद ईश्वर है। यदि आपने अपने को जाना नहीं तो मिट्टी जितना भी मूल्य नहीं है। मनुष्य मरे कित काम ना आवे। पशु मरे सौ कार्य संवारे। जानवर की खोपड़ी का दाम मिला मनुष्य का नहीं।

पत्र नम्बर - 39

हरेक अपने को लायक बनाये। ये तेरा अंहकार है जो तुम कहते हैं मैं अपने आप चलूंगा। गुरू के आगे नम्रता से प्रश्न करो और गुरू वाक्य सत्यम् करके चलो। पर जब अंहकार आयेगा तो गुरू की भी नहीं सुनेगा। जीवभाव है तो भूल होगी पर आत्मभाव में भूल न होगी। जिसका जितना receiving mind होगा उतना ही सुनेगा, समझेगा। इसलिए किसी से खफा न हो जाओ। किसी की भूल न देखो पर सबको पहले प्रेम के बन्धन में बांधो तो कोई तेरी बात सुन सकेगा, समझ लेगा। सच्चा ज्ञान कभी न कभी सभी को fit होगा। 12 बजे दोनों सुई इकटठी होंगी इसलिए धीरज चाहिए। इन्कार करते-करते इकरार हो जाता है क्योंकि गुरू सच्चा है, निष्कामी है। मन बुद्धि बीच में रोला करता है। नम्रता से एक-एक से बोलो। गुरू भी देश काल पात्र देखकर ही ज्ञान देता है। Time से ही कोई बात करता है। आखण औखा सांचा नाम-सबको आत्मिक शक्ति देता है पर किसी की भी भूल नहीं देखता है। पूछे तो दे, स्वयं कर्म का आरम्भ नहीं करता है। तुम शान्त करो कोई शोर नहीं तेरा की। मन बुद्धि से कभी तुम भगवान को नहीं जान सकेगा पर गुरू वाक्य सत्यम् करके तुम उठाते चलो तो आपे ही ज्ञान हो जायेगा। हरेक अपनी भूल ढूंढे। दूसरे की भूल तो एक बच्चा भी निकाल देता है। हमारा काम है सर्व से प्रेम, एकता व मेलाप रखें। पहले पहले तो ज्ञानी को सर्व से प्रेम रखना है। किसी का दोष न देखे। गुरू जाणी जाणनहार है। हरेक एक दिन स्वयं ही ठीक हो जायेगा। कर्म और विकार दूसरे के देखेंगे तो अपना आप कब देखेंगे। पाण मंझ ई पाणु पसु वियो तू दर्शन बंदकर सावधानिअ साणु पर जो सारोई चिन्तन बंदकर। दूसरे का चिंतन क्यों चले। मेरे सिवा दूसरा है ही नहीं। तैरना सीखना है तो केवल मास्टर को और अपने को देखो दूसरे को नहीं। गुरू ने मेरे को क्या दवाई दिया। गुरू को अपना मन, बुद्धि देकर आज ही आनन्द में आ जाओ। तेरे पास जो आए आत्मा का निश्चय कराओ। नाम रूप की बात न करो। तुम अपनी दवा ले के जाओ। जो टोपी तेरे को fit हो तो लो। आज के सत्संग से मैंने क्या उठाया। तन मन धन बुद्धि सब गुरू का है जैसे चलाये तैसे चलें। कृष्ण ने अर्जुन को भी पहले आत्मा समझाया फिर युद्ध कराया। कर्त्ताभाव से रहित हो जाओ। गुरू कि main सेवा है उसके वचन कमाना कि मेरे लिए गुरू

का क्या उपदेश है ?किसी से विक्षेप में न आयें। ज्ञानी भक्त के लक्षण 12 वें अध्याय के 13 वें श्लोक में है। हर समय अपने को ही जांचो।

.... Judge किसी को फांसी की सजा देता है तो भी निर्दोष है क्योंकि इन्साफ की कुर्सी पर बैठा है और दूसरा कोशिश करता है खून करने की। Intention था, मर्म देखना चाहिए। तुम्हारा बाहर का कर्म लेखे में नहीं आयेगा पर तुम्हारी मुराद क्या थी ? जैसे सेठ घर बैठे तनखा देने जाता था पर अन्दर लड़की में नजर थी। If the wrong man uses the right means, the right means work in the wrong way. चाहे अच्छा कर्म भी किया पर नतीजा खराब ही निकलेगा क्योंकि तुम अंहकार, इच्छा, वापसी की इच्छा, स्वार्थ रखकर करता है तो नतीजा स्वर्ग नर्क मिलेगा पर निष्कामी दूसरे की भलाई के लिए जीता है तो उससे wrong कर्म हो नहीं सकता और उसका आवागमन मिट जाता है। तुमको adjust करने का है या पूरी दूनिया को बदलने जायेगा ?You change yourself. कर्म ही तुम्हारा है तो रोला किसलिए है ?ये अज्ञान करके तुम शिकायत करता है पर ज्ञानी सारा दिन शुकराने मानता है। बुरा जो देखन मैं चला। तुम्हारी evil eye है जो खराबी नजर आती है पर जब है ही भगवान तो किसकी बुराई देखूं आत्मा छोड़कर ?जो बांदा बाणिया है वो ही सम्भालता है कि 10 साल पहले मेरी सास ने मुझे ऐसा कहा था पर एक second पहले क्या हुआ ये ज्ञानी को याद नहीं। present में रहो। जिसका भाग नहीं है वो कम्बख्त है time नहीं है सत्संग के लिए। सारा दिन बच्चों की चूं-चूं सुनता है पर कभी बगीचे में जाकर कोयल की मीठी आवाज नहीं सुनता है। भगवान ने कितनी सहुलियत बनाई है। Yesterday is a cancelled cheque. कल परसों की बात करेगा तो मर जायेगा। बैंक में पैसा छोड़कर जायेगा पर जो उमंग प्यार का उठता है अभी पूरा करो दूसरे क्षण में तुम्हारा शरीर न हो तो। यह मनुष्य दो पल का है तो वक्त कैसे गंवाते हैं ?आत्मा का कितना मनन किया, कितना श्वास प्रेम का निकाला और कितना मोह, राग-द्वेष में निकाला। फिजूल बातों में time गंवाते हैं। सारी उम्र fun and feast में बिता पर मिला क्या ?सुख में party करते हैं और दुख में रोते हैं। हर मन के ईश्वर बनो। यह तो तुम खिलौना है। गुरू को अधिकार है कि किसी को मारे-कूटे पर तुमको अधिकार नहीं है किसी का अवगुण

देखने का। भूल नहीं देखो क्योंकि तुम खुद दोषी हो। पांच विकार तो हैं फिर कैसे कहता है कि फलाणा खराब है। तुम perfect हुआ ही नहीं है। गुरू अगर किसी का अवगुण बताता है तो भुला भी देता है पर तुम नफरत करके बैठता है। आत्माकार आत्मा ही देखता है। तुम खुद को surrender करता है कि मेरी भूल बताओ। गुरू का काम है तुमको जगाना। fitfalls दिखाना तो तुम अपनी भूल खुद realize करो। गुरू साफ आईना है। दृष्टान्त - Mary को सभी आदमियों ने पापी समझकर मारा पर christ ने कहा उसको ही अधिकार है मारने का जो निष्पाप है। पर reformers अपने आप के चाहिए। अपनी रहणी बनाओ तो सारी दुनिया बनी पड़ी है। प्रेम के vibrations भेजो तो सब भगवान हैं। सब भगवान हैं तो सब खिंच कर आयेंगे। छोटी बड़ी आत्मा है नहीं। करोड़ दीयों में एक ज्योति समाई पड़ी है। दूसरे की गन्दगी में जाता है जब कोई दोष देखता है। तुम शान्त बनो कोई शोर नहीं। तुम बुरा है तो बुराई दिखती है। विकार अन्दर में पड़ा है सिर्फ साधन चाहिए बाहर निकालने का। बाहर वासना पड़ी है और दोष देता है स्त्री को कि चंचल है। एक है मायाकार वृति जो सिर्फ पदार्थ, T.V, building हीरा देखता है। अच्छा दूसरे को देखता है तो भगवान की insult करता है। जो अपनी आत्मा पर मोहित है वो दूसरे पर आशिक कैसे होगा?जो नजर देख लेती है तुझको वो नजर फिर तरसती नहीं है। वो आंख ऐसी है मरी हुई बिल्ली की तरह जगत दिखाई नहीं देगा सिर्फ भगवान ही दिखेगा और फिजूल की बात भी नहीं सुनेगा। जिसने गुरू के मुख से महावाक्य सुना तो दोस्त दुश्मन कौन है ?दूसरी ब्रह्माकार वृति जो sameness, oneness. सबसे एक जैसा प्यार है तो शान्ति आ जायेगी और गुण दोष दिखने में नहीं आयेंगे और शरीर में मन जायेगा नहीं तो वैराग्य वृति हो जायेगी। एक है देह का प्यार, मोह और दूसरा है आत्मिक प्यार जो आने जाने, बिछड़ने में दुखी नहीं होता है। सबके आगे नम्रता में चलेगा तो कभी दुखी नहीं होगा। सच्चा योगी ज्ञानी वो ही है जो सुख दुख, लाभ हानि, मान अपमान में सम है।

पत्र नम्बर - 40

Christ ने कहा forgive them oh Lord अभयदान दिया। गुरू किसी को नतीजा नहीं देता। गुरू भगवान व जज से भी ज्यादा होशियार वकील है तुम्हें छुड़ा सकता है। तुम कहता है मैंने किया, जो आपे ही कहता है उसे जरूर मिलेगा पर गुरू कहता है मुकर जाओ। सपने की बात जागृत में न करो। सपने का पदार्थ, पाप जागृत में नहीं सतायेगा। गुरू धर्मराज से छुड़ाता है पहले ही लेखा ले के कागज फाड़ देता है। हम मरेगा ही नहीं तो लेखा कौन लेगा। कल तक जो हुआ वो पिछला जन्म हुआ। संचित, प्रारब्ध, क्रियामान सब खत्म हो जायेगा। ज्ञान अग्नि ऐसी जले जो मैं मेरा खत्म हो जाये। आपे ही तुम गधा बन के बैठा है, बोझा उठा रहा है। तुम आत्मा है तुमने कुछ किया ही नहीं है। doer नहीं seer बनो। तुम अकर्ता है, साखी है, आत्मा है। pure व पाक है अपने को जानो। आकार में है तो विकारी, निराकार में है तो निर्विकारी है। गुरू तुम्हें देह से ऊपर करता है। मेरा भक्त सर्व आरम्भों का त्यागी है। हम न तुम दफ्तर गुम। तेरा computer साफ हो जाये। राग द्वेष रहित हर समय आत्मा में है। कहीं भी मेरे सिवाय कुछ नहीं देखता। तुम देखना सारा दिन कर्म बना कि नहीं। नहीं तो खाना बन्द न होगा। प्रारब्ध कर्म काटो पर बनाओ नहीं। बाप ने माँ ने पड़ोसी ने दुख दिया पर तुमने बदला लिया तो कर्म बना। सपना समझ के भुला दो। repeat नहीं करो। किसी का दोष न देखो। तेरे ही बीज का फल मिला। भगवान ने अपने प्रिय भक्त के ये सब लक्षण बताये हैं। किसी का भी कर्म याद नहीं है। अगर तुमने किसी से कुछ किया है तो वो उससे माफी मांगो, प्यार भी करो और उसका राजपा हासिल करो। सदाचारी, दुराचारी, पाप-पुण्यी, सन्त-असन्त में एक ही आत्मा देखे। सब जगह मैं ही मैं हूँ। तुम अपना दुश्मन न बनो। वासना और कर्मों की गठरी खलास हो जावे तब समझना तू जीवन मुक्त है। निंडाखड़े बालक की तरह सब भूल जाता है। पुरानी history व बातें भूल जायें। एक अपनी पुरानी life ऐसे सुनाता है जैसे सपना और कोई सच्ची करके बताता है। भूल जा जो देखता है जो है देखा भूल जा। Today is the best day. क्योंकि मैं जिन्दा हूँ, भगवान हूँ, सर्व से प्यार करता हूँ। प्रेम की गंगा बहाते चलो। एक आदमी बुरा संकल्प करेगा सारी

दुनिया में पहुँचेगा जैसे T.V. का vibrations. ब्रह्मज्ञानी का होना ही सारी दुनिया के लिए शीतलता प्रदान करता है। गंगा भी सन्त की शरण में अपने पाप धोती है। एक-एक जो ब्रह्मज्ञानी बनेगा वो सारी दुनिया के लिए फायदे वाला है। भीतर बाहर शुद्ध है मेरा भक्त। अन्न भी शुद्ध, शरीर की भी सफाई है। पराया अन्न खायेगा तो उसके लिहाज व डर में भी आयेगा। पाप की कमाई न खाओ। शुद्ध अन्न खाओ। मन शुद्ध इतना हो जाये कि किसी के लिए खराब सोचना बन्द हो जावे। मेरा भक्त चतुर है। माना जिस काम के लिए आया वो पूरा किया। जब तुम काम पूरा करके बैठेगा तो हम उससे खुश है। कामना का त्यागी, मन इन्द्रियों के वश करने वाला बन।

.... मेरा भक्त फल की कामना नहीं करता है। सेवा सबकी करता है पर सोच नहीं करता है। कर्म के फल का त्यागी है। मैंने कुछ नहीं किया भगवान ने ही सबकुछ किया। किसी में स्वार्थ नहीं रखता, इच्छा नहीं करता, शोक नहीं करता। तुम कहते हैं नहीं मागेंगे तो भगवान कैसे देगा। बच्चा भी रोता है तो माँ उसे देती है। तो वो कोई बवकूफ माँ है पर पढ़ी लिखी माँ time से अपने आप से सबकुछ बच्चे को देगी। जो नहीं मांगता उसको उसका पूरा पूरा हक आपे ही भगवान देता है। MAN – DESIRE = GOD. जहाँ चाहना है वहाँ शान्ति नहीं है। राम भी है उसका गुलाम। योग-क्षेम भगवान पर है। भगवान के ही सिर में आकर दर्द पड़ता है कि इसे क्या दूं। इन्द्रलोक का राज्य भी उसे नहीं चाहिए। सब पदार्थ मिल भी जायेगा तो शान्ति छिन जायेगी। चोरों का डर रहेगा। Happiest man is without a shirt. जब आवे संतोष धन सब धन धूल समान। भगवान ने भी सबकुछ दिया है पर तुम्हें शान्ति, संतोष नहीं है तो दुखी है। निन्दक नेरे राखिए, कबीर सत्गुरू पाईया निन्दक के प्रसाद। सबका शुकराना मानो। कैसी हालत हो जिसका शुकराना न मानेगा ?मुंह बन्द हो जाये तो कहो आँख है दर्शन तो कर सकते हैं। Actress की टांग टूटी तो drama लिखना शुरू किया। दृष्टान्त-- मीरा, सीता, द्रौपदी जैसा कष्ट तो नहीं आया है ? अन्त तक भगवान में विश्वास रखो। राखे राम तो मारे कौन। है ही इन्साफ। जो बीज बोया है वो ही मिलेगा। संकल्प ही बीज रूप है जैसा संकल्प किया है वैसी सृष्टि बनी है।

सबको दुआएं दो। सबकी भलाई के लिए सोचना। हेतु रहित दयालु है। सबके लिए प्यार व करूणा हैं भगवान देखकर शान्त हो जाओ। गुण देखेगा तो गुण अन्दर आयेगा। विकार देखेगा तो विकार आयेगा। प्रेमी बनो मजदूर नहीं। तुम आशिक नहीं मजदूर है जब तू मांगता है फल मेरे को चाहिए। नहीं अभिमान, अंहकार नहीं है। बड़प्पन का छोटेपन का अंहकार नहीं है। शत्रु-मित्र, मान-अपमान में सम है। सर्दी-गर्मी, सुख-दुख से ऊपर है यानि सर्दी या गर्मी की शिकायत नहीं करता बाकी ऐसा नहीं कि सर्दी गर्मी के कपड़े नहीं पहनेगा। दुख मिले अथवा सुख हर हालत में प्रसन्न रहता है। मेरा मकान कहेगा तो उसमें सांप होकर आयेगा। जहाँ रहा हुआ है तेरे लिए है पर तेरा नहीं है। अपने मकान में इच्छा न रखो कि मैं मरूं, रहूं। किरायेदार से झगड़ा करते हैं। रहने के स्थान में ममता न हो। सारी सृष्टि परमात्मा की है। तेरा कुछ है नहीं। अपने साथ क्या क्या लाया, द्वैत, द्वेष कितना रखता है ? तुम जायेगा तो कुछ साथ नहीं जायेगा। प्रसन्न रहता है। लखपति करोड़पति भी खायेगा कितना ?बाकी सारा दिन इच्छा वासना रखकर अपना जन्म गंवाता है। ज्ञानी एकाग्र वृति में रहता है, विक्षेप में नहीं आता है। देह भी जड़ है। दीवार उसे भी क्या गाली लगी। अपमान लगता है तेरे अंहकार को। रावण ने भी अंहकार किया 10 सीस या यानि 10 इन्द्रियों का अंहकार था। गुरू तेरा 10 सीस उतार लेता है। मन, इन्द्रियों के राजा को ही खलास कर देता है। मन जीते जगतीत। जो सुनता है वो मनन करता है। ऐसा मननशील पुरूष मेरे को प्यारा है। मेरे परायण -- जैसे प्रतिव्रता स्त्री पुरूष परायण आधारित है। मेरा पति कैसे राजी रहे। एक से भी द्वेष किया माना भगवान से किया। मेरे को ही सब जगह देखे। मेरे को ही ध्यान में रखे कि मेरा भगवान कैसे राजी रहे। राजी तब होगा जब तू egoless होगा। जैसे स्त्री पति के लिए ही जीती है ऐसे भक्त भगवान के लिए ही जीता है। धर्म मय अमृत - जो भक्त के लक्षण हैं वैसा रहता है। मैं उसको प्रिय हूँ वो मेरे को प्रिय है। सर्व में मेरे को देखो।

क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ को तत्व से जानने वाला ज्ञानी है। सब क्षेत्रों में क्षेत्रज्ञ भी मेरे को जान। क्षेत्र के विकार व क्षेत्रज्ञ को अलग करना यही ज्ञान है। फिर ज्ञान के 9 साधन बनाकर आगे चलकर उनमें अभिमान का त्याग एवं वैराग्य का वर्णन किया है। भगवान समझ के सबकी सेवा करें। गुरू का भक्त गुरू से बढ़कर है। चरणधूल सबकी हो जाओ। गुरू का रूप

देखें। सबको सुखी करेगा, सुख की इच्छा नहीं रखेगा। मैं केवल गुरू की नजर में आ गया तो सारी दुनिया मानेगी। सरलता, आरजु, मन, वाणी की शुद्धता यह ज्ञान है। धीरज इस रास्ते में बहुत है। साहिब मिलेंगे सबूरी में। रीस नहीं, हसद नहीं। जो-जो तुम्हें समय पर मिला है उसका कद्र करो और बाकी के लिए धीरज रखो। उतावलापन न हो, ईर्ष्या रीस न हो। हरेक की तपस्या time पर फलीभूत होती है। इच्छा वाले को लगता है कि मेरे को कुछ नहीं मिला है। एक बूंद मिले तो भी समझो सागर मिला है। दूसरे गुरूओं के पास देखो क्या पूछते हैं ?सारी दुनिया उनके पीछे दौड़ती है उन्हें क्या मिला है ?पर तुम्हें तो इतना मिलता है। गुरू मोटर में धुमाता है, खिलाता है, पिलाता है तो भी कद्र नहीं है। दूसरे गुरू के पास तो दर्शन भी दूर से दूरबीन से करते हैं। गुरू का दर्शन माना उसे deep में जानना। One touch, one glance of true Gure is enough to show God. अर्जुन जैसी श्रद्धा चाहिए। नम्रता भाव से उत्तर प्रश्न करना चाहिए। मन की उलझन बार-बार पूछो। हजार बारी भी सवाल करो। रामजी ने वशिष्ठ से बार-बार कहा कि जगत सत दिखता है। बार-बार उन्होंने भी उसे फर्क ढंग से समझाया है। कल पूछो, फिर आज पूछो तभी निर्णय होगा, थको नहीं। तुम्हें बाहर से पता भी नहीं चलता पर अन्दर ही अन्दर लग जाता है। एक जन्म भी एक पलक ही है ऐसा समझो। लाख सीस देह हरि मिले। मुश्किल को आसान बनाने वाला मेरा सतगुरू है। 12 बजे दोनों सुई इकटठी होंगी। जन्म-जन्म का कीड़ा है विष्ठा का ये मन। बार-बार मोहित करता है। मिले हुए की खुशी करो।

पत्र नम्बर - 41

Love is not an action, it becomes your nature. It is a state of self action. करेगा तो कभी गलती में करेगा। एक से करेगा तो दूसरे से नहीं करेगा तो द्वैत सिद्ध होगा पर प्रेम का सागर हो जाओ। बर्फ का स्वभाव ठण्डक का है। वह आकर ठण्डा नहीं करती तुम उसके सामने जाएगा तो ठण्डक महसुस होगी। ऐसे ही ब्रह्मज्ञानी का प्रेम का स्वभाव है। वो करता नहीं है पर जो उसके सामने आता है वह प्रेम को पा जाता है। गुरू के अन्दर की हालत ही ऐसी है जो उसका प्यार ही प्यार है वह सूंध कर प्यार नहीं करता है। attachment रखना मोह है, स्वार्थ है, सकाम है पर निष्काम प्यार। जिसमें कुछ नहीं चाहिए। अपने घर में वापस आ जाओ। ब्रह्मलोक का सुख ही तुच्छ है पर आत्मा का सुख ही सच्चा है। जो बाहर भटकता है वो दुखी होता है। गुरू अन्दर वाले भगवान को प्रकट करता है। Love is the only divine law. प्रेम विन थोथे सभी जाप, ताप, व्रत और नेम। प्रेममय हो जाओ। सच्चा प्रेम हो जावे की सर्व में पेखे भगवान। 24 धण्टा भगवान याद है तो दूसरी कौन सी बात याद आयेगी। सारी माया dull हो जाती है। अपना आप समझकर प्यार करना ही सच्चा प्यार है। बादाम के तीन पर्दों को उतारा गया तो उन्होंने कहा कि हमने बादाम को संभाला है, सर्दी गर्मी में रक्षा की है, हमें मत फैंको। पर गुरू ने कहा कि पर्दों का मूल्य बादाम की वजह से था इस तरह शरीर का मूल्य अन्दर की आत्मा की वजह से है और वह आत्मा सदा शरीर से अलग है। विजूद माना शरीर। शरीर के परे आत्मा सदा है ही है। दुख सुख चलेगा जब तक मुक्त न हुआ है। जो हुआ सब ईश्वर की इच्छा, इन्साफ हुआ है, वाह गुरू करके देख। आत्मा पश्यन्ति आत्मा। आत्माकार आत्मा को पहचानेगा। आत्माकार बनो, देहअध्यास जाना चाहिए। भगवान पाने के लिए pathless land है। सतगुरू ही समझाता है। गुरूमुख नाम झपै एक बार। Morality and Spirituality - Morality माना दुर्भी, पाखण्डी, सदाचारी जब non-possession हो जाता है। Then there will be no desire and its object when you see nothing

but God. ईश जीव बन देखन आया। आपसे आप ही भूल्या। कृष्ण भगवान ने हिंसा करवाई जो अर्जुन को ही खत्म कर दिया। It is easy to strike but lord to stay the land. अपरा विद्या से मुक्ति नहीं मिलेगी। मोक्ष की इच्छा भी मत रखो। सिर्फ अज्ञान को ज्ञान से निकालो। अधिष्ठान देखो, नोड़ी देखो तो सांप का भ्रम जायेगा। Love all alike and the world disappears. See rope and snake disappers. Where is not God feel like this. See God everywhere. Meditation means absence of thoughts and action. माया निकम्मी, भोग रोग हैं। मोह को फर्ज समझता है पर सर्व कभी न परितज्य। मोह वाला लोभ और आसक्ति में जलता है। Do nothing and you have to renounce nothing. ब्रह्मज्ञानी परधर्म में नहीं जाता। आत्मा साध्य वस्तु नहीं है, सिर्फ मन अमन हो जाये तो आत्मा तुम पहले है। Everything is inhalited by God. No fear no hatred, Sameness and Oneness. All that happens is more right. सब दुख का कारण तुम्हारा अज्ञान है। इसलिए गुरू के मुख से आकर नाम को catch करो। हमारे पास escapism नहीं है। भागने का नहीं जागने का है। To see God is to be God. भगवान देखने से भगवान हो जायेगा। प्रेम से परमात्मा भी मिलता है और सारी सृष्टि का प्रेम भी उसे मिलता है पर तुमने प्रेम सीखा ही नहीं। सबमें मोह रखा, इच्छा रखी इसलिए कुछ मिला ही नहीं। लेकिन प्रेम वाला वापिसी की इच्छा नहीं रखता। जिसको एक भगवान का आश्रय मिला वह self dependent हो गया, आजाद हो गया। न आसरा न उम्मीद न शिकायत। प्रेम की दुनिया बढ़ाते चलो। सारी दुनिया प्रेम से खाली है। प्रेम देना सीखो तो सब तुम्हारा हो जायेगा।

पत्र नम्बर - 42

जो बाहर से सुख आता है वो जाता भी है पर भीतर का आनन्द कभी नहीं जायेगा। कल 1,00,000 आयेगा तो फिर परसों जायेगा भी। माया एक जगह नहीं रहती। गुरू तुम्हें अपनी नजर देता है कि सर्वत्र ब्रह्म जानो। अपने को जानो फिर सर्व में जानेगा। गुरू को देखते देखते, पहचानते पहचानते वैसा ही हो जायेगा। वो अद्वैत में ब्रह्मरूप हर समय एक रस है तो मैं क्यों नहीं हूँ। डाक्टर patient को जैसे dose देता है ऐसे ही गुरू भी तुम्हें समय पर ज्ञान देता है। अश्रद्धालु नाश जाण। गुरू से नम्रता भाव से बात करनी चाहिए। कभी भी अंहकार से न चलो। द्वैत की बदबू भी न होवे। अद्वैत में ही रहो। द्वैत का धुंआ नहीं पर अद्वैत की आग को जलाया जाये उसको तो रहे ना उसकी राख। निराकार भी वो है तो साकार स्वरूप भी उसका ही है। पहले सत्ता सब ब्रह्म की है। बाहर के नाम रूप में जायेगा तो गिरेगा। धैर्य से ही यह रास्ता तय होता है। माया से खींचकर गुरू ही बचाता है। 100% truth यह ज्ञान है।

सच और झूठ को पूरा-पूरा जान लो। पहले माया खींचती थी अब धक्का लगाती है। इस लोक व परलोक के भोगों की कामना से रहित हो जाओ। मन इन्द्रियों का निगृह इसमें मेहनत है पर आखिर सच्चा सुख मिलेगा। गुरू की भी श्रद्धा व भक्ति सहित सेवा। उसके वचन की सेवा। गुरू की personel सेवा क्या करेगा। निष्काम सेवा भी गुरू की सेवा है। मेरे से भी मेरे भक्तों की सेवा अधिक है। दुखी को जा के ज्ञान सुनाओ। जहाँ तहाँ मेरे को देखो। गुरू हमको बिठाता भी नहीं था अपने सामने। कृष्ण बोला मेरा ज्ञान जो मेरे प्यारे भक्तों में बांटता है वो मेरा परम प्यारा है। सेवा के लिए ही तुम इधर आया है। भक्ति, प्यार व श्रद्धा होवे। द्वैत, द्वेष से रहित। सबमें गुरू का स्वरूप देखो। बाहर के सुख भगवान से मांगने वाला कल्याण के बदले काल मांगता है। मिले मिलिया ना मिले जे मिले मिलया होय, अन्तर आत्म जे मिलेती मिलया कहिये सोय। अन्दर का मिलाप होना चाहिए। heart to heart talk होना चाहिए। त्रिगुणी माया भी जीवभाव में सताती है। पहले आत्मा को जानो तो त्याग स्वत: हो जाता है। गुरू से जब सच मिलता है तब झूठ छूटता है। सूर्य से

अन्धेरा नहीं मांगेगा सूर्य निकला तो अन्धेरा भाग जायेगा। मुक्ति का साधन है सच्चा गुरू और सच्चा ज्ञान। पहले पहले कृष्ण ने अर्जुन को ज्ञान क्यों सुनाया क्यों नहीं पहले लड़ाई करवाया। पहले-पहले आत्मा की बात ही शुरू किया है। आत्मा में ही टिकाया है। फिर अर्जुन ने जब सवाल पूछा है मन के बारे में तब कृष्ण ने उसको ऐसा ज्ञान दिया कि मन वश में कैसे हो। आत्मा की मुरली सुन के मन शान्त हो जाता है। अमृत पी के कोई जहर नहीं पीयेगा। विषय का रस सब जहर है। कभी भी तृप्ति नहीं आती। हजारों साल भी कोई यह सुख ले तो भी शान्ति नहीं आती। ब्रह्मानन्द के सिवाय अन्दर तृप्ति नहीं आयेगी। विवेक व विचार जब उत्पन्न होगा तब शान्ति आयेगी। परमात्मा को जानो। माया के पीछे न धूमो। मन माया में रम रहियों विसरयों गोविन्द नाम। अपना उद्धार पहले कर लो। Have you got peace of mind ? तुमने अपना उद्धार न किया तो तू अपना दुश्मन आप है। लोकारीत, माया सब याद है। अपने सुख व शान्ति की खोज करो तो सारी दुनिया खुश हो जायेगी। ज्ञान समझो असत के पीछे न जाओ।

पत्र नम्बर - 43

तुम अपना शरीर भुलाओ तो कोई दुख दर्द तुम्हें नहीं लगेगा। गांधीजी ने जेल को तीर्थ बना दिया तो अंग्रेज उसे दुखी न कर सके। कृष्ण भगवान ने कहा है कि मेरे को कोई कर्तव्य शेष नहीं है लेकिन तो भी जैसा मेरा आदर्श होगा वैसे दुनिया चलेगी इसलिए मैं भी ऐसी तरह से चलता हूँ जैसे कोई खराब न हो जाये। अज्ञानी तो अपने को free समझता है, बेपरवाह है। माँ-बाप बीमार होगा तो भी स्त्री के साथ धूमने चला जायेगा। बाप का या माँ का पांव तो दबाता है पर कहने पर नहीं चल सकता है। यहाँ पर गुरू प्रेम में तेरे मन को मोड़ता है। रबड़ की गुड़िया जैसा फिर तू दुनिया में किसी को भी झुक सकता है। हारिये तो हरि मिले जीते तो जम जाये। सब दुनिया में पहले अपने सुख के लिए ही जीआ था पर तुम्हें पहले मोह था उसी से ही द्वेष है। प्राणों से प्यारी भी बोलता है फिर-फिर द्वेष भी उसी से है। तुमने औरत को furniture जैसा समझा है। अपने order में चलाया है। वो चेतन आत्मा है जड़ चीज नहीं है। आज बच्चे को तुम जूता लगायेगा तो बड़ा हो के वो बदला लेता है। बूढ़ा आश्रम में छोड़ आता है इसलिए सबको भगवान करके देखो। बच्चा बड़ा है तो तेरा दोस्त है पर तुम सारी उम्र बच्चे को बच्चा समझाता है। वो तुमसे ज्यादा अक्ल वाला है। पर तुमने उसकी कलाएं छिपा दी हैं। जो बड़प्पन की होशियारी है वो अन्दर से निकाल दो। A to Z जो भी विद्या ली वो अविद्या है उससे तू बेवकुफ ही रह गया। अपने को नहीं सुधारा मन में शान्ति नहीं है। विकार सब भरे पड़े हैं। भगवान की तरफ तेरी कोई होशियारी नहीं चलती। जिसका यहाँ मन मुड़ा वो सब तरफ मुड़ेगा। मन मारण की औषधि सत्गुरू देत बताय। किसी के under मन तो मुड़ा नहीं। गुरू प्रेम से जब मोड़ता है तब सीखता है। तुम जब खुद यहाँ सीखने आया है तब गुरू तेरे मन को मोड़ता है। गुरू तेरे मन दुश्मन को मोड़ के बनाता है। दुनिया में तुम किसी के आगे न मुड़ा वहां से दो गाली खा के भागेगा। गुरू को छोड़ के जायेगा तो तेरा ही नुकसान होगा। Pride comes before a fall. जो गुरू के पास नहीं मरेगा उसे दुनिया मारेगी। गुरू यहाँ नम्रता करके निरअंहकारी हो के हमें नम्र व निरअंहकारी बनाता है। गुरू ही कहता है मैं कुछ नहीं हूँ तो तुम कैसे कुछ बनेगा ?माँ ने भरत को जब

भाई का हक दिया तो उसने नहीं लिया। pure हो जाओ तो फिर यह ज्ञान लगेगा। वैराग्य वृति हुई तो रामचन्द्र ने वशिष्ठ से यह ज्ञान लिया। वैराग्य पक्का है तो ही ज्ञान पक्का होगा। जिसको दुनिया की इच्छा है, स्वर्ग की इच्छा है तो उसको भगवान न मिलेगा। ब्रह्मलोक का सुख भी मिले तो भी नहीं चाहिए। कोई भी present मिलती है तो तुमको खुशी होती है या नहीं। हनुमान ने मोतियों की माला के एक-एक दाने को तोड़कर फैंक दिया कि इसके अन्दर राम नहीं है। ये मोती, ये हीरा, ये जवाहरात मैं क्या करूं। सारी दुनिया एक तरफ मेरा भगवान एक तरफ है। तुम समझते हैं कि थोड़े time का सुख तो माया में है पर उसे रामचन्द्र के सिवाय कुछ नहीं चाहिए। सीता ने भी एक हिरन की कामना की तो रावण के पास जाकर पहुँची। तुम्हें माया प्रिय है, थोड़ी भी ली तो भगवान हाथ से खिसक जायेगा। एक मर्द औरत पर कितना हक रखता है। तुम गुरू का इतना हक अपने ऊपर रखता है। वो पति भी कहता है तू केवल मेरी है मेरी होकर रहना। तुम भगवान के सिवाय कुछ न देखना। सारी दुनिया से unconcerned रहेगा तब भगवान से प्रीति है। कहाँ भी राग रहता है, प्रीति रखी तो फंसेगा पर अव्यभिचारिणी भक्ति योग से भगवान मिलता है। God is jealous lover. वह भी नहीं चाहता है कि मेरे अलावा तुम कहीं भी अपनी दिल लगाओ। दुनिया में लोग प्यार करके गिरते हैं। They fall in love, we rise in love. यहाँ आत्मिक और दुनिया में वासनिक प्यार है। मीरा प्यार में चढ़ गई। एक कदम कोई बढ़ता है तो 100 कदम भगवान चल के बढ़ाता है। What is your aim ? अपना स्वरूप पहचान, गफलत छोड़। माया मरी न मन मरा मर-मर गये शरीर, आशा तृष्णा न मरी कह गये दास कबीर। आशा, तृष्णा महाचंडाल हैं। कभी मरने वाली नहीं है। आप भये बुढे तृष्णा भई जवान। तुम कहता है मैं जल्दी ठीक हो जाऊं बीमारी से। तो गुरू कहता है उठ के तू फिर माया में ही जायेगा और क्या करेगा। पैसे के पीछे न जाओ पर भगवान के पीछे जाओ। गर्भ जेल में भी तू चिल्लाता है कि फिर माया में न जाऊंगा पर निकल के फिर क्या किया। तुम कहता था यह जन्म तेरे लेखे दूंगा पर इतने साल क्या किया। अब भी जब बीमारी, दुख आयेंगे तो जल्दी-जल्दी आयेगा पर जब फिर सुख मिलेंगे तो तू घर बैठ जायेगा। गरीब सोचता है साहूकार होता तो सुविधाएं होती तो जल्दी

आता सत्संग में। साहूकार कहता है इतनी माया न होती तो जल्दी आता। पर इधर दोनों ही नही आते हैं यहाँ तो प्रेम व लगन वाला ही आता है। जिसका बख्त भाग खुलता है तो तुम सब भाग्यवान भगवान हो जाता है। प्रेम से नियम, नियम से परमात्मा मिलता है। गैर हाजिर माना घर हाजिर। घर में तो जरूर माया की बात चलती है। गुरू के सामने 10 भूल होती हैं तो गुरू से दूर रहकर हजार भूल होंगी फिर गुरू के पास रहते तू भूल रहित हो जायेगा। अहमता, ममता, कर्त्ता, समतायोग से जायेगा। तुम कहता है I wish to sit in Samadhi. ये विष है, जहर है। समाधि से नहीं पर अध्यात्मिक ज्ञान से तेरा भ्रम संशय जाता है। आत्मा न मरती है न मारती है। अर्जुन से सबको मरवा के भी अर्जुन ने किसी को नहीं मारा। शरीर सब मरने वाले हैं। शरीर अमर नहीं हो सकता है। आत्म ज्ञान से ही ये समझेगा कि There is no death. चार अवस्थाओं की तरह ये शरीर भी change होता है। वासनानुसार जा के नया चोला धारण करता है। वासना को shelter चाहिए। प्रभु के सिमरण गर्भ न बसे, दुश्मन टरे, भय न वियापे। कोयला कभी न उजला पर भट्ठी में जल के भस्म होता है।

.... निष्कामी कोई विरला ही होता है। इस ज्ञान में ज्ञान सुनाकर तुम इच्छा रखेगा उसमें तो वो सकाम हो जायेगा या सोचेगा मैं इतना धूप में, बारिश में, गर्मी में आया गया मुझे क्या मिला। शुद्ध बुद्धि वाले को ज्ञान जल्दी लगेगा। थिर मन ब्रह्म अथिर मन संसार। दूजा भाव न होये। एक ही भाव हो जाये। समदृष्टि, समभाव रखना है। गुरू को अपना तन मन धन भेंटा चढ़ा देता है तो अन्दर आनन्द आता है। महात्मा गाँधी को एक औरत ने अंगूठी दी। जो उसकी टोटल मल्कियत थी वह दी। महात्मा गाँधी ने उसका दान सबसे बड़ा माना। एक ड्रेस, एक साड़ी, एक चादर गुरू को दिया बाकी सब तुमने अपने लिये रखा तो यह तेरा कैसा प्यार है। रानी का 10 लाख का चेक नदी में बहा दिया तो सारा दिन कहती थी सब आपका है तो भी आकर महादुखी हुई। तेरा तो कुछ था ही नहीं। 10 लाख उसका अपना ही था। गुरू तेरा अंहकार निकालता है। इसलिय यहाँ गुरू ने

किसी का एक पैसा भी नहीं लिया है। जब तू भी न रहे तेरा भी न रहे तब तेरा एक झूठा बेर भी गुरू रखता है। मैं अगर देखूं तो देखूं तुम न मुझको देखना ऐसा निष्कामी भक्त होवे। राजाओं की राजाई भी फेंक देता है प्रेम स्वीकार करता है दिखावा नहीं। जो नम्रता सेवा प्रेम में है, निष्कामी भक्त है उसका सब खाता बन्द है। शरीर मन और संकल्प विकल्प होशियारी सब गुरू को देवे। गुरू से कभी फल नहीं चाहो। तुम कहेगा इतना गुरू को दिया, सब गुरू के लिए छोड़ा, गुरू ने मेरा कद्र ही नहीं किया। मेरे लिए सब कुछ गुरू ने ही किया तप भी, साधन भी। यज्ञों का भोक्ता भी मैं हूँ। पुरूषार्थ भी गुरू ने ही अन्दर किया। गुरू ने ही हमारा ध्यान किया है। मैं हूँ ही नहीं। जो न्याज से, श्रद्धा विश्वास से चलता है उसका पत्र पुष्प प्रेम से लेता हूँ। जिसे कुछ चाहिए नहीं, जो सर्वस्व कुर्बान कर दे। न मैं अपने लिए और न अपने वालों के लिए रखता है। अपने वालों के सुख की इच्छा नहीं। total सर्व के लिए जीये।

सर्वधर्म पाने में जो कष्ट उठाता है वो भी मेरे को अर्पण कर दो। सब भगवान ही कर रहा है। जो कुछ life में किया है सब मेरे को अर्पण करते चलो। सब कुछ भगवान तुम ही है मैंने कुछ नहीं किया है। तुम कुछ भी देगा तो याद करेगा इसलिए पहले निरअंहकारी होना है। गुरू सब तरफ से तुम्हें छुड़ाता है। जब तक छूटेगा नहीं तब तक आत्मा में नहीं टिकेगा। धुटन के बाद बारिश होती है। फिजूल बात नहीं करता। फिजूल खाना ये ज्ञान नहीं हैं एक शब्द भी हंसी मजाक में wrong बोला तो कोई तुम्हें ज्ञानी या जिज्ञासु नहीं समझेगा। अन्दर ही अंतर्मुख होते जाओ। धूमने की इच्छा भी नहीं। सारा दिन मौन रह कर दिखाओ। आत्मा का जवाब दियो। फिजूल न बोलो न हंसी मजाक करो।

सब कर्मों का फल अर्पण कर दो वह सन्यासी है। दो प्रकार का योग भगवान ने बोला है। निष्काम योग और सन्यास योग माना कर्मों का फल अर्पण कर दो। निष्काम कर्म योग आसान है, सुगम है। साधन में देह अध्यासी के लिए यह साधन बहुत कठिन है वो बंधज्ञानी हो जायेगा। राग द्वेष से ऊपर है यह ज्ञान। समदृष्टि होवे समवर्तण नहीं। Willing renunciation खुशी से ख्वाब। कर्म करने में तू स्वतंत्र है फल भोगने में तू परतंत्र है। जिसको कर्म का फल नहीं चाहिए वो क्या कर्म करेगा। प्रेम में दिल जुड़ जाती है नफरत में दिल टूटती है। तुम यदि किसी का दिल जोड़ नहीं सकते हो तो तोड़ते भी क्यों हो।

अंगुलीमाल डाकू को बुद्ध के प्रेम ने बदल दिया। गुरू के एक वचन से विवेक खुल गया। सभी को auto-suggestion दो कि you are getting better. गुरू कहता है तू अजर अमर आत्मा है। जो आत्मा में है वो सदैव हंसता रहता है। तुम भगवान के नए कपड़े पहनने में रोता है। तुम छठी की खुशी करो बाकी जाने का मातम क्यों करते हो। तुम समझो बेटा America गया है। तुम तो था कंजूस। उसे शायद पैसा न देता धूमने के लिए तो वो नए शरीर में आकर धूमेगा। सत का अभाव नहीं और असत का भाव नहीं। अशोक रहना तेरा धर्म है। जीते हुओं का चाहे मरे हुओं का ज्ञानी शोक नहीं करता है। सच्चा धर्म है तेरा अशोक रहना। मोह, शोक में रोना पड़ता है। दृष्टा साक्षी होकर picture देखते चलो। नाटक का अर्थ है न अटक, न टिकने वाला। God has a plan for you. तुम सच करके समझेगा तो दुखी होगा। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की तरह भूल न जाओ। तुमको कोई विधवा रोके अपनी history सुनायेगी तो तुम रो पड़ेगा। पर ज्ञानी उस की झूठी story करके समझता है और अगले को भी ज्ञान सुना के झूठ करके दिखाता है। भगवान ने तुमको बेटा दिया अमानत तुम अपना समझ के बैठा है। जिस प्रभु से नहीं चारा, वाको कीजे सदा नमश्कारा। भगवान से तुम पहुँच नहीं सकेगा। सब चीज (तुम भी तेरा भी) की गठरी बना के रख दो तो किसी बात का शोक न होगा। सब कर्म फल भगवान को दे देगा तो भगवान में ही लीन हो जायेगा। मुक्त जो है वो शुभ अशुभ के फल नर्क व स्वर्ग से छूट जायेगा। मुक्ति का ज्ञान है। फल ही नहीं मिलेगा। तुम मुक्त है ?चित्रगुप्त computer अन्दर ही है सब हिसाब किताब लिखता रहता है। गुरू को सब हिसाब बता दियो तो तुम सब कर्म से छूट जायेगा। सपने में जो कर्म हुए उनका हिसाब नहीं मिलेगा। तुम इधर ही मुक्त हो गया तो फल कौन भोगेगा। मुकर जाओ। गुरू होशियार वकील है। भगवान से भी छुड़ा के आयेगा। तुम्हारा सब विकार अंहकार उसमें जल के भस्म हो जायेगा। देह में न जाओ। पिछली कल तक की कहानी भुलाओ। जो कुछ किया इस शरीर से किया। आज तू ये शरीर नहीं है। बुरी आदतें आज फेंको नया जन्म नया जीवन। आज से तू Son of man नहीं पर Son of God है।

पत्र नम्बर - 44

सत का कभी अभाव नहीं असत का भाव नहीं। न आप मरता है न मारता है। जमे न मरे न नाश थिए। अजूनी और अविनाशी है। नया कपड़ा पहनने के लिए पुराना छोड़ना पड़ता है। पैदा होगा तो अवश्य मरेगा। इसलिए शोक काहे का करे। आत्मा आश्चर्यवत है। सब देह के अन्दर है अमर देह वासी। योग माना युक्ति। कोई भी मरता है तो अशोक रहो। सब दान से उत्तम दान ज्ञान दान है। अच्छे से अच्छे दान है कि फिर उसे भीख मांगना न पड़े। इच्छा मात्रम् अविद्या। यह तेरा अज्ञान है। हमको इच्छा नहीं है और तुम इच्छा मोह नहीं छोड़ सकता है। ये अन्तर देखो। महात्मा गाँधी ने जेल तीर्थ यात्रा बना दिया। Adjust your will with the will of God. You do nothing and everything is already done. Trobules won't come if you invite them not. Love not your country but your kind. परधर्म में न जाओ। करतूत पुश के मानुष जात लोक पचारा करे दिन रात। सब करम करना कसूर है, सब कर्म में दोष है। तू त्रिगुण अतीत हो जाओ। जनक ने सब कर्म त्याग दिया। जगत मिथ्या है जैसे भूल भुलैया का खेल। अधिष्ठान देखने से झूठ गुम हो जाता है। When knowledge dawns the world disappears. कर्मकाण्ड से मुक्ति नहीं है। त्रिगुणातीत बनो। जो जाने मैं कुछ करता तब लग गर्भ जूण में फिरता। A Good deed binds, the doer as much as a sin. राजा जनक ने सब कर्म त्याग किया त्रिगुणातीत हो गया। सर्व कर्मान् सन्यस्य, सर्व धर्मान परितज्य माम् एकम् शरणम् त्वज्र। Make I thy single refuse. माँ की शरण लो। चुप का है संसारा। आठ ही पहर समाधि में रहो। विवेक, विचार, पुरूषार्थ, अभ्यास, वैराग्य, उत्तर प्रश्न करने से निश्चयात्मक बुद्धि हो जाती है। Willing renunciation हो जाता है। असमर्थ भोगता है, समर्थ खुशी से ख्वाब करता है। देहअध्यास छोड़ने से मुक्ति है सर्व दुखों की निवृत्ति और पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति ही मुक्ति है। सत्पुरूष जिन जानिया सत्गुरू तिसका नाम। अपने को सत्पुरख परमात्मा समझा है। गुरू ईश्वर गुरु गोरख ब्रह्मा, गुरू पार्वती माई। गुरु

माया का पति है। दस अवतार तुम्हारे ही हैं सो प्रभु दूर नाहिं। संत लोग पुकारदे कर-कर लम्बे हाथ, तू परमात्म देव है तू तो त्रिलोकी नाथ। निराकार साकार धारे आयो जगत में। अल्लाह आदम बन के आया। आत्मा बिना हर चीज को दिल से सदा नाकार करो। सत्गुरू तेरा है आत्म। God is within. परधर्म में नहीं जाओ। मनुष्य देह है केवल छूटने के लिए। 84 लाख दरवाजे वाले किले से अंधा कैसे छूटे जब खुले हुए दरवाजे पर ही खुजली होने लगती है। खेल को जीव सत करके समझता है तो दुखी सुखी होता है। साखी दृष्टा हो के खेल देखो। director जब अपनी film देखेगा तो कहेगा मेरे से ही यह सब हुआ है। नाटक का दृष्टा है Seer not doer. अज्ञानी कहता है ऐसा क्यों हुआ वैसा क्यों हुआ। जीव criticize करता है पर ज्ञानी कहता है तो तुद भावे। जो सीन आती है उससे सीख के आते हैं। हर हालत से हम सीखें। हर परीक्षा से पास होते चलें। यह पढ़ाई चल रही है। दुख सुख तो आते ही रहेगें पर तुम पहेली solve करके बैठो। यह सारी सृष्टि एक पहेली है। जो इसको solve नहीं करता है वो दुखी होता है। ज्ञान के बाद हर हालत अच्छी लगने लगती है। God has a plan for you. भावना अच्छी रखो। बीज स्वरूप परमात्मा है। जैसा संकल्प करोगे वैसी सृष्टि हो जायेगी। भगवान तेरी परीक्षा लेता है फिर तू क्या सीखता है ?अज्ञान में आ गया जीव बन गया पर तू शेर का बच्चा शेर है। Son of God, God ही है। बकरी का बच्चा बकरी का ही है। गुरूमुख से आज हमारा नया जन्म हुआ है। परमात्मा का बच्चा होकर भी भूल गया सच तो हम भगवान से आया है, परमात्मा ही एक से अनेक हुआ है। जिसके अन्दर ज्ञान धन है वो कभी गरीब नहीं हो सकता है। दुनिया में ही कोई बड़ा आदमी दोस्त होता है तो भी कितनी खुनकी होती है फिर जब भगवान से दोस्ती हुई है तो कितनी खुनकी होनी चाहिए। भगवान ही शक्ति है, भगवान मेरे साथ है। सब अच्छा ही होता है। राम राज्य में इंसाफ ही होता है। बुरे को बुरा अच्छे को अच्छा ही मिलता है। तुम सर्व से प्रेम करो तो सब तुमको प्रेम करेगें। सब अच्छा ही अच्छा है। सबके अन्दर भगवान ही बैठा है। तुम भगवान देखकर खुशी करो। भगवान नहीं देखेगा तो दुखी सुखी होता रहेगा। राजा शराब के नशे में वजीर का dress पहन लिया तो

एक दुश्मन ने उसे मार दिया। तू भी मरता है जब राजा को भूलता है। राजा (भगवान) देह बनकर आया है। गुरू आकर जागृत करता है। मैं तो शाहों का शाह हूँ। अभी मन के अधीन है फिर मन तेरे अधीन होयेगा। गुलामों की गुलामी कर रहे हो। मन ने कहा दुखी हो तो दुखी हो जाता है। सदा एकरस रहो। दुख सुख, लाभ हानि में समान रहो। किसी की भूल एकदम उसे न बताओ। कम से कम 24 घटा कुछ न कहो। जल्दबाजी में कह के फिर पछतायेगा। ज्ञानी को बहुत धीरज है। forgive & forget. कोई गाली देवे तो भी 2 मिनट में हम उसे प्यार कर सकते हैं। बिचारे का अज्ञान उसे सता रहा है। पागल की hospital में doctor पागलों से खफा नहीं होता है। इसलिए ज्ञानी forgive & forget करके बैठता है। सारी दुनिया मनमुख है गुरूमुख से नया जन्म होता है। Son of God. सतचित् आनन्द मुक्त परमात्मा हूँ। तेरे बाप की surname तेरी है। आत्मा ही है।

.... तुम को जब तक इच्छा है तब तक तृप्ति न होगी फिर भी कुछ न कुछ मांगता ही रहेगा तब तक तू मुक्त नहीं है। यह भगवान का ऐसा रास्ता है जिसका कोई रास्ता है। सहज त्याग हो जाये। light आने से ही चला जाता है। Be still and know that you are that. इसलिए तुम्हारा धर्म है शान्त हो जाना। ब्रह्मज्ञानी का धर्म है Willing remincition. वो आत्मा से आत्मा में संतुष्ट है। खोजी होय तुंरत मिल जाये एक पल की तलाश में। गुरू के वचन से भीतर में खोज करो कि बाकी क्या इच्छा है प्रभु के लिए कोई रास्ता नहीं है क्योंकि आकाशवत है। God is highest. रास्ते सब धरती पर हैं। श्रद्धा विश्वास से ही केवल भगवान जाना जाता है। अश्रद्धालु नाश जाण। श्रद्धावान लभते ज्ञानम्। गुरू कहता है You are not body. आज दिन तक किसी का एक भी विकार निकला नहीं है। पर देह अध्यास जायेगा। तभी तू विकार रहित होगा। प्रभु के सिमरन दुश्मन टरै, काल पर हरै। मन तू जोत स्वरूप है अपना मूल पछाण। तू निरंजन है, दाग रहित है, शुद्ध रूप है। जब तू मन के अधीन होता है तो अनेक पाप कर्म कर लेता है। अज्ञानी की मोटर की break वश में नहीं है। देहअध्यासी नहीं करे तो भी करे। जब तू अंहकार, इच्छा व कर्त्ताभाव से रहित होगा तो कोई कर्म खाते में नहीं है। उसे कोई इच्छा नहीं है।

जीवभाव से आत्म भाव में आना है। आत्म विश्वास अपने में विश्वास। पहले अपने में फिर गुरू में फिर सर्व में आत्मा देखो। एक है मायाकार दूसरी है ब्रह्माकार वृत्ति। तुम अपने से पूछो तुम्हारी वृत्ति कैसी है (रंका और बंका)। चोर साध को एक पहचानो। Nothing can touch Atma. अंर्तमुखी सदा सुखी। देह देखने से सब विकार आयेगा। आकार में विकार है निरकार निर्विकार है। अभेद, अव्याभिचारी व अनन्य भक्ति योग से परमात्मा मिलता है फिर राग न द्वेष। पता नहीं देह का उनको तो फिर क्या औरों से मतलब। मन का स्वभाव है कहीं न कहीं अटकना पर मन को मोड़ो। योगी हृदय निवास, भोगी हृदय उदास। गुरू रोज-रोज़ तुम्हारी आत्माकार वृत्ति बनाता है। किस संग में तू बैठा है ?As the company so the colour. तुम एक कदम पीछे जाता है तो कहाँ पहुंचेगा। आत्माकार वृत्ति न होने का यही कारण है। समय, प्राण किसी के लिए खड़ा नहीं रहता है तो तुम देखो तेरे श्वांस-श्वांस में गोविन्द का सिमरन है। कबीरा ऐसा कठिन। जिसको समय का कद्र नहीं है समय उसका कद्र नहीं करता। यह ज्ञान सुनने का नहीं है पर पीने का है। Juice Pass करने के तो कई साधन हैं पर यहां change लानी है। यह वचन है स्वाति की बूंद जैसे मुंह बन्द किया तो सच्चा मोती बनेगा पर अगर मुंह खोल दिया तो पानी का पानी ही रहेगा। Much wants more. फकीर फिकर से खाली। दुनिया के धन से तृप्ति न आयेगी पर आत्मिक धन तो साथ ले जाओगे। भूले मार्ग जिसने बतलाया ऐसा सतुगुरू बडभागी पाया। किनका जिस इक जीव जीव वसावे ताकी महिमा गणी ना जावे। ओ सिक बिकूड़ी सिक, जे सिके सूण ना मिले। मैं तो हूँ विश्वास में। सच में स्थित हो जाओ तो झूठ आपे ही छूट जाता है। जिसका कर्त्ता भाव खत्म हो गया वही आनन्द में है। मैं मेरा खत्म हुआ तो भगवान प्रकट है। मैं मुआ। शब्द मरै ता फल। दुनिया की जितनी होशियारी सीखेगा उतना फंसेगा। आशिकों की सच्ची नमाज है देह भुलाना। जहाँ ego निकले वहाँ अपने को मिटाओ। duty फर्ज से ऊँचा उठो। भगवान पाने की इच्छा भी भगवान पाने में रूकावट है। शुभ अशुभ इच्छा का त्यागी मेरे को प्यारा है। You are already God. इसमें निश्चय रखना है बाकी कोई इच्छा नहीं रखनी है।

आनन्द स्वरूप तू है तो तेरा आनन्द व शान्ति फिटती है ?घर में जाता है, अंहकार आता है तभी अशान्त होता है। यहाँ अपनी औरत या बच्चे पर क्रोध करके दिखाओ। 24 घंटा भगवान को जहाँ तहाँ देखेगा तो कभी विकार नहीं आयेगा। To see God is to be God. केवल अपने को आत्मा जाना और किसी को दोस्त दुश्मन देखा तो right नहीं देखा। एक बच्चे ने दादा का ज्ञान दूसरे कमरे में सुना और स्कूल में जा के एक बच्चे को मारा क्योंकि सामने वाले में भगवान नहीं देखा। खाली तुम भगवान हुआ तो भगवान दास हुआ, कृष्णदास हुआ, कृष्णदास रामचन्द्र हुआ। भगवान तो कोई और हस्ती है जो सर्वत्र व्यापक है। मुर्दे में भी आत्मा है बाकी तू कहाँ भगवान देखेगा नहीं। तुम राजा व रंक में एक ही आत्मा देखो। तुम कहीं भी किसी के घर जाता है तो पदार्थ पर नज़र आती है तो पदार्थ अभाविनी नहीं हुई। भगवान गाड़ी से उतारता है तो मोटर में चढ़ाता है। wait and see. जैसा तू लायक है वैसी लायकी तुम्हें मिलेगी। चाह गिरा देती है। ब्रह्मपद से जो राजी है वो ही राजा है। राजा भी शक्ल फिराए तो फकीर है मिंया मरे तो भी हलवा खाओ।

पत्र नम्बर - 45

मैं हूँ यह बड़े में बड़ा रोग है। कोई कहता है मैं सिधीं, पंजाबी, हिन्दुस्तानी हूँ ये गलत है पर सच तो ये है कि तू आत्मा है। न तू कभी मरेगा न जन्मेगा। दुश्मन टरे इतने सब फायदे यहाँ पड़े हैं। दुखों से दूर हो गए हैं। डर होता है दूसरे से पर जहाँ तहाँ मैं ही तो हूँ तो डर किसका करूं। जब आत्मा को भूलाते हैं तभी गरीब, अंधा, भिखारी, लूला लंगड़ा देखता है। आत्मा जानने से तेरा हाथ ही रूक जायेगा। इधर आत्मा का ज्ञान सुन के सिर्फ कर्म धर्म करता है तो जन्म मरण में आयेगा जायेगा। सत्कर्म व बदकर्म तेरे खाते में आ जायेगा। तुम अपने बाल बच्चों से भी कर्म बनाते हैं तो छूटेगा कब ?खाली सतकर्मी कोई नहीं होता बदकर्म भी साथ होते हैं। रजोगुणी कर्म भी होते हैं। कभी कभी तमोगुणी भी आ जाते हैं। सतकर्म का फल स्वर्ग मिला पर बदकर्म का फल नर्क जरूर मिलेगा। मुक्ति की class के लिए कोई कर्म न करो। सतकर्म सोने की बदकर्म लोहे की ज़ंजीर है। ये ज्ञान है मुक्ति का नर्क, स्वर्ग का ज्ञान नहीं है। कोई कर्म खाते में न हो। मैं अच्छा हूँ तो वो अच्छाई भी तेरे खाते में रहेगी तो याद रहेगा। सतकर्म बदकर्म दोनों बता दिये। निष्कामी बनो तो सब ठीक ठाक हो जायेगा। मैंने अपनी सेवा की अपनी ही मदद की दूसरे के लिए नहीं किया। यह शरीर मिला ही है चलने के लिए। ये तुमने किया या परमात्मा की शक्ति से हुआ। तुम अंहकार न करो। बैड़मिंटन खेलते समय चिड़िया गिरने नहीं देते हवा में ही उड़ाते रहते हैं। ऐसे ही मन को भी गिरने ना दो नहीं तो तू out हो गया। आत्मा से भूल गया पर फिर भी निराश ना हो जाओ। भूल तेरे लिए सीढ़ी का काम दे। भूल से भी सीखो और दूसरे को सावधान करो। Weakness is death and strength is life. कल तक भूल हई आज न होवे। गुरू के वचन धोये-धोये पी मतलब समझ सोच के उत्तर प्रश्न करके एक-एक कर बात उठाओ, शंकाओ का समाधान करना है। गुरू तुम्हें छुड़ा के कहाँ रखेगा। मन से छुड़ाता है, बुद्धि से छुड़ाता है। मन तेरा बदमाश है तू उसके कहने पर चलता है। ये दीवार है, बादल है जो सूर्य को प्रकट नहीं होने देता। जब शंकाए निवृत हो जायें तभी शान्ति मिलेगी। ख्याल दे के फिर गुरू के विचार पर चलो। निर्णय करके उठो। मन तो दिया पर गुरू का आत्म

भाव नहीं लिया तो शक्ति नहीं आयेगी। मन के खिलाफ ही गुरू बोलेगा। वो गुरू ही नहीं है जो तुम्हें right समझें क्योंकि तुम अज्ञान में है। तू मन से mix न हो जाओ। अर्जुन कौरवों से mix नहीं था कृष्ण से मिला था। श्रद्धा से उसका एक-एक वचन उठाया। क्षेत्र क्या, क्षेत्रज क्या है अनेक बात पूछी। उसको भगवान करके समझा और उसकी एक-एक बात श्रद्धा से उठाता जाता। उठा के आज अपनी भूल निकालो। कौरवों का साथ नहीं लियो। मन का साथ देना छोड़ो और गुरू का साथ लो। गुरू की बात गांठ बांध के सच-सच करके उठाते चलो तो मन मरता जायेगा या तू मनमुख या गुरूमुख है। जीवभाव देकर आत्मभाव ले के जाओ। गुरू तेरा द्वैत निकालेगा भगवान का दीदार करायेगा। मान न मान तू है भगवान। हीरे के दुकान पर हीरा ही मिलेगा। कृष्ण ने पछाड़ी तक यथार्थ ज्ञान ही सुनाया है अर्जुन की बात से कहीं पर भी सहमत नहीं हुआ है। आखिर अर्जुन को कृष्ण का कहना मानना ही पड़ा आत्मा ही सुनूं, देखूं, सुनाऊं। आत्मा माना अद्वैत, प्रसन्नी चल शान्त एक रस। मैं मन का मुखी हूँ मन मेरा मुखी नहीं है। सूर्य रूप आत्मा को जानो। आँख का operation करता है गुरू। तुम जीवभाव का सवाल पूछेगा वो आत्म भाव ही देगा। जो भी तेरी बात है वो गटर की ही बात है। माया की प्रलय करके ईश्वर का निवास करो, साफ दिल हो जाओ। एक भी ख्याल छिपायेगा तो ईश्वर का निवास न होगा। एक ख्याल भी भगवान से दूर करेगा। खाली होगा तो नींद अच्छी होगी। ख्याल होगा तो अन्दर भारी होगा, गैस होगी। ख्यालों की बीमारी की दवाई सतगुरू के पास हैं सबसे नम्रता, प्यार से चलेगा तो आनन्द आयेगा। गुरू के राज पर आज्ञा पर चलेगा तो मरेगा और कोई रास्ता नहीं है। पंडित पिण गुरू प्रेम बिन लहे न आत्मा राह। जब तू आत्मा में रहेगा तभी प्रसन्नचित होगा। तुम कैसी भी बात ले आओ हम आत्मा ही सुनायेगा। मन इन्द्रियों का control, मन को वश करो, जहां तहां अपना स्वरूप दिखाओ और कोई बात नहीं बताई। अर्जुन की तरह तुम अपने फायदे आकर नहीं सुनाते हैं। अपने घर में न जाओ जो तुम से भूल होवे पर मेरे ही घर में जाओ। तुम ज्ञान सुन के परहेज नहीं करते हैं। मन को मोड़ते नहीं है। हर रोज change होते हैं। हर रोज change करते जाओ। भगवान देखते चलो। थक न जाओ तो शान्ति आ जायेगी। ज्ञानी का प्रारब्ध पर निर्वाह है पर सन्यासी भाग कर खाता है। गृहस्थी सबकी सेवा करता है, पालना

करता है विष्णु होकर। सरकार तुम से लेकर फिर कार्य करती है। trains, roads, मकान वगैरह खरीद के बेच के बड़े roads बनाती है। तुम्हें passport देती है। कमाने के लिए हो मैं दीर्ध रोग है पर आज से बोलो मैं ना। सिमरन माना तन मन एकरस पर मन तेरे वश में नहीं है। यह जिन तुम को तरह-तरह के खेल दिखाता है। सब में आत्मा ही देखो। भगवान एक से अनेक हुआ है। हमारे सामने जो भी आता है हम उसे भगवान करके देखते हैं। तुम्हारा कोई रिश्तेदार नहीं है। Pathless, effortless है पर किसी साधन से भगवान नहीं मिलेगा। कौन कहे साहब को यूं कर यूं न कर। मन और आत्मा दोनों अदृश्य चीज गुरू ने दिखाया है। दोनों को समझ सकते हैं। मन माना ख्याल। तेरा ख्याल दुखी न करे तो भगवान भी दुखी न करेगा।

Man – desire = God. भगवान ने कहा सब कुछ तुम्हें मिलेगा पर केवल तुम इच्छा न करना। forbidden apple खाया उस दिन से इच्छा आ गई। आप सुने आप सुनावे। आप गुरू आप चेला। भगवान ही सच है। सच को जानने वाला निष्पापी हो जाता है। सर्व में भगवान देख के सच को पूजता है। गुरू जब कहता है सब को भगवान देखता हूँ तुम भी देखो तो तुम देख नहीं पाता। लगातार जो मेरे में मन रखता है वो मेरा ही रूप हो जाता है। भगवान से प्यार होगा तो आत्मा ही आत्मा रह जायेगी। नामदेव को दिव्य दृष्टि मिली जो कुत्ते में भी भगवान देखा। तुमको अभी तक नहीं मिली है क्या ? तुम्हारा किसी से भी द्वेष है तो आज द्वेष निकाल दो ताकि उससे हमेशा के लिए प्रेम रखो। नम्रता, प्यार करके द्वेष निकाल के आयेगा किसी से प्यार होगा तुम उसका कर्म न देखेगा। कर्म से मुक्ति चाहिए अगर तो सबको प्रेम करो। दुश्मन का फूल भी न भायेगा और प्रेम में पत्थर भी सह लेगा। एक से द्वेष है माना भगवान से द्वेष है। हरेक खुद ही द्वेष से भरा है तो दूसरे का द्वेष कैसे देखा? पहले अपना अवगुण निकालो। ये जगत आरसी है परमात्मा है अपना दाग उसमें देखना है। दिल में विकार नहीं है तो सर्वत्र निर्विकारी आत्मा है। ज्ञानी सबको आत्मा ही करके देखता है। भगवान कहता है मेरी माया ही ऐसी है पर जो मेरी शरण लेता है तो मैं उसे माया से रहित कर देता हूँ। आदम और eve ने इच्छा किया तो सजा भुगतता रहता है। आज भी अपने को रोको, break लगाओ वो रास्ता ही नहीं है। तुम इच्छा में, वासना में, मोह में नीचे उतर रहा है।

सर्व कामनाओं का त्याग ही सन्यास है। कामना की पूर्ति होगी तो भी शान्ति न आयेगी। मगृ तृष्ण के जल में प्यास बुझेगी ही नहीं। सच्ची शान्ति पदार्थ में नहीं है। सगल सृष्टि का राजा भी दुखी है और कितना भी मिलेगा तो भी क्या ?ब्रह्मा भी मुक्त नहीं हुआ, आयेगा जायेगा दुखी सुखी होगा। चाहना तृप्त न होगी तो शान्ति नहीं आयेगी। चाह में प्रारब्ध रूकावट है। किसी इच्छा का बीज फलीभूत होगा और इच्छा दूसरे जन्म में होगी तो आना जाना पड़ेगा। पालक का बीज जल्दी फलता है और अखरोट का देर से। देवता को पूजने वाले देव लोक को, पितरों को पूजने वाला पितर लोक को, भूतों को पूजने वाला भूत लोक को प्राप्त होता है। भगवान से पदार्थों की चाहना ऐसी है जैसे कोई स्त्री अपने पति को न चाहकर उसके द्वारा सदैव पदार्थों की कामना करे और कामना के कारण ही सीता राम से दूर हुई। तुम अपने श्रेय साधन से गिर जाते हैं। पहले गुरू नानकदेव ने रे मन ऐसो कर सन्यास फिर गुरू जब ख्याल देता है तो मन ही ते मन मानिया फिर आगे चलकर यह मन ज्योति स्वरूप बन गया। हरिजी तेरे नाल है। बाहर टोले सो भ्रम भुलाई धन स्त्री बच्चे में सुख खोजा पर ना मिला। आखिर मिला न जे रब और सब कुछ मिला तो क्या हुआ। जब तक नहीं जागा है भगवान नहीं मिला है तब तक शान्ति नहीं है खुदी के बदले खुदा को पा जा। Body conscouisness must go. पेवत प्रेम बिसर गई काया। जब तू कर्त्ताभाव में है तो तुम्हें सब याद है। अभी जब कर्त्ता भाव गया तो सच्ची मैं निकलेगी। capital I जिसमें अंहकार की बिन्दी नहीं है। अन्दर का धन है संतोष धन। कान से परमात्मा देखो सबको आत्मा की सुजाग दियो। तुम कितना plan बनाता है पर तेरी एक भी नहीं चलती है। अपने अन्दर खोज करो। खोजी होय तुरन्त मिल जाऊँ पलभर की तलाश में। आशिकों की सच्ची नमाज है देह भुलाना। एक है शेर की बोली एक है बकरी की बोली। तुम सारा दिन अपने को जानो कि कौन सी बोली बोलता है। एक टेप रिकार्ड रख दो वो भर के देखो। सुबह को सुखमनी पढ़ने के बदले वो टेप सुनो तो बाकी कहाँ मौन रखते हो। आत्मा माना मौन शान्त। देह से भर जाओ, मौन करो। बोलने की वासना है तो औरत को बाजू में बिठा के सत्संग की बात करता है। दादा ने औरत को कहा करतूत पशु के मानुष जात लोक पचारा करे दिन रात। अपने उद्धार की बात करो। सत्संग में कहता है मेरी डोरी तेरे हाथ। घर जाकर कहता है तेरी डोरी मेरे हाथ। आत्मकार की दृष्टि वृति

कैसी है यह देखो तुम्हारी है ?दूसरे अध्याय का स्थित प्रज्ञ का लक्षण तेरा है ? मिले मिलिया। बाहर का मौन देवता मन का मौन भगवान बनाता है। सारा दिन देखो मन किधर गया ? जो बाहर से मौन रखता है वो मन को जानेगा। ज्ञानी से कैसी भी बात करो तो आत्मा की ही बात सुनायेगा। अर्जुन का भाईयों का झगड़ा था तो भी लड़ाई करके हक नहीं दिलाया पर आत्मा की बात ही सुनाई। पहले 18 अध्याय ज्ञान के सुनाये। तेरे से अन्दर से आत्मा की बात निकलती है या नहीं या आत्मा की बात केवल सत्संग तक ही करता है। सीढ़ी उतरा और आत्मा से फातिमा और फिर खात्मा हो गया। यहाँ ही यह सीखता है कि कैसे unconcern रहना है। तेरा आनन्द कम ज्यादा होता है क्या ?तेरी शक्ल से ही पता चलता है। हर हालत में ज्ञानी मुस्कराता है। हर बात में हां न निकालो मुंह से। It is but natural. धीरे से हर खबर सुनाना अज्ञानी को दुख पत्थर की लकीर की तरह लगता है पर ज्ञानी को हवा की लकीर भी नहीं। हर दुख के लिए तैयार रहता है तो भगवान कौन सा दुख देगा। तुम काका पगला कहने पर चिढ़ता है तो तुम्हें और चिढ़ोयेगा पर तुम शान्त होगा, मौन होगा तो कोई कुछ न कहेगा। दुख oppositon आती हैं तुम्हें चमकाने के लिए। भगवान के पास अन्धेरा नहीं है पर इन्साफ है। द्रौपदी की तरह पुकारो नहीं। तू जहाँ विश्वास रखता है भगवान वही है। तुम समझता है भगवान को राज्य चलाना ही नहीं आता है तो तुम घर में कैसे रहेगा। अपनी इच्छा की वजह से तू भगवान में भी अवगुण देखेगा। Adjust your will with the will of supreme power. जब भगवान को मिला तो फिर किसी के लिए शिकायत न रहेगी। कोई wrong नहीं है कोई right नहीं है। कोई ऊँचा नहीं, नीचा नहीं मेरा शिष्य तेरा शिष्य भी नहीं है। द्वैत का धुंआ नहीं। self-seer. न कि जगत का ड्रामा देखने वाला हूँ। खेल भी मैं। गिरने वाला मरने वाला सब मैं हूँ। खेल का दृष्टा बनेगा तो भी जगत का हर दुख सुख तुम्हें लगेगा। राजा भी मैं भिखारी भी मैं हूँ। चोर चंड़ाल में जो एक ही आत्मा देखता है वो सच देखता है। वही मुक्त है जो मैं ही तो हूँ में स्थित है। खेल का नहीं पर अपने का दृष्टा होना है। माया आने जाने वाली है। माया के जाने के कई रास्ते हैं। तुम माया भगवान से सदा मांगता है तो तू लोभी लालची है। तू दुनिया में आया तो क्या-क्या ले के आया। तुम्हारा कुछ

है नहीं। आज तुम माया का use करो पर अपनी न समझो। पक्षी का आधार उसके पंख हैं ना कि डाल। चूहा उसी डाल पर होगा नीचे आग लगेगी तो मरेगा। अज्ञानी उसी हालत में गिरता है ज्ञानी हर हालत में सीखता है।

Points – अज्ञानी दौडे माया की ओर जिज्ञासु दौड़े प्रभु की ओर, और गुरू कहाँ दौडे वो तो केवल भक्तों की पुकार पर जल्दी से दौड़ता है। मनुष्य अगर अपने जीवन को खेल करके समझे तो कभी भी दुखी सुखी न होगा। मैं हूँ और मेरा है तो दुख है। Today is the best day. हर समय वाह-वाह करेगें तो हाय-हाय न होगी। जो शुकराना करता है वो शिकायत न करेगा। इच्छावाला दीन व दुखी है। किचन में कोई फुलका पकाता है तो भी पसीना आता है और फुटबाल खेलने में भी पसीना आता है तो उस को बोझ नहीं समझते पर फुलका पकाना बोझ समझते हैं। हर कार्य खेल समझ के करो फर्क है केवल ख्याल का। जैसे तू सिनेमा हाल में बैठा है रोज नया-नया खेल सामने आयेगा। Nothing is new under the sun. कोई भी ख्याल गहराई में न उठाओ क्योंकि तू देह नहीं है। देह के लिए ही कोई शब्द कहता है। कृष्ण पर भी मीठा चोर का कलंक आया तुम निर्दोष है तो भी दोष रखा जाता है तो भी तू निहकंलकी अवतार हो जाओ। शरीर व मन तो है ही दोषी। ज्ञानी एक सेकंण्ड में भूल जाता है तुम 10 साल पुरानी बात याद करते हैं। कोई भी कुछ करता है या कहता है तो उसे खेल कर के देखो। तुम हर समय सच में रहो। जो आत्मा में रहता है उसके लिए जगत मिथ्या है। जगत की कोई खबर सच्ची करके न सुना। निंदा में दुख, प्रशंसा में खुशी होगी। जो हर द्वन्द जोड़े में अशान्त नहीं होता वो ज्ञानी है तो स्थित प्रज्ञ के लक्षण में रहो। अज्ञानी है तो ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश करो।

पत्र नम्बर - 46

जिस सुख के साथ दुख नहीं उस सुख को फेंक देना। भगवान ने यह दुनिया बनाई है वो जो भेजता है हमारी भलाई के लिए। बच्चे को टीचर paper बनाकर देती है जिससे ऊपर चढ़े कभी सुख देता है तो तुम अच्छा समझते हें कि 2x3=6 लेकिन उल्टे नमूने जब सुख देता है यानि दुख में समाया सुख जब देता है तब हम उलझ जाते हैं समझते नहीं हैं कि 3x2= भी 6 ही है। शेर का बच्चा शेर है। इच्छा दर-दर का धक्का खिलायेगी। मांगती फिरती थी, दुनिया, भगवान की रमज पहचान जाओ कि निरिइच्छा होयेगा तो सबकुछ मिलेगा, तो भी अतृप्त। मांगन मरन समान है। मत कोई मांगो भीख मांगन ते मरना भला ये सत्गुरू की सीख। चाहिए तो जीव ही रहेगा। चाह से कुछ मिलेगा तो भी अतृप्त व आदती बनेगा। satisfaction temporary न होवे पर पक्का होवे। मेरा सच्चा प्यार गुरू से है तो गुरू का भी सच्चा है। तेरे को प्यार है तू निरिच्छा है तो आनन्द में है। तुम अपने को निर्मल बनाओ। भले ही फिर सारी दुनिया दुखी होवे पर तू अपने आनन्द में रहो। अज्ञान में हरेक दुखी है। देना सीखो लेना न सीखो। भिखारी नहीं राजा बनो। मांगने वाला, दूसरा देखने वाला हमको पसंद नहीं है। भगवान के राज को समझो। इच्छा गली-गली धुमाती है। जिसे इच्छा नहीं वह शहंशाह है। माँ बाप को पता है इसे क्या चाहिए। गुरू की कृपा से एक बूंद जितना प्यार या ब्रह्मज्ञान मिलेगा तो तृप्ति आयेगी, मस्ती आयेगी पर अपनी इच्छा से चाहे करोड़ भी मिलें तो भी शान्ति नहीं मिलेगी। मांगने वाले को सारी दुनिया धिक्कारती है। राजा को तू ऊपर बिठायेगा। मांगने वाला, सगी बहन-भाई, मां-बाप भी, बच्चा भी पसन्द न आयेगा। desireless खुद भगवान है। तेरी आत्मा से सुन्दरता का ख्याल निकला तो कौन बड़ा हुआ। आत्मा करके ही सब प्यारे लगते हैं। दूसरे के पीछे क्यों भागें ?कुत्ता भी इच्छा के कारण कुत्ती के पीछे जाता है। भगवान को जानो तो भगवान हो जायेगा। निरिच्छा वाले को मिलाकर एक कर देता है। आत्मा में कोई इच्छा या मांग नहीं है। तुम्हें खुनकी होनी चाहिए कि ब्रह्मलोक का सुख भी मुझे नहीं चाहिए। मेरा भगवान मेरे साथ होना चाहिए। बाहर का भगवान इसलिए ही मिला है कि अपनी light अपने में जलाओ। जो मैं हूँ सो तू है। दो जिस्म मगर एक आत्मा है। जान एक है। गुरू की और मेरी आत्मा एक ही है।

पत्र नम्बर - 47

कमजोरी मौत है। निश्चयात्मक बुद्धि भगवान हमारी आसानी के लिए स्वयं जहाँ तहाँ आकर खड़ा हुआ है। निराकार ने अपने को कुर्बान कर दिया है और साकार बन गया है। इतने अवतार सब हो गया हूँ पत्थर, भितर, ठिकर सब हो गया हूँ। कोई चीज भगवान के सिवाय नहीं है। प्रेम अपने आप को करने में क्या कठिनाई है। सब पहले अवतारों से आज का अवतार सबसे बढ़कर है क्योंकि वो सबको जान रहा है। आसान तरीके से समझाया है कि इसी जन्म में ही तू मुक्त हो सकता है। फूल तोड़ने में भी देरी है और ज्ञान आने में इतनी भी देरी नहीं है। शेर कभी लकड़ी के पिंजरे में फंस नहीं सकता है। तू शेर आत्मा इस देह से पहले ही अलग है। तेरा ख्याल है कि मैं बंधन में हूँ। पहले सब डरते थे अब कैसे आ जाते हैं। हरेक अपने ख्याल से बंधा पड़ा हैं। You are free. कोई भी ख्याल नहीं करो। शरीर क्षेत्र में जो बीज बोयेगा वैसा फल मिलेगा। कर्म तो बंध गया। ज्ञानी कोई कर्म करता है जो पछताये। Man – desire = God. जो जीवन मुक्त है वो ही विदेह मुक्त है। Free from thoughts, desireless, egoless, deathless हूँ। तूने जीव भाव में अपना स्वरूप भूला के गरीब, दुखी सुखी, बंधन में अपने को माना है। तू कभी बंधन में नहीं आया है। Yor are free just like breeze. तेरे में बंधन है नहीं। अपने को दासी पुत्र समझ के मर गया पर अब तू son of God है तो कभी मरेगा नहीं। कर्ण अपने को दासी पुत्र समझ के शक्ति गंवा के बैठा था वैसे था सूर्य पुत्र। तुमको भी घरवालों ने भुलवा दे दिया। बंधन डाला गया फिर जब गुरू ने कहा You are son of God. तू शेर का आलौद शेर है। गुरू मुक्ति का अभिमान दिलाता है। मैं मुक्त हूँ, आत्मा हूँ तो तू जेल में भी जेलर साहिब है। देह का, बुद्धि का, अंहकार का मालिक है पर तुमको अपने में पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि मैं मुक्त हूँ। सबसे बड़े में बड़ी मन की बीमारी है। सारा दिन शिकवा और शिकायत लगी पड़ी है। सगल सृष्टि का राजा दुखिया। अभी भी तू दुखी न होता तो सत्संग में कैसे आता। दुख का कारण अज्ञान है। देह अभिमानी सदा दुखी है। अभी भी जितना ज्ञान है उतना

सुखी है। जितना अज्ञान रह गया है इतना दुख है। सबको अपनी-अपनी शिकायत है ही है, बड़े-बड़े बंगले वाले करोड़पति भी दुखी ही हैं। दो मिनट में सुखी दो मिनट में दुखी हैं। सबको ज्ञान की जरूरत है। ज्ञान के सिवाय कोई सुखी नहीं है। जो मनुष्य कभी निराश नहीं होता है वही आत्माकार है। माया में कभी भी पूराई न होगी। तू है जीव तो हमेशा अतृप्त रहेगा। जो आज अपनी हालत में खुश नहीं है वो बाहर कभी भी खुश न होगा भले यहाँ कितना भी सुख है पर अचानक किसी ने कोई शब्द कहा तो तू जल जायेगा। गुरू का भी प्यार है तो भी विक्षेप में आ जायेगा। तुम भगवान का तो है, भगवान का प्यार तो है तो भी खुश नहीं होता है। बाहर का सुख तो है ही नहीं पर अन्दर आत्मा का ज्ञान चाहिए। खारे पानी के समुद्र से प्यास नहीं बुझेगी पर अन्दर की एक बूंद भी तृप्त करेगी। जिसको कुछ भी नहीं चाहिए वो गुरू से मिल के एक हो जाता है। तुम इच्छा को दबाता है तो वो केवल spring की तरह केवल दब जाती है पर खलास तो नहीं होती है। सन्यासी भी इच्छा को दबाते हैं और एक चाय के कप की भीख मांगते हैं। कुरस्म के पीछे तुम जाता है लोकारीति करता है। तुम्हारे आत्मा का अज्ञान करके बंधन पड़ गया है। तुमको भ्रम पड़ गया है देह का ये आत्मा ज्ञान से ही मिटेगा। दुनिया का आदमी अज्ञान में, द्वेत में है और भगवान भूल गया है। जगत मिथ्या समझ के तुमको वैराग्य रखना है। क्या मांगू कुछ थिर नहीं। आम में कीड़ा देख के तू उसे फेंक देगा। ऐसे ही जब जगत मिथ्या समझेगा तो जगत को फेंक देते हैं। इस वक्त आदमी अपने को सुधारने के बदले दूसरे को सुधारने में लगे पड़े हैं। मानसिक उन्नति के सिवाय आत्मिक उन्नति न होगी। मन जीते जगजीत। सांईस ने अज्ञान निवृत नहीं किया है। राग द्वेष द्वेत उसका गया नहीं। अपने अज्ञान को जब तक निवृत न करेगा तब तक तू सुखी न होगा। हालतें वो ही है अज्ञान की लेकिन पहले तू दुखी आज सुखी हो गया है। माया का विकार हटायेगा, संतोष लायेगा तो सुखी हो जायेगा। जगत को सत करके छोड़ेगा तो राग की निवृत्ति न होगी। सन्यासी अभी तक चाहिए में पड़ा है पर यहाँ गुरू ने चाहिए अक्षर की भी निवृत्ति कर दी है। जैसे मन्दिर के देवता से नहीं पूछता है कि ये चीज चाहिए, ये भोग चढ़ाऊं ऐसे ही हरेक भगवान है उनके सामने प्रशाद रखो पर उससे पूछो नहीं कि ये चाहिए। चाहना ब्रह्मपद से गिराती है। राजा

जनक मिथ्या बुद्धि से रहा पड़ा था। याद रख दुनिया नहीं है दिल लगाने की जगह क्या खुशी जीवन की जिसकी मौत आये एक दिन। किसी से भी दिल लगाई है तो वो रहेगें नहीं। शरीर सब विनाशी हैं। दिल जो शरीरों से लगाई है ये मरने जलने वाले हैं। किसी भी शरीर से मोह न रखो पर सबके अन्दर जो भगवान है उससे प्रीत करो फिर तेरा कुछ है नहीं। अल्लाह ही आदम बन के आया है। त्याग भावना से रहा पड़ा है। अमानत की गठरी बांध के रख दो। मेरा कोई वश न चलेगा। होटल से कोई चीज तू ला नहीं सकता है। सब तेरे लिए है पर तेरा नहीं है। हर चीज enjoy करो पर अपनी न समझो। Beauty is to admire not to touch. ऐसा समझ के दुनिया में रहेगा तो खुश रहेगा। नयी बात कौन सी होयेगी जो तू रोयेगा। take everything easy. जैसे हम सब adjust हैं वैसे तुम भी हो जाओ। हम तो सबको छोटा बच्चा समझता है। मन सबका बच्चा ही है। बड़ी age में विकार और भी ज्यादा है। सभी हमारे बच्चे हैं तो हम किसी से विक्षेप में नहीं आते हैं। मन बच्चे को रोज प्यार से समझाते रहते हैं। सच्चा ज्ञान है जिसमें तुम ही खो जाओ। तेरी खुदी खलास हो जाये। एक राजा के पास पंड़ित महाभारत सुनाने जाता था। राजा उसे कहता था तुमने ही अभी नहीं पढ़ा है। हर रोज ऐसा सुन के एक दिन एकान्त में पढ़ा तो उसी में खो गया, लीन हो गया था। प्रभु प्रेम में मस्त हुआ पड़ा था। राजा व स्त्री बच्चे जब उसका दर्शन करने गये तो उन्हें भी न देखा। उस दिन राजा उसके पांव पड़ा कि तुमने भागवत आज ही पढ़ा है। ऐसी एकाग्रता आ जाये तब है सच्चा ज्ञान जब कुछ दिखाई न दे। जिसको भगवान चाहिए वो दूसरा देखता ही नहीं है। दुनिया में कुछ सत ही नहीं है। माया में उसका कोई interest नहीं है। माया के लिए तो हमेशा रोया है पर अब भगवान के लिए रोना आवे। अर्जुन जब कृष्ण के पास आया है तो कहता है मैं धर्म से बेवकूफ हूँ मेरे को कोई सरल रास्ता समझाओ। ऐसी समझ से यहाँ तुम भी आओ। आत्मा कभी मरता नहीं है। 84 लाख जूणि के बाद ये सुन्दर स्वरूप भगवान का तुम्हें मिला है। भगवान कृष्ण भी तेरे जैसा ही आया था। तुम कहता है आप भी उंगली पर पहाड़ उठा के दिखाओ पर भगवान तो हर जगह है। गुरूनानक ने धर्मशाला के मालिक को कहा मेरे पांव

उस तरफ करो जिस तरफ तेरा खुदा न हो। पर गुरूनानक के शिष्यों ने कहा कि मक्का उधर धूमने लगा जिधर उनका पांव घुमाया गया। मक्का मदीना तो वहीं पर खड़ा है पर उन्होंने सच समझाया कि भगवान हर तरफ हर जगह है। Where is not God ? बच्चे ने कहा मास्टर को हम तुम्हें दो सेब देगें God is omni present. जड़ और चेतन में मैं ही तो हूँ। अर्जुन ने विराट स्वरूप देखा। चर्च में जूता पहन के जाते हैं। तेरे मन्दिर में टोपी पहन के चप्पल उतार के जाते हैं। तुम लोगों ने ग्रन्थ न बाईबल समझा है। तुम गेरू कपड़े वाले के आगे दंड़वत पड़ जाते हैं। सोने के बर्तन निकाल के उसमें खिलाते हैं जिसमें कभी अपने मर्द को भी न खिलाया होगा। christ ने कहा don't throw pearls before a swine. सूअरी कद्र नहीं करेगी। सच तुमसे करोड़ रूपये देकर भी ले जायेंगे इतना कद्र तुम्हारे वचन का हो जायेगा। मेरे वचन पक्के करते जाओ। पहली-पहली बात है मेरी कि तू आत्मा है। आत्मा दिखने में नहीं आती है मन भी दिखने में नहीं आता है। इस मन को पहचानो नहीं तो ये तुमको मार डालेगा। मन को अमन करने का साधन है यह अद्वैत मत। तुम गधा, कुत्ता, माँ, बाप, तेरा मेरा देखता है पर कृष्ण कहता है oneness, sameness, oneness of God. एक ही भगवान अनेक हो गया है। God is in all-all in all. सब भगवान है और सब में भी भगवान है। You are all + in all God. अब बताओ कौन सी जगह कोई चीज है भगवान के सिवाय। तुमने अब तक केवल बकवास की है कि है भगवान पर देखते नहीं हैं। You are say but see not. आज ही सुधरो और आज ही जा के सबको भगवान देखो इसी को self relization कहा है। आज न जाना तो 84 की चक्की में जायेगा। प्रभु के सिमरन गर्भ न बसे। फिर न पैदा होगा इसी को मुक्त कहते हैं। deathless birthless state नहीं तो अब तू जमेगा (पैदा होगा)। एक-एक कर्म के लिए एक-एक जूण तुम्हें मिलेगी। इसीलिए मैंने अहमता, ममता, कर्त्ता तेरे तीनों रोग निकाल दिये हैं। मैं ना करते चलो न मैं शरीर न मेरा कुछ है। मैं भी हूँ और नमाज भी है दो हो गया पर God is one पर his names are many. कहाँ कुछ

कहाँ कुछ पुरूष और नारी खुद बना है। One in all + all in one.

......जो खुद निबंधन नहीं है। जिसको अभी खुद गुरू से कुछ चाहिए वो तुम्हे क्या देगा या निबंधन कैसे करेगा ?सेवा कर निबंध की जो पल में दे छुड़ाय। गुरू के पास कोई खाली हो के आये तो वो उसको शीश उतारेगा। तुम्हें अभी भी कर्त्तापन है और तू गुरू समान कहलाता है तो कैसे हुआ ?गुरू कितना मौन व शान्त में है। जब गुरू की पूजा लोग देखते हैं तो रीस से कई गुरू बन जाते हैं। थोड़ा बहुत lecture करना आया। बात करनी आई तो गुरू बन गये। दुनिया के लोग अंधे हैं उपदेश ही सुनते हैं, आदर्श नहीं देखते हैं पर इधर गुरू शीश कटा के बैठा है। इच्छा कभी भी पूरी ना होगी तो बाहर का आधार लेना सीखेगा। When God wishes to punish you he answers your prayers. बाहर की खुशी उधारी खुशी है। जब भगवान तेरी इच्छा पूरी करे तो रोना कि फकीर बना मैं तो फिर भी इच्छा की तो भगवान से मिला के एक तो नहीं हुआ। भगवान तेरे से जुदा हो गया। पर भगवान तो निरिच्छा वाला खुद हो जाता है। हारने वाले का आधा मुंह काला और जीतने वाला का पुरा मुंह काला। इच्छा पूरी होवे या नहीं ? मैं अगर मांगु तो मांगू तुम ना कुछ देना मुझे। इच्छा और अंहकार वाला भक्त मेरे को पसन्द नहीं है। तुम दूसरे की थाली के लडडू को देखता है कि मेरे को मिले तो डायण हुआ। कबीर मन निर्मल भया जैसे गंगा नीर, पीछे लागा हरि फिरे कहत कबीर कबीर। तुम सोचता है तू निरिच्छा होगा तेरे को प्यार न मिलेगा तब तो भगवान तुम्हें मिला के एक कर देगा। इच्छा वाले दर-दर पर रोते हैं। निरिच्छा वाला तो प्यार ले लेके थक जाता है। जात हमारी आत्मा परमेश्वर परिवार। सब हमारे family member हैं। जुदाई काहे की। किसको बैर करें। कम प्यार करे अधिक प्यार करे। दीये करोड़ हों भी पर जोत एक ही है। सब घट मेरा सांईयां सूनी सेज न कोय। बलिहारी वा घट की जो घट प्रकट होय। दीया बाती तेल सब तैयार है केवल गुरू के संग में जल जाते हैं। अकेले दुखी हो रहे थे। सबकी प्रारब्ध पहले से बनी पड़ी है। Man proposes + God disposes. ईश्वर की मर्जी से अपनी मर्जी मिला दो। जो बना पड़ा है अच्छा बना पड़ा है। कुछ भी कर्म धर्म करो पर रजा में राजी नहीं है

तो सब व्यर्थ गया। तेरी इच्छा वो मेरी लिए अच्छा। परमात्मा की इच्छा मेरी इच्छा है। everything comes form God. जैसी-जैसी इच्छा स्वभाव है वैसा तुम्हें मिलता है। बीज बोयेगा खेत में तो उसका फल वैसा मिलेगा। ज्ञानी निष्कामी न अच्छा न बुरा कर्म करता है। सबका सुहृदय है। सब खुश हो जायें। सबके लिए अन्दर प्रेम है। अपने आपको ही प्रेम करता है। जो मेरा भक्त है उसे मैं यह तत्वज्ञान देता हूँ। तेरी कृपा इतनी है कि तू सत्संग में आ गया। भक्ति रखी तो गुरू तेरे अन्दर प्रकट होकर अज्ञान को निवृत्त कर देता है। बाहर अब गुरू नहीं है अब अन्दर गुरू प्रकट हो जाता है। thoughtless कैसे हो गया। ये सब काम गुरू ने आप कर दिया। सूर्य उदय होने से अंधेरा, कीचड़, बदबू सब खत्म कर देता है। श्रद्धा विश्वास की खिड़की खोलो तो गुरू सूर्य की कृपा हो जाती है। जो मेरे को ही भजता है उसके अन्दर का अज्ञान अपने आप मैं नष्ट कर देता हूँ। तुम कभी भी सत्संग न छोड़ना। वाणी है पवित्र गंगाजल इसी से तू पवित्र हो जायेगा। बाहर से तो तुम्हें पता भी नहीं चलेगा। सुदामा को भी पता नहीं चला कि अन्दर की अन्दर कैसे झोपड़ी महल में बदल गयी। गुरू हमारे मन का दुश्मन है। मन का अंत होता है तभी गुरू का काम शुरू होता है। गुरू यूं-यूं करके आत्मा के पंख जमाता है तो तू आत्मा को जान लेता है। आप की लीला को कोई नहीं जान सकता है जैसे तुम्हारा वर्णन सभी ने किया है ऐसा मैं सत्य करके मान रहा हूँ। पहले तू निराकार परमात्मा है ये सब पीछे हुए। अभी मैं सत्य को जान रहा हूँ। अपने आप को तुम स्वयं ही जान सकते हैं। जो गुम होवे तभी तुम्हें जाने। जब तक मैं हूँ तब तक नहीं जान पाते हैं। मेरी बुद्धि मेरा मन काम नहीं करेगा। मैं मन बुद्धि वाला जीव तुम्हें नहीं जान सकता पर तुम मुझे ऐसी समझ दो। तुम्हीं अपनी बढ़ाई सुनाओ। तुम ही अपनी विभूति को जान सकता है। तुम जब मुखारविन्द से सुनायेगा तब मैं जान सकूंगा। मैं कैसे चिन्तन करूं तू कैसे योग्य है ये अपने मुख से बताओ तो मैं तुम्हें जानूं। तुम जितना सुनाते हो उतनी उत्कंठा और बढ़ती जाती है। जैसा तुम सुनाता है वैसे लगन और बढ़ रही है। मेरे विस्तार का अंत नहीं है तो भी मैं तुम्हें थोड़े में सुनाता हूँ। सब के अन्दर जो आत्मा है वो मैं हूँ। आदि मध्य अंत भी मैं हूँ। जिसने मुझे जहाँ तहाँ जाना उसने मुझे पूरा जान लिया। सबमें जो खास-खास चीज

है वो मैं हूँ। मन भी मैं हूँ क्योंकि उसको भी हस्ती मेरी है। मन तू ज्योत स्वरूप है। इन्द्र मैं हूँ। वेदों में सामवेद क्योंकि उसमें ब्रह्मज्ञान है। सब पर्वतों में सुमेर पर्वत मैं हूँ। कुबेर मैं हूँ और पुरोहित में ब्रहस्पति मैं हूँ। जलाशयों में समुद्र मैं हूँ। Pride comes before a fall. मैं के कारण ही गिरता है। भगवान का कारखाना चल रहा है। तुम मैं क्यों करता है। अंगुली चक्र में क्यों डालता है। room to room दान होता था बाहर वाला अभिमान करता है। मैं ही दुखी सुखी होती है। अगर भगवान जहाँ तहाँ देखे तो अपनी मैं तो गुम हो जायेगी। भगवान ने कहा है अपनी इच्छा न करना। ईश्वर इच्छा से हो उस पर चलो। तुमने मन किया हुआ खाना खाया भगवान का कहना नहीं माना। तुम आज तक नहीं सुधरा है। धर्म भूजिन काम मैं हूँ। एक से अनेक हो गया। जीव कर्त्ता बन के अलग-अलग सृष्टि बनाता है। ईश्वर सृष्टि में वापिस आ जाओ और खाली दृष्टा साक्षी होकर देखो। महर्षियों में भृगु ऋषि, वेदों में महावाक्य ओंकार शब्द मैं हूँ। हिमालय पर्वत भी मैं हूँ। यज्ञों में ओम का जाप मैं हूँ, वृक्षों में पीपल, सिद्धों में कपिल मुनि मैं हूँ। घोड़े में उच्चेश्रवा, शस्त्रों में बज्र, गाओं में कामधेनू मैं हूँ। तुम कहते हो मैनें बच्चा पैदा किया है। गुरू से परमात्मा से ही सारी सृष्टि उत्पन्न हुई है। अनाज से वीर्य, उससे बच्चा हुआ और अनाज वृष्टि से, वृष्टि मेरे से हुई तो सब शक्ति मेरी है। मनुष्य को कोई शक्ति नहीं है। यमराज भी मैं हूँ। आकाश में पाताल भी मैं। शेर, गरूड़, शेषनाग, मृगराज, सिंह सब मैं हूँ। तत्वज्ञान के लिए वाद संवाद भी मैं हूँ। सवाल भी मैं जवाब भी मैं हूँ। अक्षरों में अकार, स्त्रियों में जो सुन्दरता धारण शक्ति सब मैं हूँ। काल भी मैं हूँ कालों को महाकाल भी मैं हूँ तथा छह महीने में माघ का महीना, बंसत ऋतु भी मैं हूँ। जुआ करने वालों में जुआ भी मैं हूँ। मतलब जुआरी को खराब न देखो। घृणा किसी से न करो। जीतने वालों में विजय मैं हूँ। तुम्हारी धारण शक्ति, स्मरण शक्ति मैं हूँ। विजय का अंहकार तुम न करो। पाड़वों में धनंजय भी मैं हूँ वासुदेव मैं हूँ और तेरा सखा भी मैं हूँ। कवियों में शुक्राचार्य वेद व्यास मैं ही तो हूँ। दुमन धरने वालों का दंड हूँ। ज्ञान भी मैं मौन भी मैं हूँ। तत्वज्ञान भी मैं हूँ। मेरे सिवाए कुछ भी नहीं। चर अचर जगत मेरे सिवाए नहीं है। यह सब तो संक्षेप में है पर मेरी विभूतियों का अंत ही नहीं है। खास-खास शक्ति मैं हूँ। जो-जो विभूति युक्त, कांतियुक्त आकर्षण वाली चीज

देखो वो मेरा ही तेज है। तेरे तेज का केवल थोड़े ही अंश लेकर सब चीज सुन्दर लगती है। योगियों में योग, तेज बुद्धि सब मैं हूँ। मेरी माया मेरे थोड़े अंश से पैदा हुई है। ये सब samples बाकी तो मैं पूरा थान हूँ। मेरा तो कोई अंत नहीं है। मैं तो सागर हूँ बाकी यह सारी सृष्टि बूंद समान है। तुम ज्यादा अंत में न जाओ। सारी माया को अंश भाग में ले के खड़ा हूँ। बहुत जानने से तेरा प्रयोजन नहीं है। केवल मेरे को जानो मैं योग माया का साथ लेके सारी सृष्टि को लेके बैठा हूँ। जिसने आत्मा को जाना उसने सब को जान लिया। सब sample हैं। Everything is God + Everywhere is God. इसलिए मेरे को जानो पर मेरी माया में फंसो नहीं। अपनी आत्मा को जानकर दूसरा देखकर तू फंस जाता है। मेरे को जानो। मेरा गुणगान करो। जानने योग्य मैं हूँ न कि मेरी माया है।

पत्र नम्बर - 48

दुनिया का आदमी अज्ञान में द्वेत में है। सब पदार्थ मिथ्या है तो उससे प्रीत क्या रखेगा। आम में कीड़ा देखेगा तो आप ही फेंक देगा। स्प्रिंग जैसा फिर उठ जाता है। इच्छा को दबायेगा तो इच्छा फिर-फिर उठेगी। त्याग के अंहकार का भी त्याग। जगत ही नहीं है तो त्याग काहे का। तुम कहता है मैंने विषयों का त्याग किया है। ज्ञानी शुकराना मानता है कि कचरे से विषय से छुड़ा दिया। सत्संगियों के भय से माया छोड़ी तो क्या भय हुआ। इच्छा को दबाया तो फिर उठेगी। पर सच्चा वैराग्य ऐसा है कि तुमको अपने अन्दर का वैराग्य होवे कि लाखों का खजाना कोई तुम्हें दे तब भी तुम्हें उससे बदबू आये। तुम कहता है थोड़े time के लिए तो सुख है। जिस दिन तेरी एकाग्रता न हो तो तुम्हें ना खाना ना साड़ी ना जेवर अच्छा लगेगा। बेवकूफ आदमी, अविवेकी को थोड़े समय के लिए माया से सुख मिलता है। जिसका मन खुश नहीं है उसको बाहर कहीं से खुशी नहीं मिलेगी। मन थिर नहीं है तो बाहर कहीं से खुशी न मिलेगी। मर्द में स्त्री में सुख समझेगा तो सात दिन उससे बैठों तो झगड़ा करके मारपीट के तलाक ले के उठेंगे। ज्ञानी को एकाग्रता है तो जहाँ तहाँ से मजा ले सकता है। उसका तन मन रोता नहीं है। तेरा जब कुछ छूटेगा तो तू दुखी होगा। तुम अपनी मस्ती अपने में ढूढो। लखपति करोड़पति अपने बंगले में भी दुखी है। अपने को महादुखी समझते हैं। भोग महारोग हैं। इच्छा खुजली की बीमारी की तरह है बढ़ती ही जाती है। इच्छा को दबाता वो ही है जो अपने को भी माया को भी सच मानता है। गुरू विवेक की दूरबीन रोज तेज करता रहता है। सब अपने संबधियों को देखो तो कौन सुखी है ?राजा भी दुखिया, प्रजा भी दुखिया, सकल सृष्टि का राजा दुखिया, हरि नाम जपत होय सुखिया। इच्छा रूपी अग्नि सभी को जला रही है। गुरू तेरी नजर का operation करता है। जानबुझ के कैसे दलदल में फंसेगा। गुरूमुख से जो वैराग्य लेगा वो सच्चा वैराग्य है बाकी कहीं से वैराग्य नहीं आयेगा। ज्ञान से तुम समझ लेगा कि बाहर कहीं सुख है ही नहीं। एक राजा हो के भंगिन के पीछे जाये तो कैसा लगेगा। तुम भगवान हो के माया के पीछे जाता है। थूक शरीर के पीछे जाता है। ज्ञानी की लार नहीं टपकती है कि बात में वो जाती ही नहीं है। (एक नशई गिरा गटर में मरा चूहा खा रहा था तो समझा चिकिन मटन खा रहा हूँ) जब तक तू जीव है ओर जगत सच समझता है तू गटर में ही है। सुख के साथ अनके दुख हैं। जो जगत

मिथ्या है तो उसका सब सुख भी मिथ्या है। सब कल्पना ही है। सारा दिन सीढ़ी चढ़ता है उतरता है। कोई भी दुख आ जायेगा तो फिर गिर जायेगा। माया के थपेड़े खा के दरबदर हो रहा है। सुख तूने बाहर समझा है पर बाहर सब तेरी परछाई का सुख है। बाहर सुख होवे तो मिले न। जो अपनी आत्मा में तृप्त है, संतुष्ट है वही सुखी है। परदेस में धक्के न खाओ। लोभ, माया का संग करके बैठा है। सांईस ने जो पदार्थ बनाये हैं वो तुम्हें तृप्त न कर सकेंगे। जो तृप्त है वो झोपड़ी में भी खुश है। बाहर की हालतें उसको नहीं उलझाती हैं। तेरी आत्मा को कोई भी हालत नहीं हिलाती है। मैं जगत के पीछे क्यों फिरूं माया मेरे पीछे घूमेगी पुरूष माँ प्रकृति मुहिंजी दासी रहेथी। ज्ञानी शरीर रूपी नगरी का राज्य करता है। अज्ञानी मन, इन्द्रियों का गुलाम हो जाता है। ज्ञानी लोकारीति से ऊपर है। ज्ञानी अपना उद्धार करके बैठा है। दीन गंवाया दुनिया के लिए। अपना उद्धार करो। तुम कहता है जब हम बूढ़ा होगा तो ज्ञान लेगा पर तू अपना आज उद्धार कर। देह अध्यासी अपना आप दुश्मन है। देह अध्यासी का fun & feast में time चला जाता है। दुनिया की बातें करके ही लौटता है। कौन सी progress की है तुमने। आप भये बुढ़े तृष्णा भई जवान। विकार सब बढ़ जाते हैं। होशियारी दुनिया की भगवान के पास नहीं चलेगी। ब्रह्म विद्या ही सार है। गुरू मुख से वो विद्या सीखनी है। ब्रह्म स्वरूप आनन्द स्वरूप तू है। जब तक ये ना जाना तब तक तुम्हें peace of mind नहीं मिलेगी। दुख का कारण तेरा अज्ञान है। वो अज्ञान जायेगा ज्ञान से। How to happy in this world. सर्व कामनाओं का त्याग कर देता है। सबकी प्रारब्ध बनी पड़ी है। ज्ञानी कामना रहित है तो बहुत सुखी है। ज्ञानी सुख सागर और दुख सागर करके समझाता है। बाकी मेरे को ये नहीं है बाकी वो नहीं है। जिसका दुखी होने का स्वभाव है वो सदा दुखी होता ही रहेगा। शुभ अशुभ का त्यागी मेरे को परमप्यारा है। ईश्वर जो करता है वो अच्छा ही करता है। सारी सृष्टि का तू मालिक है। 24 घंटा जो मुस्कराए वो ही मनुष्य है। सुख लेने के time तो तू हंसा। अब दुख के समय भी तुम हंसो। परमात्मा की इच्छा पूरी होवे तो खुश होना। दुख में तेरी अध्यात्मिक उन्नति होती है। सुख में तो तू वैराग्य में नहीं रहेगा। दुख में सब बहुत ऊँचे आदमी बने हैं। सब ने हालतों को cross किया। गुरू नानक को जेल में डाला। christ को सूली मिली, कृष्ण को मणि चोर कहा। दुख

में जो मुस्कराये वो ज्ञानी है। जो पदार्थ थोड़े समय के लिए मिले उनमें तू फंस गया है। मेरा कह के दुखी हुआ है। तुम क्या कर सकता है ?जीव जड़ शरीर क्या कर सकता है ?प्राणपति अंदर बैठा है। उसकी हर चीज है तो वो तुम को उसको खुशी-खुशी देना। Are you son of God ? जो हर बात में राजी है वो भगवान का बेटा है। जो तेरी इच्छा वो मेरे लिए अच्छा। शरीर को घटा के पूरा करो तो भी हो मैं मैल न जाएगा। रजा में जो राजी है वो राजा है। नाराज नहीं पर अशोक हो के रहो। किसी के साथ भी अन्याय नहीं हुआ है। God is just भगवान ने जो कुछ किया है वो सब right है। ये तेरा worng attitude. कभी भी खराबी नहीं हुई है। पूरा-पूरा राम राज्य है। जैसी भी हालत तेरे पास है ये सब तुमने ही कभी न कभी मांगा था। जब result निकलता है तो तुम दुखी होता है। कर्म करते समय क्यों ना सोचा अब क्यों रोता है। कर्त्तापना के अभिमान के कारण तू रोता है। जो जाने मैं कुछ करता तब लगि गर्भ जणि में फिरता। जो अंहकार से एक भी कर्म किया तो उसका दुख देखना पड़ेगा। तेरी मैं दुखी कर रही है। false ego ही तो सताने वाला है। एक capital I एक small i है। ये देह अभिमान ही दुख का कारण है। जो egoless है वही thoughtless है। जिसके अन्दर भगवान प्रकट हो गया वो अपनी मैं नहीं करता है। गुरू तेरे अन्दर की शक्तियों को प्रकट करता है। गृहस्थ में आ के फंस गया था। गुरू ने कहा ये past था। तू सबको जानने वाला है। अज्ञानी बेवकूफी करके पछताता है। जगत एक कहानी है। घटना है। तुम सब से प्रीति रखो। सच को पहचानो। माया आने जाने वाली है। तू कूटस्थ है निश्चल है। सुख दुख भोगना आत्मा का धर्म नहीं है। Do nothing + Be nothing. सच में टिको। देह में कुछ भी बनेगा तो दुखी होगा। सेठ नौकर से, औरत मर्द से, मां बच्चे से दुखी ही रहेगी। जीव सृष्टि में ही दुख है। कल्पना में ही दुख है। परमात्मा की सृष्टि में कोई दुख नहीं है। आत्मभाव में ही आनन्द है। ब्रह्म में कोई शब्द, कोई दृश्य नहीं है। हारमोनियम में आवाज वायु का है। शब्द वायु के कारण है। गुण गुणों में वर्तते हैं आत्मा अकर्त्ता है। एक विषयों से वैराग्य लेता है। एक विषयों से द्वेष करके चला गया है। ज्ञानी न भागता है न भोगता है पर जागता है। राग द्वेष से ऊपर है प्रेम। जो विषयों के रस में नहीं जाता है वो तृप्त है। आत्मा में रमण करने वालों को कोई विषय खुश नहीं करते हैं। अज्ञानी को दुनिया के सुख मिलते हैं

तो खुश होते हैं। जब तक कोई रस है तो दुनिया से बंधा है। जब इच्छाएं छूटी रस छूटे तो free हो जाता है। अकेला आनन्द में हैं किसी भी आधार पर नहीं है। भय है द्वैत के कारण। भगवान है अंदर तुम बाहर ढूंढता है। गुरू अंधेरे में रोशनी करता है। माया बहुत चमकदार है पर उससे सुख नहीं मिलेगा। तू आनन्द स्वरूप खुद है तो बाहर क्यों भटकता है। इन्द्र देवता भी दुखी सुखी होता रहता है। जो भी कुर्सी मिलेगी उसे जाने का डर है। ब्रह्मा की हजारों सालों की आयु है तो भी वह जब तक ब्रह्म ज्ञान न लेगा तब तक कितना भी दुनिया का सुख लेवे तो तृप्ति और मुक्ति न होगी। जो जगत को सच मानते हैं तभी माया में खिसक जाते हैं। फिर-फिर वैराग्य लो। अपने से पूछो कि क्या चाहिए जो रोज-रोज जाता है। ऊंट कांटा खाना नहीं छोड़ता। अंधेरा जायेगा तो ज्ञान होगा। ज्ञान इतना पवित्र है जहाँ एक भी इच्छा रह नहीं सकती है। सब मैं ही तो हूँ। जिसने आत्मा को जान लिया उसने सब जान लिया तू पुरूष परमात्मा है प्रकृति आपे ही कार्य करती है। जब तक जगत को मिथ्या नहीं जानेगा तो उसी में डूब जायेगा। सब से अधिक प्रिय अपना आत्मा है। अपने सुख के लिए सारी दुनिया इधर आयी है। ज्ञानी की दौड़ धूप बंद हो गयी। जो अपने आधार पर है वो कभी दुखी न होगा। परमात्मा तो जहाँ तहाँ है। self seer किसी को प्रिय अप्रिय नहीं समझेगा। अपना आप भूलता है देह अध्यास के कारण। जीव सदा दुखी सुखी रहेगा। क्योंकि हद में है तो अतृप्त है परिछिन्न देह अपने को माना है। देह मानने में चाह बनी रहेगी। आत्माकार किसी में इच्छा न रखेगा। शुभ अुशभ का त्यागी है। आनन्द या शान्ति चाहिए नहीं पर मैं शान्त स्वरूप हूँ। कौन सी इच्छा वासना है जो अशान्त है। पानी स्वाभाविक शान्त है पर इच्छा रूपी लकड़ियों के कारण पानी गर्म होता है। रजा पर राजी रहना ही मुक्ति है। मुझे अधिक कुछ नहीं चाहिए। जिसे निष्काम भावना है, निस्वार्थ प्यार है वो खुश रहेगा। वापिसी चाहने वाला सकामी कृपण कंजूस है। सर्व के भले के लिए जीना ही केवल आनन्द है। तुम देने वाला कौन है ?है सब परमात्मा की चीज। तू अकर्त्ता आत्मा है। तू देने वाला कहाँ जो वापिसी मांगता है। 5 रूपये देगा तो भी समाधि में याद करके रोयेगा। भगवान ही चोर के रूप में आकर ले जायेगा। ये माया सब भगवान की अमानत समझो। तेरे लिए है तेरा नहीं है।

पत्र नम्बर - 49

हर समय मुस्कराते रहना मोतियों का कोष दान करने से भी उत्तम है। आत्माकार की मुस्कराहट ही सच्ची है क्योंकि अंदर एक ना दो। मूर्ति सदैव मुस्कुराती है तो उसे सब पूजते हैं। रोते हुए को एक कोने में अकेला रोना पड़ता है पर हंसने वाले के साथ दुनिया हंसती है। You laugh and the world will laugh with you, you weep and you weep alone. क्या कारण है अब रोने का। भगवान ने जब सब कुछ तुम्हें दे दिया है तब भी तुम रोता रहता है। भगवान ने किसी को भी कम ज्यादा प्यार नहीं किया है क्योंकि सर्वत्र भगवान स्वयं ही है। तुम भगवान से, माँ-बाप से, गुरू से भी खुश नहीं है क्योंकि तुमने कसम उठाया है कि मैं जिन्दगी में हरदम रोता ही रहा हूँ। तुम सारा दिन दूसरे की थाली देखता है कि उसकी थाली में दो लडडू हैं मेरे में एक है तो अपना एक लडडू मैं नहीं खाता है। बीमारी, मान, अपमान, दुख सुख सब तेरी परीक्षा के लिए आते हैं। जिस subject में फेल होगा वो इम्तिहान फिर देना होगा। हर हालत चढ़ाने के लिए आती है। क्रोध का कारण सामने आवे और तुम्हें क्रोध न आये। काम् का कारण सामने आवे और तू न फंसे। कोई पुरूष नहीं है कोई स्त्री नहीं है। पदार्थ अभाविनी हो जाये। किसी को लाखों रूपये का सोना जेवर पड़ा हो, कोई बंगले में रहा पड़ा होवे तो भी तेरा मन उनमें न जाय। वे सब अन्दर में खून के आंसु बहाते हैं पर सुखी बसे मिस्कीनिया आप निवार तले। नम्रता वाला ही सुखी है। धोबी के पास कपड़े दूसरे के है। तुम्हारे पास भी जो कुछ है वह दूसरों की अमानत है। तुम्हारा कुछ है नहीं अपने को मिस्कीन समझो। तुम अंहकार करता है वो सब पैसा चला जायेगा। कामना किसी के हाथ में नहीं है। सब परमात्मा की मेहर है। बड़े-बड़े अंहकारियां नानक गर्भ गले। सुन्दरता, जवानी, पैसा, पदार्थ सब जा सकते हैं। कोई चीज रहने वाली नहीं है तो किस बात का अंहकार करता है। सब जगह भगवान देखेगा तो शान्ति आयेगी। प्यार की खोज करो। सारे ज्ञान का एक शब्द में अर्थ है नम्रता। जितना ज्ञानी है उतना ही झुकेगा। सबकुछ भगवान का ही समझता है। गुरू शिष्य भी नहीं है जो तू है सो मैं हूँ। गुरू भी निरअंहकारी होवे शिष्य भी र्निभिमानी होवे। ऐसा न कहे कि मैं सच्चा भक्त हूँ। ये भगवान की मेहर

है जो तेरे अन्दर ज्ञान पक्का करता है। भगवान तेरे पास परीक्षा भेजता है ये भाग्य की निशानी है कि तुम्हें परीक्षा के योग्य समझा। जो परीक्षा हाल में बैठने दिया है। हर समय सजग रहना है। झूठा नहीं खाना है। Everything comes from God. राजी रहां रजां ते तुहिजे सदाई सतगुरू कुरकी न दिल खे कारो कडीह बि भी करयां शल। हर हालत में enjoy करो। तुम अपना घर और जीवन धर्मशाला बनाओ उदारचित बनो। हर चीज इधर ही छोड़ जानी है। हमारा सत्संगी आयेगा तुम पूछेगा कितना जना हमारे पास आयेगा फिर वो बाथरूम जायेगा घर खराब करेगा तुम उनको सहन न करेगा पर जब तेरे रिश्तेदार, बहु, पोते, पोती घर में फर्नीचर पर नाचेगें तो तू सहेगा। तुम उदारचित नहीं है, आसक्ति रहित नहीं है। गुरू तेरी चीज न लेगा पर आसक्ति निकालेगा। तेरे अज्ञान पर उसकी नजर है वो तुम्हें लपड़ भी मार सकता है। तू एक wrong कर्म करेगा तो गुरू पर दोष आयेगा पहले माँ बाप पर आता था। एक भी अज्ञान का कर्म न हो जो दुनिया तेरे पर हंसे। तुम ममता, मोह करेगें तो सब पुलिसवाले बन के तुम्हें सुधारेगें इसलिए हर कदम ज्ञान सहित उठाओ। कदम-कदम गुरू की सलाह से चलो। पुरानी आदतें, हठ सब तुम्हें छोड़ने हैं। एक-एक वचन, ज्ञान, श्रद्धा, भक्ति से उठाओ मीठा लगेगा नहीं तो कड़वा लगेगा।

पत्र नम्बर - 50

मेरे संकल्प से ही यह सृष्टि है, दृष्टा भी मैं हूँ। सफेद पर्दा केवल सत्य है। तमाशा तुझ में होता है तमाशे में क्यों रोता है। कील दीवार में लगती है फिर उसे हिला कर देखते हैं। भूल को जानने वाला भी तू भगवान है। एक दिन फिर अभूल भी हो जायेगा। जब भूल का पता नहीं है तो मन से तू mix है। जब तू अकर्त्ता है तो जैसे सारी दुनिया strike पर है। एक दृष्टा है एक कर्त्ता है। सारी दुनिया opposite भी हो जाये तो भी तुम्हारा कदम पीछे न हटे। जो अज्ञानी है वो तुम्हें कोई right रास्ता नहीं बतायेंगे। अज्ञानी, दुनिया की बात भी तुम क्यों सुनता है। सारी दुनिया कहेगा ये तेरा फर्ज, duty है पर ज्ञानी अकर्त्ता दृष्टा हो के अपना ही खेल समझ के चलता है। करना था सो कर लिया। सर्व के आत्मा से मेरी शादी हो गई। सबकी आत्मा मेरी प्रेमिका है तो शादी किससे करेगा। मैं पुरूष परमात्मा हूँ तो कृष्ण की समझ की तरह फिर तो तुम्हें गोपियाँ मिलेंगी। मन को जानो बाकी उसके कहने में आकर उदास मायूस न हो जाओ। पहले अपने को बनाओ। शान्त समाधि में स्थिर हो जाओ तो सब काम अच्छे में अच्छे हो जाते हैं। सब शान्त समाधि से कार्य होते तो तुम्हारे हर काम से सब खुश हो जाते हैं। जिसको भी देखो भगवान की निगाह से। हर कर्म पूजा है। कर्मन कंदे अथस समाधि। तू ही दुखी है तो सब दुखी हैं। तू अंदर शान्त है, प्रेममय है तो सभी में प्रेम नजर आयेगा। जो अंदर सुखी है उससे सब सुखी हैं। ज्ञानी ने अपने को adjust किया है। अपने को मिटा के सबको खुशी देता है। वापिसी की इच्छा नहीं है। केवल भगवान करके देखो और कुछ भले ही न करो। गुरू की नजर से ही हम भगवान हो जाते हैं। गुरू का प्यार आंतरिक है। गुरू तेरे मन के शीश को देखेगा तो उसे कतलोम करता है। प्रेम का दिखावा नहीं करता। ब्रह्म, विष्णु, शिव भी गुरू होता है। तभी तुम्हें शुकराना आता है जब संशय भ्रम जाता है। जब सब में आत्मा देखा तो शान्त हुआ। शरीर सब मायामय हैं। मैं नहीं मेरा नहीं तब शान्ति आई। तेरे अंदर भी संग्राम चलेगा कोई ऐसी आग लगाये। हम अंधे अज्ञानी थे। गुरू ने ही बांह पकड़ के चलाया। अब अपनी बुद्धि व मन न चलाओ। जो मन की बाग पूरी-पूरी देता है वो शान्त हो जाता है। कैसा-कैसा शान्त किया। 12 वें अध्याय में पूरा भक्त का लक्षण बताया है। ज्ञानी भक्त मेरे को प्यारा है। शरीर की

सेवा, सेवा नहीं है, प्रसन्नता उसमें नहीं है। अंदर पहले ज्ञान होवे फिर भक्ति तुम्हें खुशी देगा। 2 अध्याय में आत्मा का ज्ञान दे के फिर भक्ति सुनाया है। ज्ञान के साथ सेवा करके तो खुशी आयेगी। जब तलक। पहले तू आत्मा है, शान्त है तब तेरी सेवा भी सफल है। पहले सवाल यही होवे कि ईश्वर आहियां। ज्ञान सहित भक्ति सहज होयेगी। मैं अलग ये अलग तो शान्ति न आयेगी। सर्वत्र आत्मा है अंदर बैठ के भगवान ही सेवा लेता है। निष्कामी के अंदर सारी सेवा व शक्ति आ जाती है। मैं सिर्फ सेवा के लिए ही आया हूँ। ऐसा स्वभाव बनाओ जो खुशी मिले। सब में interest रखो। नम्रता रखो। नम्रता माना न मरता। सबको भगवान देख के पहले मुस्कुराओ फिर बात करो। मुस्कुराने का स्वभाव बना लो तो आनन्द आ जायेगा। मुस्कुराने वाला ही गुरू को पसन्द आता है। मुस्कुराना छोड़ेगा तो पाप करेगा। प्रसन्नचित वाले को यह ज्ञान शीध्र ही लग जाता है। शुकराने में तुम्हें रोज आना चाहिए। कुत्ता भी अहसान मानता है तुमने माना है ?सबके आगे झुको, नम्रता करो तो अन्दर से भगवान प्रकट हो जायेगा। हर खंभा (शरीर) है उन सबसे भगवान प्रकट हो जायेगा। साक्षात दर्शन हो जायेगा। से सुता ई जाग्रन निंड तिन्ही जी इबादत ज्ञानी सोता ही नहीं है। नींद में भी उनकी इबादत बंदगी होती है। अपने को सुधारने की बजाय दूसरे को सब सुधारने में लगे हैं। दोष दृष्टि से अज्ञानी को कभी-कभी वैराग्य आ जाता है जैसे सन्यासी दोष देख के जंगल में चला जाता है। प्यारे में प्यारी स्त्री भी खड़ी हो तो ज्ञानी का मन नहीं जाता है। दुख देखकर तो अज्ञानी को भी जंगल पसंद नहीं आता पर ये सच्चा वैराग्य नहीं है। निर्मोही को सुख, मोह, बीमारी नहीं है। निर्मोह दवाई है जिसे हो मैं दीर्ध रोग है उसे मोह भी राग व द्वेष सब होगा। प्रेम द्वन्दों से ऊपर है। आत्मा जान के प्रेम करने के सिवाय रह नहीं सकता। हम हर रूप में भगवान को पहचानते हैं खफा नहीं होते, रूठ नहीं जाते। जैसे प्रकृति में भगवान की मूड कभी ठंडी कभी गर्म है तो ऐसे ही कोई ठंडी प्रकृति का कोई गर्म है तो उससे दुखी क्यों होवे ? कौन सा दुख या सुख है। संत से किसी ने पूछा ब्रह्मज्ञानी को कैसा आनन्द है। मां का बिछुड़ा बेटा मिले, सख्त बीमार पति ठीक हो जाये तो जो खुशी होगी वो है। संत ने कहा सब खुशियाँ temporary है। संत को बहुत भारी परीक्षा में दुख नहीं है। तुमको उसी time भगवान भूल जाता है। सुख दिया तो विश्वास दुख दिया तो विश्वास निकल जाये। प्रेम सगाई सबसे

ऊँची। विदुर के घर साग खाया। बाकी सब रिश्ते झूठे हैं। भाई तो बहन का पैसा भी खा सकता है वो 5 विकार, विषय, राग, द्वेष वाला आदमी क्या रक्षा करेगा ? भाई अपनी विधवा बहन को भी नहीं रखेगा क्योंकि अपना सुख प्यारा है। सच्चा नाता परमात्मा को है। भक्तों पर भीड़ पड़ी। हमेशा वो है ही है। तुम्हारा भाई जब तक कलकत्ता से आये तब तक तुम्हारा काम खलास। मारने से बचाने वाला नजदीक है। प्राण की रक्षा करने वाला भगवान है ईश्वर पर भरोसा रखो। जो मेरे आसरे रहता है मैं उसका योग व क्षेम उठाता हूँ। उसका connection भगवान से लगाता हूँ और फिर उसकी रक्षा करता है। आज ही इसका दुख उताऊँ। ऐसा करूणानिधान भगवान छोड़ के हम किसी देह का आधार क्यों लें। परमात्मा ने तुम्हारी प्रारब्ध बना रखी है। शेर को मांस तोते को आम कौन देता है ?जो तुमको आ के चिन्ता लगी है। जल में जीव उपाया तिन्हा भी रोजी दे। एक ही दाता राम। Oh fool knowest not thou God feeds the world. परमात्मा सारी दुनिया को देता है। तुम future की चिन्ता करता रहता है। अनाथ, विधवा, पत्थर के अंदर कीड़ा भी खाता है बाकी तुम को न देगा। गुरू अगर तुमने बाहर माना तो भी दुखी है। वाणी गुरू गुरू है वाणी विच वाणी अमृत सारे, वाणी गुरू कहे सेवक जन माने प्रत्यक्ष गुरू निस्तारे। एक जगह नहीं पर हर जगह गुरू है। बेगमपुर वासी है। गुरू भगवान है तो कहाँ नहीं है। निगाहों में तुम हो, ख्यालों में तुम। जिसके दिल दिमाग आँख में भगवान है तो वो जन्नत नहीं है तो और क्या है। प्रभु ते भूलिया तो व्यापन समेइ रोग। यह देह ही नर्क है तो तू नर्कवासी है। तू आत्मा है तो सदा बैकुंठ में है। भोग है रोग। साध के संग शक्ति, आनन्द आ जाता है। जहाँ देहअध्यास नहीं है। प्रभु का सिमरन साध के संग। जो संत का संग करता है वैसा तू हो जाता है। देहअध्यासी के संग तू भी वैसा होगा। जहाँ जहर पीते हैं वहाँ तुम्हें भी पिलाया जायेगा। As the company so the colour. तुम सबको आत्मा की बात सुनाओ। जो खाया है उसकी डकार देगा। ज्ञान होगा तो ज्ञान अज्ञान होगा तो अज्ञान निकलेगा। छिपी शक्तियों को भगवान प्रकट करता है। दुनिया के लोग कमजोर बना के जायेंगे। बीमारी के बिस्तर से भी गुरू उठा के आयेगा। प्रेम का रिश्ता सबके साथ रखो। प्रेम सूत्र में बांधो। सभी रिश्ते टूटने वाले पर आत्मा का रिश्ता सदैव है। कूड़ राजा कूड़ प्रजा। झूठों का सरदार कभी न कभी तुम्हें छोड़ देगा। एक पाप करके

भाई बाप या मर्द को बताओ तो वो forgive forget नहीं करेगा पर भगवान करेगा। किसी को भी भगवान तलाक न देगा। एक शूद्र को भी ज्ञान लग सकता है। जिसे चाह नहीं उसे संकल्प विकल्प नहीं है। यह चाहना ही चमार चुहिड़ी है। चाहना वाला चमार से भी खराब है। देहअध्यासी चमार हो गया कसाई हो गया सारा दिन मांस (शरीर) में मन है। जो आत्मा करके देखता है वो आत्मदृष्टि वाला है। चम दृष्टि वाला चमार है ये दोस्त ये दुश्मन है। आत्माकार जोत पर ही नजर रखता है। ना किसी से दोस्ती ना किसी से वैर। उसने सब से दोस्ती कर ली है। जो परमात्मा को जानता है वो उसे जहाँ तहाँ जानता है और वही तेरा योग क्षेम उठा रहा। गुरू ही निराकार सांकार हो के आया है। ओउम् की तेरे ऊपर कृपा होगी तो ज्ञान की नेष्ठा होगी। अमृत भी वही पिलाता है। तुम उसे बाहर देखता है। माम् एकम् की शरण माना उसकी समझ, उसकी वाणी, उसका आदर्श अन्दर ग्रहण करो। तुम्हारा भगवान तुम्हारे साथ है। बाहर का सब भूल जायेगा पर भगवान न भूलेगा। साकार को अगर पकड़ेगा तो वो आज है कल नहीं है। बाहर से आयेगा तो जायेगा भी पर निराकार है ही है। सब चीज परमात्मा से पैदा हुई है। जिस परमात्मा से सब भूत प्राणी उत्पन्न हुए हैं पर सारी प्रकृति में ओत प्रोत है। सब कर्म दोष से भरा हुआ है जैसे धुंये से अग्नि। क्षत्रिय का धर्म है लड़ाई करना पर ज्ञानी मारते हुए भी किसी को मारता नहीं है। अर्जुन ने इतने आदमी को मारा तो भी किसी को नहीं मारा। कसाई का धर्म है बकरे काटना। Live in the realization and recognition of oneness with the me, as you know me as I am so shall you be. सब कर्म सन्यास करके मेरे परायण हो जाओ और विवेक बुद्धि से अपने को आत्मा जानो और देह करके नहीं जानो। जैसा मेरे को तू पहचानेगा वैसा तुम भी हो जायेगा। जो मेरे को मधनमल समझता है वो अपने को जरूर तुलसीदास समझेगा। तू मेरे को क्या समझता है ? मेरे को समझने का दरकार है। मेरे को भगवान जानेगा तो आप भी वैसा हो जायेगा। अपने को मेरे जैसा करके समझो। जैसे पुतली का नाच ऐसें तुम परमात्मा की शरण लो। ओउम् एक टिक उसमें रहो। ओउम् की कृपा से तू परमशान्ति को पायेगा। मन मेरे में रख। मेरी पैरवी करो। जब हम अंहकार नहीं करते तो तुम भी न करो। Abide in me. मैं माना भगवान तू अपने शरीर को जानेगा तो मर जायेगा।